



कर्नाटक सरकार

समाज विज्ञान
SOCIAL SCIENCE
Textbook



आठवीं कक्षा
भाग - 2

Hindi Medium
Part - 2

Karnataka Text Book Society (R.)

6th Cross, Malleshwaram,
Bengaluru - 560 003.

अनुक्रमणिका



क्रमांक	अध्याय	पृष्ठ संख्या
	इतिहास	
16	मौर्य और कुषाण	1
17	गुप्त और वर्धन	6
18	दक्षिण भारत राजवंश : शातवाहन, कदंब और गंग	13
19	बादामी चालुक्य और कंचि के पल्लव	21
20	मान्यखेट के राष्ट्रकूट और कल्याण के चालुक्य	27
21	चोल और द्वारसमुद्र के होयसल	35
	राजनीतिशास्त्र	
22	लोकतंत्र	41
23	स्थानीय स्वयं सरकार	49
	समाजशास्त्र	
24	दैनिक जीवन में समाजशास्त्र	62
25	समाज के प्रकार	65
	भूगोलशास्त्र	
26	जलमंडल	69
27	जीव मंडल	79
	अर्थशास्त्र	
28	अर्थशास्त्र की मूल संकल्पनाएँ	87
	व्यावहारिक अध्ययन	
29	विविध व्यावहारिक संगठनों का उदय	95
30	बड़े व्यापार संगठन	102

इतिहास

अध्याय 16

मौर्य और कुषाण



इस अध्याय के अध्ययन के बाद निम्नलिखित अंशों के बारे में जानेंगे :

- भारत का पहला साम्राज्य मौर्यों साम्राज्य है।
- मौर्य साम्राज्य के सुप्रसिद्ध शासक अशोक की उपलब्धियाँ, प्रशासन तथा देन के बारे में जानना।
- कुषाणों के इतिहास, कानिष्क के प्रशासन और वास्तुशिल्प की देन के बारे में समझना।
- मौर्य के काल में अशोक के साम्राज्य के भूभाग को भारत के मानचित्र में पहचानना।

मौर्य साम्राज्य

भारत का प्रप्रथम साम्राज्य मौर्यों का है। वे मगध से राज्य का शासन करते थे। चंद्रगुप्त मौर्य, बिंदुसार तथा अशोक इस राजवंश के राजाओं में प्रमुख थे। इस राजवंश को चंद्रगुप्त मौर्य ने स्थापित किया था। इसकी प्रसिद्धि को ग्रीक के राजदूत मेगस्थनीस ने 'इंडिका' में उल्लेखित कर अमर बनाया है। इंडिका में जो कुछ कहा गया है उसके बारे में जानकारी नहीं है। यह कृति आज भी हमारे लिए उपलब्ध नहीं है। इसके विवरण के टुकड़ों को केवल अन्य ग्रीक लेखकों की कृतियों में उल्लेखित है। चंद्रगुप्त मौर्य के मंत्री विष्णुगुप्त थे। वह कौटिल्य या चाणक्य के नाम से भी प्रख्यात था। इनके विचारों को 'अर्थशास्त्र' नामक कृति में विस्तृत किया गया है।

अर्थशास्त्र

1902 में मैसूरू के ओरिएंटल ग्रंथालय में आर. शामाशास्त्री ने कौटिल्य के द्वारा रचित अर्थशास्त्र की हस्तप्रति का पता लगाया था। यह पाश्चात्य जगत द्वारा ज्ञात अर्थशास्त्र से भिन्न हैं। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य प्रशासन के उपाय, राजा, प्रधान मंत्री, अन्यो की जिम्मेदारियों को विदेश नीति को और वित्तीय निर्वाह के बारे में चर्चा की गई है।

गुप्तचार या खुफिया विभाग, सेना व्यवस्था, के बारे विशेष महत्त्व को अर्थशास्त्र में दिया गया है। कौटिल्य का अर्थशास्त्र हजारों वर्षों के बाद भी अपनी विशिष्टता से दुनिया भर के सभी विद्वानों को आकर्षित करता है।

सम्राट अशोक

अशोक इस राजवंश के सुप्रसिद्ध शासक थे। इस काल में पाँच प्रमुख नगर केंद्रों को हम पहचान सकते हैं। उनमें मौर्यों की राजधानी पाटलिपुत्र, तक्षशिला, उज्जैनी, कलिंग और सुवर्णगिरी ये प्रमुख संपर्क मार्ग थे। तक्षशिला, पश्चिमोत्तर भारत का प्रमुख द्वार था। उज्जैनी, उत्तर से दक्षिण के व्यापार मार्ग था। कलिंग, गंगा नदी मार्ग से समुद्र की ओर जाने वाला महाद्वार है। सुवर्ण गिरि, दख्खन का हृदय भाग माने जानेवाले आज के कर्नाटक में है। समस्त प्रदेश व्यापारी मार्ग थे। जो एक दूसरे के संपर्क में थे।



कलिंग युद्ध

अशोक ने अपने राज्याभिषेक के आठ वर्ष के बाद कलिंग को वश में कर लिया। इस युद्ध में एक लाख पचास हजार सैनिक बंदी हुए। इस युद्ध में एक लाख लोगों की मृत्यु हुई। इस तरह के युद्धों से होने वाले मृत्यु, दर्दों से अशोक साम्राट बहुत दुःखित हुआ। इससे अधिक सहजीवियों को सम्मान देकर, निष्ठा से सन्मार्ग में चलनेवाली मुग्ध जनता, युद्ध से घायल हुए या मृत्यु हुई तथा अपने प्रियजनों से दूर होने का विचार, अशोक के लिए बहुत दर्दनाक था। इससे कलिंग को वश में लेने के बाद अशोक विचलित होकर, पश्चाताप से 'धर्म' की ओर प्रेरित हुआ तथा शांति का प्रतिपादन किया।

अशोक ने अपने विशाल साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में विभाजित कर शासन किया, जिनकी नीतियाँ का उल्लेख शिलालेखों में मिलता है। ये हमारे पास मौजूद सबसे पुराने शिलालेख हैं। इनमें अशोक की 'देवानामप्रिय तथा प्रियदर्शी' उपाधियों का प्रयोग किया गया है। अशोक महाराज में कलिंग युद्ध के पश्चात् हुई प्राण हानियों के कारण उनमें परिवर्तन आया। वह बुद्ध के द्वारा उपदेशित 'दया' से प्रभावित होने के बाद, उन्होंने बुद्ध के विचारों को सारे देश में प्रचार किया। इस कार्य के लिए धर्ममहामात्राओं की नियुक्त की। अशोक के द्वारा जारी में लाए शिला लेखों में धर्म के विचार व्यक्त किये गये हैं। यही अशोक धर्म के नाम से प्रख्यात है।



धर्म चक्र

अशोक के अनेक शिलालेख प्राकृत भाषा में हैं। ये ब्राह्मी लिपि में हैं। कर्नाटक के चित्रदुर्ग जिला के ब्रह्मागिरि में अशोक के शिलालेख मिले हैं। अशोक के सारनाथ स्तंभ में व्यक्त चिह्न को प्रस्तुत भारत के राज्य प्रतिक के रूप में उपयोग किये हैं।

इस काल में व्यापार तथा कृषि के विकास को देख सकते हैं। कृषि को प्रधानता देने के लिए सरकार विभिन्न कार्यक्रमों की आयोजना की। इस पृष्ठभूमि में विशेष कर छूट की सुविधा दी गई थी। विशाल भू-भागों पर शासन करने के लिए विविध अधिकारी वर्ग थे। उन्हे स्थाई सेना की आवश्यकता थी। इन सब की पूर्ति के लिए राजस्व की आवश्यकता थी। इसके अलावा भू राजस्व भी राजा का मूल आमदनी था। इसको संग्रह करने के लिए विविध अधिकारी वर्ग अपना योगदान दे रहे थे। राजा को गुप्तचर विभाग सूचना देते थे। नदी तथा भू मार्गों को नियंत्रण में रखने के द्वारा व्यापार तथा वाणिज्य को नियंत्रित किये थे।

कुषाण

ग्रीकों के बाद भारतीय इतिहास तथा संस्कृति पर प्रभाव डालने वाले कुषाण थे। ये बौद्ध धर्म को विशेष अभियान देनेवाले थे। महायान पंथ को इनके आश्रय में अत्यधिक प्रोत्साहन मिला। इनके द्वारा गांधार शिल्पकला का विकास हुआ।

मौर्यों के बाद में अस्तित्व में आया प्रमुख राजवंश कुषाण थे। ये मध्य एशिया से भारत आये संचारी जनजाति के वंशज ही कुषाण थे। ये यूची वंश के थे। इस काल में शका और पार्थियन भारत के पश्चिमोत्तर भागों में स्थित विदेशी जनजाति थे। कुषाणों ने शक और पार्थियनों को हराकर, गांधार प्रदेश में बस गये।

कुजलकडफीसस् इस राजवंश के संस्थापक था। विमाकडफीसस और कनिष्क इस वंश के मुख्य शासक थे। यूची मूलतः आदिवासी थे। कुजलकडफीसस् के नेतृत्व में यूची समूह एकत्रित हुए। इसने हिंदू कुश पहाड़ों को पार करके काबूल तथा कश्मीर में आकर बस गया। विमकडफीसस् काल में स्वर्ण के सिक्कों को अस्तित्व में लाया गया। यहाँ से आगे कुषाण सामान्यतः सोना या ताँबे के सिक्कों को मुद्रण कराते थे।



गांधार शैली की बुद्ध प्रतिमा

विमकडफीसस् के बाद कनिष्क सिंहासन पर बैठा। इसके शासन के अंतर्गत कुषाण राजवंश का समग्र रूप से विकास हुआ। इसने सा.श. 78 में राज्यशासन को प्रारंभ करके नये युग के लिए प्राक्कथन रखा, इसको 'शक युग' कहते हैं।

भारत में कनिष्क का शासन की सीमा दक्षिण में सांची तथा पूर्व में बनारस तक व्यापक रूप से फैली हुई थी। इसके शासनकाल में विशाल साम्राज्य, मध्य एशिया तक फैला हुआ था। कनिष्क की राजधानी पुरुषपुर थी। इस काल का एक और प्रमुख नगर 'मथुरा' था।

कनिष्क ने बौद्ध धर्म को आश्रय देने से वह अधिक समृद्ध रूप से विकास होने में संभव हुआ। इसके काल में अश्वघोष, वसुमित्र, संगरक्ष, आदि बौद्ध विद्वानों को देखते हैं। चौथा बौद्ध सम्मेलन को कश्मीर में कनिष्क के नेतृत्व में आयोजन किया गया था। इसने अशोका की तरह ही बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए मध्य एशिया तथा चीना के लिए नियोग भेजा था। इसके काल में कला और वास्तुशिल्प को भी प्रोत्साहन मिला था।

बौद्ध सम्मेलन			
सम्मेलन	राजाश्रय	स्थल	अध्यक्षता
प्रथम सम्मेलन	अजातशत्रु	राजगृह	महाकश्यप
द्वितीय सम्मेलन	कालाशोक	वैशाली	सभाकामी
तृतीय सम्मेलन	अशोक	पाटलीपुत्र	मेगालीपुत तिस्स
चतुर्थ सम्मेलन	कनिष्क	कंडलवन	वसुमित्र

अभ्यास

I. निम्नलिखित वाक्यों को उचित शब्दों से पूर्ण कीजिए :

1. चाणक्य _____ नाम से प्रसिद्ध हुआ था।
2. मौर्यों की राजधानी _____ थी।
3. कुषाण राजवंश का संस्थापक _____ था।
4. कनिष्क के राज्य शासन के नये युग को _____ कहते हैं ।

II. संक्षेप रूप में उत्तर लिखिए :

5. अशोक के काल के प्रमुख नगर के नाम लिखिए ।
6. अशोक के शासन के बारे में विस्तृत वर्णन दीजिए।
7. कुषाण किस संतति के थे?
8. कनिष्क का साम्राज्य कहाँ तक फैला हुआ था।

III. गतिविधियाँ :

1. गांधार शिल्पकला के बारे जानकारी प्राप्त कीजिए ।
2. कनिष्क के काल में घटित बौद्ध महासम्मेलन के बारे में अपने अध्यापकों से अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए।



अध्याय 17

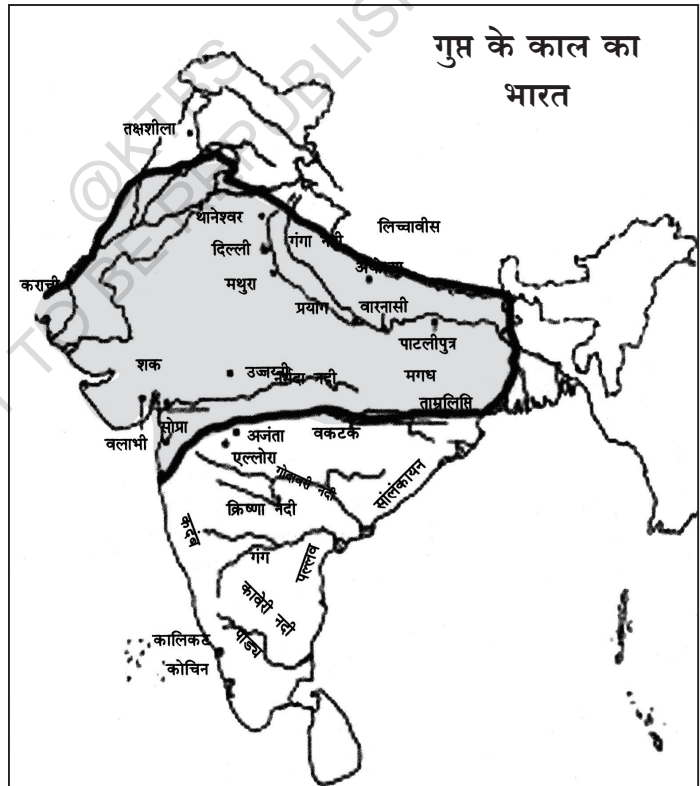
गुप्त और वर्धन



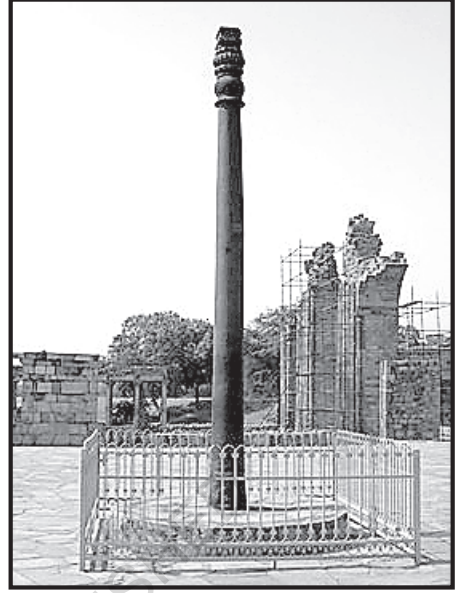
इस अध्याय के अध्ययन के बाद इन निम्नलिखित अंशों के बारे में समझेंगे :

- गुप्त साम्राज्य के प्रसिद्ध शासक और राजनैतिक विकास को जानना।
- गुप्त साम्राज्य के प्रशासन, साहित्य और वैज्ञानिक योगदान को जानना।
- गुप्त साम्राज्य की व्याप्ति को भारत के मानचित्र में पहचानना।
- वर्धन साम्राज्य के विकास, साहित्य और शैक्षणिक क्षेत्र के लिए दिये गये देन के बारे में जानना।

शताब्दियों के राजनीतिक अनिश्चितता के बाद सा.श. 4 वीं शताब्दी में गुप्त साम्राज्य का उदय हुआ। संस्कृत भाषा और उससे रचित अत्यधिक साहित्य इस काल का दर्पण है। उन्होंने मगध क्षेत्र से अपना अस्तित्व बनाया। पहला चंद्रगुप्त ने लिच्छिवि की युवरानी से विवाह करके अपने राज्य के सामर्थ्य को बढ़ाया। माना जाता है कि इनसे सा.श. इनको 320 में 'गुप्त शका' का आरंभ हुआ है। महाराजाधिराजा कहा जाता था।



इसके बाद इसका पुत्र समुद्रगुप्त को देख सकते हैं। हरिसेना के द्वारा रचित प्रयाग प्रशस्ति-लेख से उसकी उपलब्धियाँ अमर हुई हैं। यह संस्कृत भाषा में है। अशोक के एक स्तंभ पर इसको उकेरा गया है। भारत के अधिकांश भाग इसके काल में गुप्तों के प्रशासन के अधीन में था। अश्वमेध यज्ञ करके वैदिक विधि विधान को स्मरण दिलाया। समुद्रगुप्त केवल क्षत्रिय न था, वह एक महाकवि, और संगीत-प्रेमी भी था। इसके संगीतप्रेम को स्वर्ण सिक्कों में वीणा बजाने के चित्र के द्वारा व्यक्त होता है।



मेहरूली में स्थित लोह का स्तंभ

यह दिल्ली के कुतुब मीनार के पास मेहरूली में स्थित लोहे का स्तंभ है। यह 23 फुट तथा 8 इंच लम्बा है, 6000 किलोग्राम वजन है। यह उस समय का तकनीकी उपलब्धि के लिए निदर्शन है। यह आज भी जंग के बिना खड़ा है। उस काल में ऐसे उत्तम गुणवत्ता लोहे को तैयार करने की कला भारतीयों को ज्ञात था। लोहे में रंजक (Phosphorus) को मिलाने से जंग लगने की प्रक्रिया धीमी होती है। मेहरूली में इस स्तंभ शासन में रंजक का अंश अधिक मात्रा में रहने के कारण से इसे जंग नहीं लगा है।

मेघदूत

यह कालिदास के द्वारा रचित खंडकाव्य है। यह उनकी प्रसिद्ध कृतियों में एक है। राजा कुबेर यक्ष को कर्तव्य लोप के लिए एक वर्ष सीमापार का दंड देता है। इस संदर्भ में कैलाश पर्वत प्रदेश में रहने वाली अपनी पत्नी को प्रेम संदेशा को भेजने का कार्य को यक्ष ने उसी मार्ग से जाने वाले बादल को सौंपा। चलते बादल को यक्षी तक पहुँचने के मार्ग में दिखाई देने वाले रमणीय दृश्यों को यक्ष के द्वारा विवरण देने वाली कथा ही मेघदूत में है। यह आज भी विश्वभर के प्रसिद्ध काव्य है। भारत के समस्त भाषा में तथा विश्व के प्रमुख भाषाओं में, इसका अनुवाद मुद्रित है। मेघदूत में हम उत्तर भारत के प्रमुख स्थानों का वर्णन देख सकते हैं।

द्वितीय चन्द्रगुप्त : समुद्रगुप्त के साम्राज्य को द्वितीय चंद्रगुप्त ने और विस्तार करके, उसको सुदृढ़ बनाया। इसने शकों को हराकर पश्चिम भारत को गुप्त साम्राज्य में लीन किया। भारत के कई राजवंश के साथ इसने वैवाहिक संबंध को जोड़कर प्रभावशाली होकर, विक्रमादित्य नामक उपाधि अर्जित किया। इसके काल में युद्ध से अधिक साहित्य तथा कला के लिए जो प्रेरणा मिली वह अविस्मरणीय है। सुप्रसिद्ध संस्कृत कवि तथा नाटककार कालिदास इस काल के थे। इसने मेघदूत, ऋतुसंहार नामक खंडकाव्य को, रघुवंश और कुमारसंभव नामक महाकाव्य को लिखा था। अभिज्ञान शकुंतला इसका उसके श्रेष्ठ नाटकों में से एक था। शूद्रका मृच्छकटिका तथा विशाखादत्ता का मुद्राराक्षस इस काल की अन्य कृतियाँ थीं।

अभिज्ञान शाकुंतला

यह कृति कालिदास की सर्वश्रेष्ठ नाटक है। शकुंतला की कथा महाभारत में उल्लेख है। कथा में दुष्यंत महाराज शिकार खेलते महर्षि कण्व के आश्रम में पहुँचें। वहाँ दुष्यंत शकुंतला को देखते ही मोहित होकर, इन दोनों के बीच गंधर्व विवाह होता है। ये सब कण्व महर्षि की अनुपस्थिति में होता है। कुछ समय के बाद दुष्यंत शकुंतला को आश्रम में ही छोड़कर राजधानी ओर लौटते हैं। इस विरह के संदर्भ में दुर्वास मुनी कण्व आश्रम आते हैं। उनको उपचार करना भूलकर, दुष्यंत की याद में बैठी, शकुंतला को देखकर 'जिसके याद में तुम अपने आप को भुला बैठी हो, वह तुम्हें भूल जाएँ' ऐसे श्राप देते हैं। शकुंतला इसके लिए क्षमा माँगने पर दुर्वास ने दुष्यंत के द्वारा दी गई, वस्तु को देखते ही उसको स्मरण होगा। इस तरह सूचना देते हैं। वह वस्तु अंगूठी थी, जो दुष्यंत ने शकुंतला को अंगूठी दिया था। दुर्वासजी ने जैसे कहा था वैसे ही दुष्यंत, शकुंतला को भुला बैठा था। कालांतर में गर्भवती शकुंतला और दुष्यंत को मिलाने के लिए कण्व महर्षि के शिष्यों ने शकुंतला को दुष्यंत के राज्यसभा में ले आते समय मार्ग में शकुंतला राजा के स्मरणार्थ, उसके द्वारा दी गई अंगूठी को खो देती हैं। इसलिए दुष्यंत महाराज उसको पहचानने में अशक्त हुआ था। अपमान से शकुंतला वहाँ से चली जाती हैं। कुछ दिन के बाद एक मछली के पेट में अंगूठी मिली जो राजा को स्मरण दिलाने में सहायता की। पश्चात्ताप ने दुष्यंत को घेरा लिया। कुछ दिनों के बाद दुष्यंत लौटते हुए मार्ग में मरीच महर्षि के आश्रम को भेंट देता हैं। वहाँ शेर के बच्चों के साथ खेलने वाले बालक को देखकर उसके अतीत के बारे में जानकर, वह अपना पुत्र 'सर्वदमन' समझकर खुश हुआ। इस तरह दुष्यंत को उसकी पत्नी शकुंतला और पुत्र के साथ पुनर्मिलन होता है। अभिज्ञान शकुंतला यह संसार के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में से एक है। यह नाटक विश्व भर में अधिक प्रसिद्ध है।

हूणों के निरंतर आक्रमण से गुप्त साम्राज्य का पतन हुआ। गुप्तों के पास बृहद सुसज्जित सेना नहीं थी। युद्ध के समय में उनको सामंतों की सेना की आवश्यकता पड़ती थी। इससे सामंत इनके काल में शक्ति का प्रयोग करते थे। अधिकारी वर्ग अमात्यो से भरा हुआ था। विविध पद पर अमात्य थे। प्रशासन विकेंद्रीकृत था। पुरोहित शाही लोगों को कई प्रकार के दान मिलते थे। कई गाँवों को भूदान के रूप में इनको दिया जाता था। कई देवालय भी इससे समृद्ध हुए, ऐसे प्रदेश को कई आर्थिक तथा प्रशासनात्मक छूट दी जाने के साथ-साथ वहाँ के व्यवहारों से स्वतंत्र प्रदेश हुए। बाद में उस प्रदेश के निवासीगण, किसानों, कारीगरों ने भू-मालिकों के नियमों के अधीन थे। इस तरह समाज संकीर्णता की पथ पर चलने लगा।

इस काल में पाश्चात्यों के साथ, गुप्तों के व्यापार क्षीण हुआ। इससे गुप्तों के आर्थिक व्यवस्था लुप्त हुई। साम्राज्य पर अत्यधिक प्रतिबंध के कारण आंतरिक व्यापार भी अंतिम हुआ। व्यापार अब सिर्फ ग्रामों के लिए ही सीमित था। व्यापार में नष्ट के कारण नगर केंद्रों का नाश का कारण बना। इस तरह पाटलिपुत्र भी केवल एक ग्राम बनकर रह गया।

भक्ति के आधार पर विविध धर्म ग्रंथ, धर्म शास्त्रों, तथा पुराणों की सृष्टि के पूर्व काल है। वराहमिहिर, भास्कर-1, आर्यभट, चरक, तथा सुश्रुत, इस काल के श्रेष्ठ वैज्ञानिक थे। वराहमिहिर, भास्कर-1, और आर्यभट, ज्योतिष शास्त्र, खगोल तथा गणित अध्ययन क्षेत्र के लिए उनकी देन महत्वपूर्ण है। चरक और सुश्रुत ने अध्ययन किया। चिकित्साशास्त्र का चरक ने चरक संहिता की रचना की। सुश्रुत ने शस्त्रचिकित्सा के बारे में सुश्रुत संहिता की रचना की।

गुप्तकाल के वैज्ञानिक

1. धन्वंतरी : चिकित्साशास्त्र के क्षेत्र में प्रसिद्ध विद्वान थे। ये आयुर्वेद शास्त्र के ज्ञाता थे। चिकित्सा-शास्त्र के पितामह, आयुर्वेद शब्दकोश को वे वैद्य शास्त्र के लिए भेंट के रूप में दिया है।

2. चरक : चिकित्सा शास्त्र के वैज्ञानिक थे। 'चरक संहिता' नामक ग्रंथ की रचना कर। चिकित्सा क्षेत्र में महत्वपूर्ण देन दिये हैं।

3. सुश्रुत : शस्त्र चिकित्सा के वैद्य था। भारतीय परंपरा में शस्त्र चिकित्सा को देने का क्रम को बताने वाले पहले व्यक्ति थे। सुश्रुत का उल्लेख है कि उन दिनों सैनिकों के उपचार के लिए एक अलग विभाग था। आधुनिक काल में किया जाने वाले शस्त्र चिकित्सा के जैसे सुश्रुत ने शस्त्र चिकित्सा को करने की कुशलता को प्राप्त करके वैद्यकीय क्षेत्र को महत्वपूर्ण देन दिया था।

4. आर्यभट : ये एक खगोल शास्त्र तथा गणित शास्त्र के प्रमुख वैज्ञानिक थे। ये वराहमिहिर के समकालीन थे। खगोल तथा गणित के क्षेत्र में उनका योगदान बहुत बड़ा था। यह ही कारण है कि सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिकों को भारत सरकार ने आर्यभट उपाधि देकर सम्मानित करती है। भारत के प्रथम उपग्रह को आर्यभट का नाम रखा गया है। सूर्य और भूमि के समतल में उन दोनों के बीच चंद्र आता है तो सूर्य ग्रहण तथा सूर्य तथा चंद्र के बीच भूमि आती है तो चंद्रग्रहण होता है। इसे स्पष्ट रूप से आर्यभट कहा है।

5. वराहमिहिर : ये प्रख्यात खगोल शास्त्रज्ञ थे। 'पंच सिद्धांतिका' नामक खगोलशास्त्र का ग्रंथ की रचना किये थे। बृहदसंहिता, बृहद जातक, लघु जातक नामक ग्रंथों को इनके द्वारा रचा गया था। खगोलशास्त्र, ज्योतिष, भूगोल, मौसम आदि क्षेत्रों में विद्वान थे।

वर्धन

दो शताब्दियों के काल तक शासन करने वाले गुप्त साम्राज्य, करीब सा.श.छठी शताब्दी तक आते-आते विघटन होने लगा। इस अवसर पर कई छोटे-छोटे राज्य पनपने लगे। उनमें से प्रमुख वर्धन राज्य भी एक था। उन्होंने छठी शताब्दी में थानेश्वर से शासन किया। कुछ तांबे के शिला लेख, बाण का 'हर्ष चरित' तथा चीनी यात्री ह्यूयनत्सांग की लिखावट, इस काल पर प्रकाश डालता है।

पुष्यभूति वर्धन साम्राज्य का स्थापक था। प्रभाकर वर्धन तथा हर्षवर्धन इस राजवंश के प्रमुख राजा थे। हर्षवर्धन के पिता प्रभाकर वर्धन तथा उसके भाई राजवर्धन की मृत्यु के बाद इसने थानेश्वर का अधिपति बना। इसकी बहन राज्यश्री को कन्नौज के राजा के साथ विवाह किया था।

बंगाल के राजा शशांक ने कन्नौज के राजा की हत्या करने के तत्पश्चात हर्षवर्धन ने कन्नौज को अपने अधीन कर लिया। बंगाल के राजा पर आक्रमण करके बंगाल और मगध इसके अधीनस्थ हुए। पर दक्षिण में नर्मदा नदी को पार करना उसको असंभव हुआ क्योंकि चालुक्य राजवंश के कन्नड़ शासक द्वितीय पुलकेशी ने, इसके आक्रमण का मुँह तोड़ जवाब दिया। इस तरह पुलकेशी ने हर्षवर्धन को खदेड़ दिया। पुलकेशी की इस उपलब्धि के बारे पुलकेशी के दरबारी कवि रविकीर्ति द्वारा रचित इस तरह रविकीर्ति द्वारा रचित ऐहोले शिलालेख में मिलता है। पुलकेशी के विरुद्ध हर्षवर्धन का हार, हर्ष का 'हर्ष' को ही मिटा दिया। इस तरह रविकीर्ति ने बहुत मनोरंजक शैली में व्यक्त किया है। राजा के शासन में मंत्रिमंडल सहयोग देता था। महासंधिविग्रह (अनुसंधान का काम करता था) महाबलाधिकृत

(सेनानायक) भोगपति (राजस्व अधिकारी) दूत, आदि प्रशासन वर्ग से भरा हुआ था। राज्य को प्रांत में विभाजन किया गया था।

भू-राजस्व राज्य के आय का मुख्य स्रोत था। जागीरदार राजा उसे भेंट देते थे। राजा इनको देने के रूप में भू-भाग को देकर इसके प्रति सेना की सहायता पाते थे। राजा की दुर्बलता से सामंत स्वतंत्र होते थे।

भूदान को अन्य जनजाति और अन्य धर्मियों को दिया जाता था। हर्ष ने बौद्ध धर्म को अत्यधिक महत्व दिया था। इस काल में व्यापक रूप से फैला बौद्ध धर्म का विवरण ह्यूयनत्सांग की लिखावट से मिलती है। बौद्धों का नालंदा विद्या केंद्र इस काल में अत्यधिक सक्रिय था। इसको राजाश्रय मिला था।

नालंदा विश्वविद्यालय



यह एक प्राचीन विद्यालय का केंद्र के रूप में प्रसिद्ध था। बुद्ध ने नालंदा को भेंट की। हर्षवर्धन ने 25 मीटर ऊँचाई की कान्स की बुद्ध की प्रतिमा को नालंदा के लिए उपहार के रूप में देने का उल्लेख मिलता है। कुमार गुप्ता ने यहाँ के एक ललित कला विद्यालय को उपहार दिया था। यहाँ नागार्जुन, तथा धर्मपाल जैसे

प्रसिद्ध विद्वान बोधन करते थे। चीन के प्रवासी ह्यूयनत्सांग यहाँ पर भेंट करके कुछ समय तक ठहर कर इस प्रदेश के बारे में विस्तृत रूप से वर्णन किया है। इस प्रदेश में कई स्तूप, चैत्य, विहार और विश्रांति गृह, वहाँ-वहाँ पर बैठकर विश्राम करने के लिए सोपानों, ध्यान मंदिर, शिक्षण कक्षाएँ तथा यहाँ के अन्य इमारतें इसके वैभव का गुणगान करते हैं। गुप्त शासक तथा हर्षवर्धन, इसके सुप्रसिद्ध पोषक थे। अहुती के कारण अनेक कृतियाँ जलकर अग्नि की खाक बन गये।

अभ्यास

I. रिक्त स्थानों को उचित शब्दों से भरिए :

1. गुप्त अपने अस्तित्व को _____ प्रदेश से प्राप्त की ।
2. पहला चंद्रगुप्त _____ नाम से जाना गया ।
3. कालिदास के श्रेष्ठ नाटकों में _____ भी एक हैं।
4. विशाखदत्त की कृति _____ हैं।
5. शूद्रक की कृति हैं _____
6. वर्धन राजवंश का स्थापक _____ हैं।

II. निम्न लिखित प्रश्नों के लिए उत्तर लिखिए :

7. द्वितीय चंद्रगुप्त के बारे में लिखिए ।
8. गुप्त साम्राज्य के पतन का कारण क्या है ?
9. गुप्त काल के श्रेष्ठ वैज्ञानिकों के नाम लिखिए ।
10. वर्धन के प्रशासन किस प्रकार चलता था ?
11. नालंदा विश्वविद्यालय के बारे में लिखिए ।

III. गतिविधियाँ

1. कालिदास के समस्त कृतियों के बारे में जानिए।
2. गुप्तकाल के वैज्ञानिकों के बारे में विस्तृत जानकारी तथा चित्रों को संग्रह कीजिए।



अध्याय - 18

दक्षिण भारत के राजवंश : शातवाहन, कदंब और गंग



(सा.श.पू. 3 वीं की शताब्दी सा.श. 13 वीं शताब्दी तक)

इस अध्याय के अध्ययन के बाद निम्नलिखित अंशों को समझेंगे :

- दक्षिण भारत में शातवाहन वंश का विकास, प्रमुख गौतमीपुत्र शातकर्णी की उपलब्धि, प्रशासन, कला वास्तुशिल्प क्षेत्रों के बारे में समझना।
- कर्नाटक में स्थापित प्रथम राजवंश कदंबों के बारे में जानकारी प्राप्त करना।
- कदंबों के श्रेष्ठ राजा मयूरवर्मा के प्रशासन की रीति, कला, वास्तुशिल्प, धार्मिक क्षेत्र की देनों के बारे में समझना।
- गंग वंश की स्थापना और कला, वास्तुशिल्प तथा साहित्य क्षेत्र को दिये हुए उनके योगदानों के बारे में समझना।
- कदंब, गंगों के साम्राज्य को भारत के मानचित्र में पहचानना।

विंध्य पर्वत उत्तर और दक्षिण भारत को अलग करता है। विंध्य पर्वत से दक्षिण भारत के कन्याकुमारी तक के भाग को दक्षिण भारत अथवा दक्खन प्रांत कहते हैं। शातवाहन, कदंबा, गंग, चालुक्य, राष्ट्रकूट, पल्लव इस प्रदेश के प्रशासकों में प्रमुख है।

शातवाहन (सा.श.पू. 230 सा.श.220)

शातवाहन वंश दक्खन में स्थापित हुआ पहला राजवंश है। चन्द्रगुप्त मौर्य के काल में गोदावरी, कृष्णानदी के बीच में स्थित, सामंत के रूप में भेंट देते थे। सा.श.पू. 220 के समय में सिमुख स्वतंत्र हुआ। इसने श्रीकाकुलम को राजधानी बनाया और शातवाहन वंश की स्थापना की।

गौतमीपुत्र शातकर्णी :

इस वंश के प्रमुख राजा गौतमीपुत्र शातकर्णी है। इन्होंने साम्राज्य के दुश्मन, शाक को भारत की सीमा से बाहर भगाकर, अपना साहस दिखाया। इससे शालीवाहन शक प्रारंभ

हुआ। कोंकण, बीरार, सौराष्ट्र, मालवा के अलावा अनेक नये प्रदेशों को वश में कर लिया। इसको त्रै समुद्रतोय पतिवाहन, शातवाहन कुलयशः प्रतिष्ठापनकार की आदि उपाधियाँ थी।

यज्ञश्री शातकर्णी इस वंश के आखिरी राजा थे। उस काल के निरंतर आक्रमण से यह साम्राज्य पतन हुआ।

शातवाहन के काल में राजा ही राज्य के सर्वोच्च अधिकारी थे। शासन की सुविधा के लिए राज्य को जनपद नामक जिला बनाकर, अधिकारियों की नियुक्ति की गयी थी। नगर और ग्रामों की व्यवस्था को स्व-प्रशासिक संस्थाएँ देख रही थीं।

समाज में वर्गभेद नहीं था। स्त्रियाँ भी ऊँचे स्थान पा रही थी। किसान, कारकून, (कारिदे) व्यापारी, सुनार, मछुए, बढई, जुलाहा, औषधि तैयारक आदि हस्तकारीगर थे। हस्त कारिगर के संघ भी थे। यही आगे चलकर वाणिज्य और व्यापारी संघ के रूप में कार्य निर्वहण कर रहे थे। विदेशी व्यापार को प्रोत्साह देने के अलावा नासिक, कल्याण, ब्रोंच, भटकल, आदि व्यापारी केन्द्र थे।



कार्ले का चैत्यालय

इनके काल में अजंता और अमरावती चित्रकला की रचना हुई। मंदिर, विहार और चैत्यालय बनाये गये। कार्ले में चैत्यगृह को बनवासी के अमीर व्यापारी भूतपाल ने निर्माण किया। शातवाहन के काल में कन्नड राज्य समृद्धि पाया और साहसी, समर्थ शासनकारों ने भारतीय संस्कृति को योगदान देकर इस देश को समृद्ध बनाया।

वैदिक धर्म के शातवाहन, बौद्ध तथा जैन मतों को प्रोत्साहन देकर सहकार भावना से रहते थे। कला, साहित्य और शिक्षा को प्रोत्साहन दिये। विद्वानों तथा सामान्य लोगों की भाषा प्राकृत भाषा में साहित्य की सृष्टि हुई। हालांकि द्वारा रचित 'गाथासप्तशती' इसका उदाहरण है।

कदंब (सा.श 325 से सा.श 540)

कदंब, कर्नाटक का पहला राजवंश था। इनकी राजधानी बनवासी थी। जो उत्तर कन्नड जिले में हैं। मयूरवर्मा इस वंश का स्थापक और श्रेष्ठ राजा था। पल्लव राजा शिवस्कंधवर्मा से अपमानित होकर मयूरशर्मा ने अपना वर्ण त्याग कर, क्षत्रिय वर्ण स्वीकार किया और मयूरवर्मा बन गये। पल्लवों को हराकर कदंब राज्य की स्थापना की। यह कन्नड भाषियों के स्वाभिमान का संकेत है।

कर्नाटक और भारतीय संस्कृति को कदंबों की देन महत्वपूर्ण है। कदंबों के शासनकाल में करीब 3 शताब्दियों तक राजनैतिक एकता थी। शासन में मांडलिक, राजपुरोहितों, मंत्रियों, सेनानायकों द्वारा प्रमुख भूमिका निभाई गई। प्रशासन की सुगमता के लिए प्रांत्याधिकारी, प्रांत्यों को देखने के लिए नियुक्त किए जाते थे।

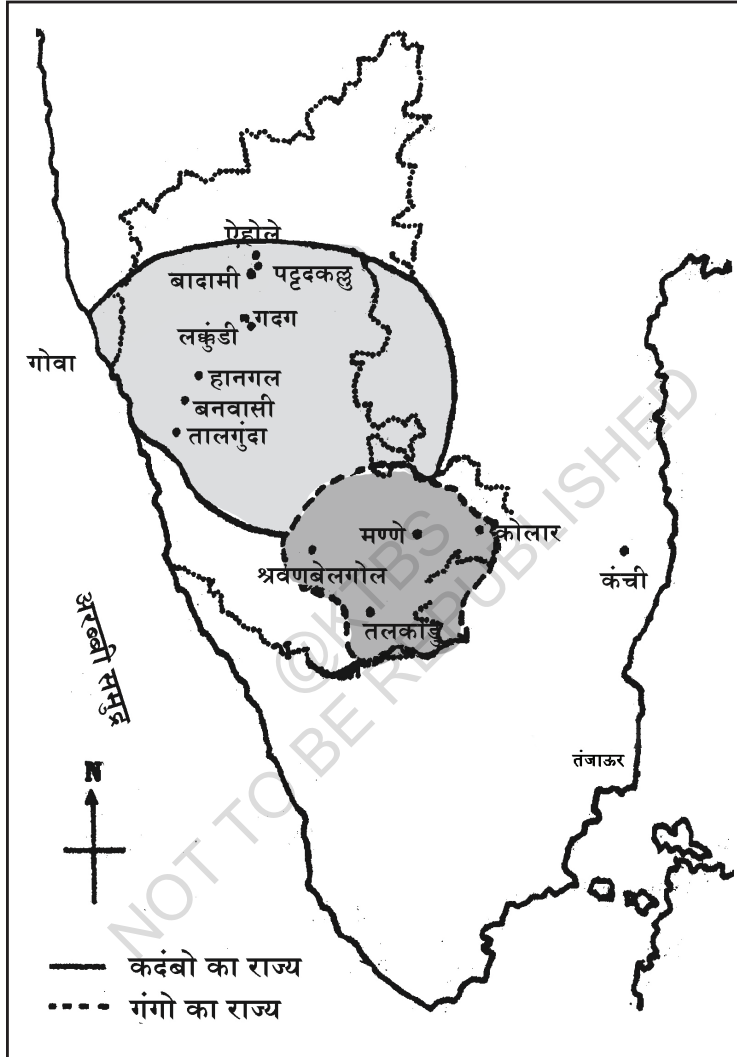
भू-राजस्व राज्य की मुख्य आमदनी थी। बढई, सुनार, लुहर, जुलाहा, कुम्हार, तेली - आदि उद्योग मुख्य थे। खेतीबारी, व्यापारे को ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाता था। पितृप्रधान परिवार तथा अविभक्त परिवार को प्रधानता दी जाती थी।

कदंब वैदिक धर्म के अनुयायी थे। फिर भी उन्होंने जैन धर्म और बौद्ध धर्म को प्रोत्साहन दिये। हानगल, पुलिगेरे, आदि स्थानों में जैन मंदिरों को और विद्वानों को दान (दत्ति)

देकर कर्नाटक में जैन संस्कृति फैलाने के लिए प्रोत्साहन दिया।

चित्रदुर्ग के चंद्रवल्ली शिलालेख के अनुसार मयूरवर्मा चंद्रवल्ली तालाब के किनारे को ऊँचा बनाय।

कदंब साम्राज्य का मानचित्र





मधुकेश्वर मंदिर, बनवासी

कदंब राज्य में बौद्ध धर्म ऊँची स्थिति में था। कदंब राज्य में अजंता और बनवासी, बौद्ध धर्म के दो प्रमुख केन्द्र थे। मंदिर त्योहार, जुलूस के केन्द्र थे। प्राकृत-संस्कृत भाषा को प्रोत्साहन दिया गया। पहले प्राकृत, बाद में संस्कृत राजभाषा बन गयी। कन्नड लोक भाषा थी। बहुत प्राचीन हल्मिडि शिलालेख-पाँचवी सदी में

रूढीगत कन्नड भाषा स्वरूप को प्रदर्शित करता है। यह कन्नड का पहला शिलालेख है।

मलवल्लि शिलालेख प्राकृत भाषा का परिचय देता है। तालगुंदा शिलालेख कर्नाटक में मिला प्रथम संस्कृत शिलालेख है।

कर्नाटक में वस्तुशिल्प कला की नींव कदंबों द्वारा डाली गयी। बनवासी में अनेक मंदिर और विहारों का निर्माण किया गया। कदंबों के काल में प्राथमिक और उच्च शिक्षण - विकसित होकर शिक्षण केन्द्र अग्रहार, ब्रह्मपुरी और घटिक स्थान स्थापित किये गये। उस काल के प्रमुख अग्रहार, तालगुंद और बल्लिगावि में थे। अग्रहार गुरुकुल के रूप में आवासित विध्यालय की तरह चलते थे।

गंग (सा. श 350 - सा.श. 1004)

गंग राजवंश की उन्नति और अवनति कर्नाटक इतिहास के आदिभाग का एक मुख्य अध्याय है। गंग वंश के स्थापक ही अपने को इक्ष्वाकु वंश के कहे। कुवलाल, तलकाडू तथा मान्यपुर (आज का मण्णे, नेलमंगल, बेंगलूर ग्रामांतर जिला) द्वारा प्रशासन किया गया।

दडिग से प्रारंभ होकर गंगवाडी राज्य करीब 27 (सत्ताईस) राजाओं द्वारा प्रशासित है। गंग राजाओं में दुर्विनीत एक प्रसिद्ध राजा था। इस महान वीर तथा विद्वान, दीर्घ समय तक शासन किया। अपना राज्य को मजबूत बनाने के लिए पुत्राट को जीत लिया। नल्लाल ताम्र पट से यह मालुम होता है कि ये अनेक तालाबों का सिंचाई के लिए निर्माण किया गया। साहित्य प्रेमी होने के अलावा इन्होंने खुद संस्कृत और कन्नड भाषा में साहित्य की रचना की। गुणादय की वड्डकथा ग्रंथ को प्राकृत से संस्कृत में अनुवाद किया है।

गंग राजाओं की देन :

राजा को सलाह देने के लिए मंत्रिमंडल था। मंत्री, विभिन्न शासन की शाखाओं का देखभाल करते थे। ग्राम का प्रशासन व्यवस्थित था। ग्राम सभा भू-राजस्व, कर, न्याय, स्वच्छता, संरक्षण देख रही थी। खेतीबारी उनका मुख्य उद्योग था। जुलाहे, लुहार आदि उद्योग भी थे। ये कई राष्ट्रों के साथ व्यापार संबंध रखते थे।

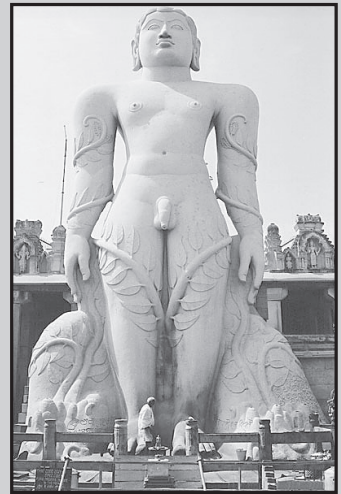
गंगों के काल का समाज कई पंथ, जाति में विभाजित होने पर भी परस्पर निर्भर था। पितृ प्रधान अविभक्त कुटुंब पद्धति जारी थी। समाज में लोग सत्यशीलता, स्वामिनिष्ठा, शौर्य और सहनशीलता सामाजिक मूल्यों से प्रभावित थे।

चैत्यालय, घटिका स्थान, ब्रम्हपुरी, मठ तथा अग्रहार शिक्षा देनेवाले केन्द्र थे। उन्नत शिक्षा के स्थान ब्रह्मपुरी और घटिक थे। तलकाडू, श्रवणबेलगोला, बंकापुर और पेरु ज्ञानार्जन के केन्द्र थे।

गंग जैन धर्म के अवलंबित होने के कारण जैन धर्म का प्रभाव अधिक बढ़ गया। पूज्यपाद, वज्रनंदि, अजितसेन आदियों से यह धर्म जनप्रिय बन गया। श्रवणबेलगोल में 58 फुट एकशिला के गोमटेश्वर मूर्ति की स्थापना और बारह साल में एक बार महामस्तकाभिषेक गोमटेश्वर को आज भी चल रहा है, इसे आप ध्यान दे चुके, है न ?

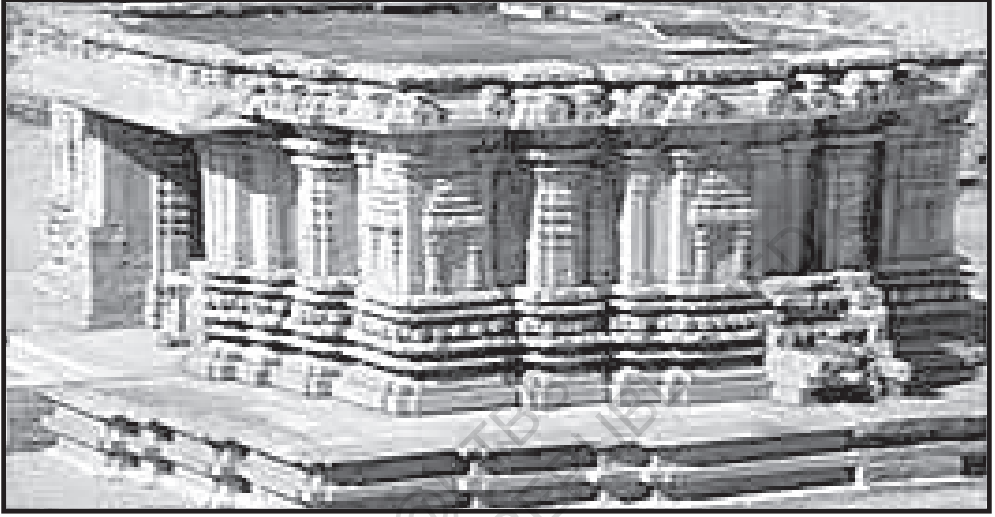
बाहुबली - गोमटेश्वर

श्रवणबेलगोल गोमटेश्वर (बाहुबली) की मूर्ति विरक्त जीवन का संकेत है। चौथे राचमल्ल के मंत्री चावुंडराय इसके निर्माता है। 100 भाइयों में भरत जेष्ठ था। बाहुबलि छोटा था। भरत के राज्याभिषेक के बाद एक चक्रवर्त्तन पैदा हुआ। उससे सब राज्यों को जीतकर साम्राज्य के अधिपति बना गया। सब भाई इसके शासन से सहमत थे। पर बाहुबलि न माने। इन दोनों में युद्ध हुआ। दृष्टि युद्ध, जलयुद्ध, मल्लयुद्ध में भरत हार गया। मल्लयुद्ध के अंत्य में बाहुबलि भरत को चक्र की तरह घुमाकर फेंकना शेष था, कि बाहुबलि के मन में विरक्ति पैदा हुई। बड़े भाई को धीरे से उतारकर नमस्कार करके विरक्त भाव से खड़े होकर तपस्या करने लगे। उससे भी मुक्ति न मिली तो बाहुबलि, अपने भाई के राज्य में खड़े होकर तपस्या करने के कारण निर्वाण प्राप्त नहीं हुआ। तब भरत ने खुद आकर बाहुबली से कहा कि सारा साम्राज्य बाहुबलि का है। इसका शासन करने वाला मात्र मैं हूँ इसके बाद उसे मोक्ष मिलता है।



श्रवणबेलगोल गोमटेश्वर विग्रह

गंग राजाओं ने कला और वास्तुशिल्प को प्रोत्साहन दिया। इन्होंने सुन्दर मंदिर, विहारों का निर्माण करवाया। मण्णे का कपिलेश्वर मंदिर तलकाडु के पातालेश्वर और मरुलेश्वर, कोलार का कोलारम्मा, बेगूर का नागेश्वर, श्रवणबेलगोल का गोम्मटेश्वर आदि। ऊँचा मानस्तंभ और ब्रह्ममान स्तंभ। गंगों की विशिष्ट देन है।



तलकाडू का पातालेश्वर मंदिर

साहित्याभिमानी गंग राजाओं ने संस्कृत, प्राकृत और कन्नड भाषा को प्रोत्साहन देने से ग्रंथ रचना हुई। इम्मडि माधव ने 'दत्तक सूत्र' पर टिप्पणी लिखी। दुर्विनीत के 'शब्दावतार' संस्कृत कृति रचना के अलावा गुणाढ्य की 'वडुकथा' को संस्कृत में अनुवाद किया। श्री पुरुष के 'गजशास्त्र', दूसरा शिव माधव के गजाष्टक कन्नड़ कृति रचना की गयी। कवि हेमसेन का 'राघव' पाण्डवीय, वादीबसिंह का 'गद्य चिंतामणि' और 'क्षात्र चूडामणि', नेमि चन्द्र का 'द्रव्यसार संग्रह' चावुण्डराय का 'चावुण्ड पुराण' आदि रचनाओं से ये प्रसिद्ध हुए।

अभ्यास

I. निम्नलिखित वाक्यों को पूर्ण कीजिए :

1. सिमुख ने _____ को राजधानी बनाया ।
2. हाला के द्वारा रचित कृति _____ है।

3. कन्नड़ का पहला शिलालेख _____ है।
4. कदंब की राजधानी आज के _____ जिले में है।
5. गंगवंश के प्रमुख राजा _____ है।
6. चावुण्डराय के द्वारा रचित ग्रंथ _____ है।

II. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

7. शातवाहनों के अंतिम राजा कौन थे ? इसके काल में राजवंश कैसे पतन हुआ ?
8. शातवाहनों की कला के बारे में लिखिए।
9. गंग साम्राज्य किन-किन मूल्यों से प्रभावित थे ?
10. गंग काल के चार ग्रंथों के नाम लिखिए।

III. गतिविधियाँ :

1. शिलालेख पढ़ने के बारे में शिक्षकों के साथ चर्चा कीजिए।
2. आपके नज़दीक ऐतिहासिक मंदिर जाकर उसका विवरण संग्रह कीजिए। सहपाठियों के साथ में चर्चा कीजिए।

IV. परियोजना :

1. शिलालेख को पढ़ने का अभ्यास करें।
2. किसी एक शिलालेख को पढ़कर उसके बारे में जानकारी प्राप्त कीजिए।
3. गंग राजधानियों की यात्रा करके वहाँ की जानकारी संग्रह कीजिए।



बादामी चालुक्य और कंची के पल्लव



इस अध्याय के अध्ययन के बाद निम्नलिखित अंशों को समझेंगे ।

- बादामी चालुक्य का आरंभ, प्रसिद्ध राजा इम्मडी पुलिकेशी काल के साम्राज्य का विकास समझना।
- धार्मिक, सामाजिक, सैनिक प्रशासन और न्यायिक प्रशासनिक व्यवस्था के बारे में समझना।
- बादामी चालुक्य साम्राज्य की सीमा को मानचित्र में पहचानना ।
- कंची के पल्लव के साहित्य, धर्म, कला और वास्तुशिल्प तथा शैक्षिक क्षेत्र को योगदान के बारे में समझना।

बादामी चालुक्य (540 - 753)

सा. श. 6 वीं सदी में कर्नाटक में महान शक्तिशाली राजाओं ने शासन किया। वे ही बादामी चालुक्य थे। इन्होंने कर्नाटक अपना सार्वभौम अधिकार स्थापित कर करीब 2 शताब्दी तक वैभव से प्रशासन किया। यह दक्षिण भारत इतिहास के प्रमुख राजवंशों में एक है।

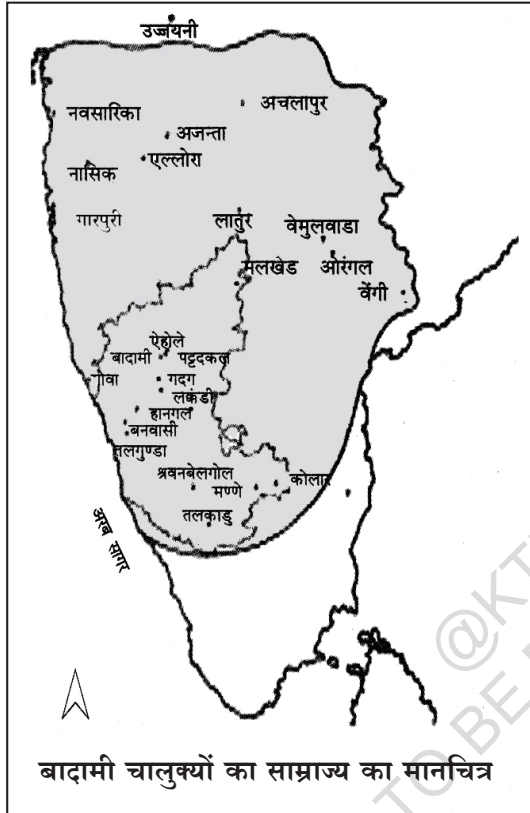
चालुक्यों का प्रशासन 6 वीं सदी से आरंभ होकर 8 वीं सदी के मध्यभाग में अंत हुआ। राजा जयसिंह इस वंश के स्थापक थे। इस राजवंश के शक्तिशाली और नामी राजा इम्मडी पुलिकेशी थे। गंग, कदंब और आलूपों को जीतकर अपने साम्राज्य का विस्तार किया।

दक्षिण दक्खन में पल्लव वैभव पूर्ण प्रशासन कर रहे थे। राजा महेन्द्रवर्मा पुलिकेशी के परमाधिकार को ना मानने के कारण पुलिकेशी उसे परास्त कर दिया। उत्तर भारत के हर्षवर्धन को नर्मदा नदी के किनारे परास्त कर दिया। इससे 'दक्षिण पथेश्वर' 'त्रिसागर से आवृत प्रदेश के अधिपति' नामक उपाधि पाई।

इम्मडी पुलिकेशी को अपने पूरे साम्राज्य को एक ही केन्द्र से प्रशासन करना न हो सका। इसलिए अपने छोटा भाई कुब्ज विष्णुवर्धन को वेंगी और जयसिंह को गुजरात प्रांत्य के अधिकारी बनाया । उन्होंने अगले वर्षों में वेंगी चालुक्य के नाम से करीब 5 (पाँच) सदियों तक प्रशासन किया ।

ह्यूयनत्सांग चालुक्य की राजधानी को भेंट किया था । इम्मडी पुलिकेशी और चालुक्य राजाओं के बारे में विवरण दिया है कि राजा न्यायपालक (खाजी) तथा करुणाल थे। सेना

में अनुशासन था। सैनिक मरने से न-डरते थे। वे वीर योद्धा थे । प्रजा सत्यप्रिय थी। वे संतोषी, स्वाभिमानी समृद्ध थे (अमीरी) मान प्रिय राजनिष्ठ थे। राजाओं को भी प्रजा से ज्यादा प्रेम था।



बादामी चालुक्यों का साम्राज्य का मानचित्र

अरब इतिहासकारों का कथन है कि इम्मडी पुलिकेशी महत्वाकांक्षी राजा थे। विदेशी राजाओं के साथ स्नेह-संबंध का बर्ताव रखे थे। फारसी राजा ने इम्मडी खुसु के साथ दूत संबंध भी रखा था ।

वर्षों के बाद पल्लव राजा प्रथम नरसिंहवर्मा अपने पिता महेन्द्रवर्मा के पराजय का बदला लेने के लिए चालुक्यों से युद्ध किया । चालुक्य राज्य को घेर कर वातापि को अपने वश में ले लिया । चालुक्य के आखिरी राजा कीर्तिवर्मा के काल में राष्ट्रकूटों ने इस साम्राज्य को अपने वश में कर लिया।

चालुक्यों की देन :

कन्नड राज्य, भाषा, संस्कृति को प्रोत्साहन देकर, उनकी रक्षा करते हुए धर्म, साहित्य, कला वास्तुशिल्प को बहुत देन दी है। इन्होंने ही इस राज्य का 'कर्नाटक' नाम रखा। उनकी सेना को कर्नाटबल कहा जाता था। कर्नाटक इतिहास में बादामी चालुक्य का प्रशासन बहुत श्रेष्ठ, वैभवयुत युग है। इस युग में सैनिक क्षेत्र, कला और साहित्य के क्षेत्र में भी अभिवृद्धि हुई।

करीब 200 साल तक प्रशासन किया। राजा खुद राजकाज में भाग लेते थे। राज्य को विषय (जिला) में विभाजित कर विषयाधिपति देख-भाल करते थे । ग्राम ही शासन अंशों में बहुत छोटा था। ग्राम का मुखिया, जमा-खर्च व्यवहार की देख भाल करते थे ।

चालुक्य शैव, वैष्णव, जैन-आदि सब संप्रदायों को प्रोत्साहन दिया। जैन मंदिरों के निर्माण, बौद्ध मत के विहारों को भी प्रोत्साहन दिया ।

ಸಾಧನಸಾಧನಾದ್ಯಷ್ಟು ಸಾಧನಾಂ
ದಾದಿ ಬೃಹದೀಶ್ವರವಿಜಯತಃ
ಹರಿಹರತಃ ಪ್ರೀತಃ

बादामी चालुक्य, साहित्य को प्रोत्साहन दिया। कन्नड तथा संस्कृत भाषा विकसित हुई। कन्नड इनकी देशीभाषा थी। इस काल के काव्य में त्रिपदी शैली को इस्तेमाल किया गया। कन्नड में केवल कृतियाँ न होने पर भी कई शिलालेख कन्नड में लिखी गई। बादामी कप्पे अरभट्ट शिलालेख का एक पद्य त्रिपदी शैली में है।

साधुंगे साधु माधुर्यगे माधुर्य
बाधिष्य कलिगे कलियुग
विपरीतन माधवनीतन पेनल्ला॥

इस काल के संस्कृत पंडित रविकीर्ति विज्जिका और अकलंक थे। पुलकेशी द्वितीय की बड़ू विज्जिक नाम की कवयित्री द्वारा रचित 'कौमुदी महोत्सव' शिवभट्टारक के 'हर पार्वतीय' प्रमुख संस्कृत नाटक हैं।

अच्छे लोगों के लिए अच्छा है। वह जो मीठे गुणवालों के साथ मीठा व्यवहार करता है। जो कष्ट देने वाले दुष्टों को दुष्ट-सा दिखनेवाला वह असाधारण माधव है।



विरुपाक्ष मंदिर, पट्टदकल्लु

बादामी चालुक्य महान निर्माता तथा कलाप्रेमी थे। बादामी, ऐहोले, पट्टदकल में सुन्दर, उच्चतम मंदिरों का निर्माण किया। इन्होंने 'चालुक्य शैली' or 'वैसर शैली' नामक विशिष्ट शिल्पकला की शैली को भारतीय वास्तुशिल्प में प्रारंभ किया। बादामी के चट्टानों में खुदे गुफांतरदेवालय का निर्माण किया। कई कलाकार तथा शिल्पियों को प्रोत्साहन दिया।

चालुक्य शैली के उत्तम मंदिर ऐहोले और पट्टदकल में है। मंदिर वास्तुशिल्प पालकियों के कई में ऐहोले भी एक है।

यहाँ, मंदिर के वास्तुशिल्प के विकास का प्रयोग किया है। यह शैली पट्टदकल में संपूर्ण रूप से विकसित हुई। यहाँ लोकेश्वर (विरुपाक्ष) और त्रैलोकेश्वर (मल्लिकार्जुन) आदि प्रसिद्ध मंदिरों को देखा जा सकता है। बादामी की गुफाओं में विष्णु, वराह, हरिहर, अर्धनारीश्वर की ऊँची मूर्तियाँ चालुक्यों की कलात्मक साधना का उत्तम उदाहरण है। चित्रकला को भी प्रोत्साहन मिला। इनके काल की अजंता कला विश्व प्रसिद्ध है।

कंची के पल्लव (350 - 895)

पल्लव तमिलुनाडू के सर्वप्रथम राजा हैं। दक्षिण भारत के राजावशों में विशेष स्थान है। इन्होंने सा.श. 4 वीं सदी सा.श 9 वीं सदी तक प्रशासन किया। प्रारंभ में ये शातवाहन के अधिकारी थे। शातवाहन राज्य की अवनति के बाद पल्लवों ने स्वयं को स्थानिक राजा के नाम से घोषित किया।

शिवस्कंदवर्मा इस वंश का पहला राजा है। पल्लवों और कदंबों के बीच निरंतर दुश्मनी थी। इसके बाद चालुक्य वंश के इम्मडी पुलिकेशी पल्लव के महेन्द्रवर्मा को पराजित किया। प्रथम नरसिंहवर्मा पल्लव राजाओं में बहुत प्रसिद्ध थे। चालुक्यों से बदला लेकर इम्मडी पुलिकेशी को हराकर वातापी को वश में कर लिया। इससे उन्हें 'महामल्लम और वातापिकोंड' नामक उपाधि मिली। इसके शासन काल में हुयूनत्सांग कंची का दौरा किया था। कंची के नज़दीक समुद्रतट में नरसिंहवर्मा ने एक नगर का निर्माण करवाया। उसका नाम 'महाबलिपुरम' रखा। कई एकशिला मंदिर इन्होंने निर्मित करवाए। अपराजित पल्लव के शासन काल में पल्लव साम्राज्य चोल के 'आदित्य' से अंत हुआ।

पल्लवों की देन

तमिलुनाडू में प्रशासन की ठीक व्यवस्था थी। साहित्य, धर्म, कला और वास्तुशिल्प तथा शिक्षण में इनकी देन बहुत प्रमुख है। वातापी में चालुक्यों, कंची में पल्लवों के शासनकाल ही दक्षिण में वीर युग है। इनके राज्य सदृढ़ और सुव्यवस्थित था। मंत्री और प्रांत्याधिकारी थे। राज्य को मंडल, नाडू, ग्राम के रूप में विभाजित किया था। ग्राम सभा ग्राम की समस्या पर ध्यान देती थी। 'ग्राम भोजक' ग्राम के शासन की देख-रेख करते थे।

पल्लवों ने संस्कृत और तमिल दोनों भाषाओं को प्रोत्साहन दिया। कंची संस्कृत साहित्य का केन्द्र था। पल्लव के दरबारी कवियों में भारवी (किरातार्जुनीय) तथा दंडी के 'दशकुमार चरित' प्रसिद्ध कृतियाँ हैं। राजा महेन्द्रवर्मा ने खुद, 'मत्त विलास प्रहसन' नामक सामाजिक नाटक तथा 'भागवदुज्जुकीय' ग्रंथों को रचना की है। पल्लवों ने सब धर्मों को प्रोत्साह दिये। पहले पल्लव राजा लोग बौद्धधर्मीय थे। नालंदा विश्वविद्यालय के महान विद्वान धर्मपाल कंची में जन्में थे। महेन्द्रवर्मा जैनधर्मवाले होने से देश में कई जैन थे।

7 वीं सदी में शैव, वैष्णव भक्तिपंथ, जनप्रिय बन गये। नायन्मार नामक 63 यति श्रेष्ठ शैवधर्म को प्रचार प्रसार किये। 12 आत्मारों ने वैष्णवधर्म को प्रचार किये।

इस युग में भक्ति आंदोलन आरंभ हुआ। वैदिक धर्म के पुनरुज्जीवन में मदद दी। तमिल में श्लोकों की रचना हुई। यही तमिल साहित्य की निधि है।

पल्लव कला और वास्तुशिल्प के प्रेमी रहे हैं। उन्होंने अपने राज्य में कई मंदिरों का निर्माण किया। इन मंदिरों में उत्तम कला कुशलता देख सकते हैं। पल्लव वास्तुशिल्प को पत्थरों को टाँककर मंदिर और रचना विन्यास पूर्ण मंदिर नाम से विभाजित कर सकते हैं।



महाबलिपुरम के पंचरथ

महाबलिपुरम में पत्थरों को टाँककर जो मंदिर बनाये, उनको देखा जा सकता है। एकशिला की अद्भुत मूर्तियों को उकेरकर, चित्रित किया गया है। इन में महाभारत तथा भागवत कथाएँ हैं। यहाँ के पंचरथ, प्रसिद्ध एकशिला मंदिर हैं। 'अर्जुन की तपस्या' नामक उकेरा गया दृश्य उत्तम कलाकृति है।

कंची के कैलासनाथ, एकांबर नाथ, वैकुंठ पेरुमालों के मंदिर और महाबलिपुरम के समुद्रतट के मंदिर प्राचीन भारत के वास्तुशिल्प का उत्तम निदर्शन हैं।

मंदिर धार्मिक तथा कलात्मक गतिविधियों का केंद्र था। मंदिर के आँगन में शाम के वक्त ग्रामीण लोग कई विषयों को चर्चा करते थे। आराम के समय में लोग यहाँ एकत्र होकर, पुराण श्रवण तथा भक्ति गीतों को गाते थे। इससे मंदिर सामाजिक तथा शैक्षणिक केंद्र बन गये थे।

पल्लवों के पास अच्छा नौकाबल था। यहाँ के व्यापारियों को मलाया, इंडोनेशिया, दक्षिण-पूर्व एशियाई राष्ट्रों के साथ वाणिज्य संबंध थे। भारतीय भाषा, धर्म, संप्रदाय, संस्कृति का प्रभाव इन देशों पर है।

अभ्यास

I. उचित शब्दों से खाली जगह भरिए :

1. इम्मडी पुलिकेशी से पराजित पल्लव राजा _____ थे।
2. बादामी चालुक्यों के सैन्य का नाम _____ था।
3. 'हर पार्वतीय' संस्कृत नाटक का कर्ता _____ था।
4. 'वातापीकोंड' उपाधि प्राप्त पल्लव राजा _____ थे।
5. 'अर्जुन की तपस्या' नामक कलाकृति _____ में है।

II. संक्षेप में उत्तर लिखिए :

6. द्वितीय पुलिकेशी ने अपने साम्राज्य का विस्तार कैसे किया ?
7. बादामी चालुक्यों की शासन व्यवस्था कैसी थी ?
8. बादामी चालुक्य साहित्य प्रेमी थे। उदाहरणों के साथ समझाइए।
9. संस्कृत और तमिल भाषाओं की पल्लवों ने किस प्रकार प्रोत्साहित किया ?
10. कला और वास्तुशिल्प के लिए पल्लवों की देन है?

III. गतिविधियाँ :

1. कन्नड भाषा को बादामी चालुक्यों की देन के बारे में समूहों में चर्चा कीजिए।
2. त्रिपदि के बारे में कन्नड़ अध्यापकों से और कन्नड़ पुस्तकों से अधिक जानकारी हासिल कीजिए।
3. कंचीपुर- महाबलिपुरम के लिए शैक्षिक प्रवास का इंतजाम कीजिए।

IV. परियोजना :

1. किसी एक स्थानीय ऐतिहासिक केंद्र पर जाकर विषय संग्रह कीजिए।
2. बादामी, ऐहोले और पट्टदकल्लु के पत्थर में रहनेवाले प्रमुख मंदिरों का चित्र निकालकर उसका एक अलबम बनाइए।



अध्याय - 20

मान्यखेट के राष्ट्रकूट और कल्याण के चालुक्य



इस अध्याय के अध्ययन के बाद निम्नलिखित अंशों को जानेंगे :

- राष्ट्रकूट वंश स्थापक दंतिदुर्ग, प्रसिद्ध राजा अमोघवर्ष के बारे में जानना ।
- प्रशासन, साहित्य और वास्तुशिल्प क्षेत्र को राष्ट्रकूटों के योगदान के बारे में समझना ।
- कल्याण चालुक्यों की अभिवृद्धि और प्रशासन साहित्य क्षेत्र के योगदान के बारे में जानना ।
- राष्ट्रकूट साम्राज्य की व्याप्ति को भारत के मानचित्र में पहचानना ।

राष्ट्रकूट (753 - 973)

राष्ट्रकूट कन्नड के लोग हैं। पहले वे चालुक्य के सामंत थे। बाद में स्वतंत्र होकर दक्षिण के विशाल साम्राज्य के राजा बने। कन्नड राज्य के इतिहास में राष्ट्रकूट युग एक श्रेष्ठ युग है। कर्नाटक राज्य के वैभव को उच्च स्थान दिलाने की कीर्ति इन्हें मिली है। उत्तर के नर्मदा नदी से दक्षिण कावेरी तक फैला साम्राज्य, एल्लोरा के कैलासनाथ मंदिर, कन्नड का पहला ग्रंथ कविराजमार्ग इन सबको अमर बनाया है।

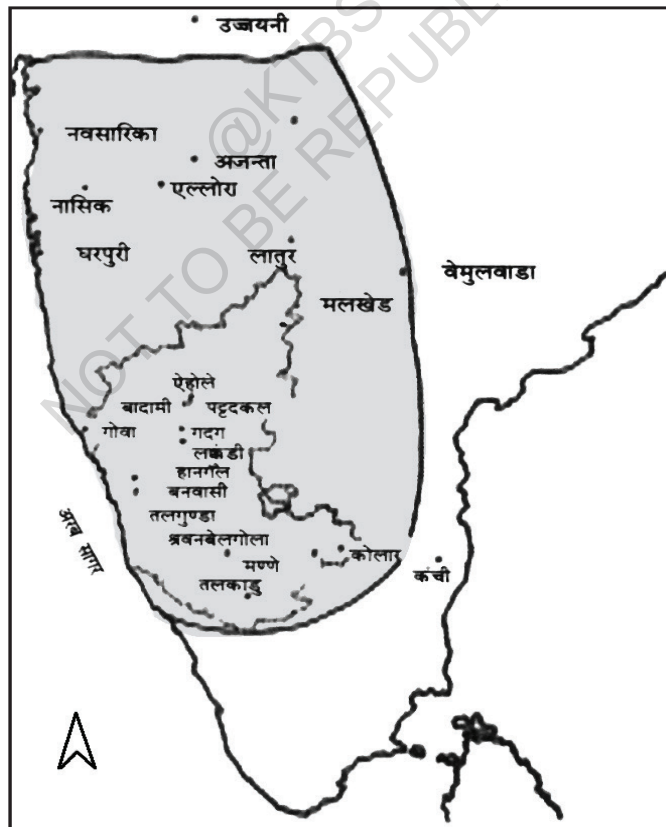
यह साम्राज्य दंतिदुर्ग से प्रारंभ होकर कृष्ण, इम्मडि गोविंद, ध्रुव, मुम्मडि गोविंद, अमोघवर्ष आदि से आगे बढ़कर ऊँची-चोटी पर पहुँचे। अमोघवर्ष के आरंभिक प्रशासन में कई बाधाएँ थीं। इसे युद्ध में सचि नहीं थी। ये शांति की इच्छा एता था। गंगों के साथ तथा पल्लवों के साथ विवाह संबंध बनाकर दुश्मनी को समाप्त किया। ये शांति प्रिय होने कारण उत्तर के कुछ प्रांतों को खो दिया। पश्चिम के बंदरगाह को महान वाणिज्य केन्द्र होने के नाते फारस, पर्थिया अरेबिया के साथ व्यापार संबंध बनाकर समृद्ध राष्ट्र बनाया। कई यात्रिक, व्यापारियाँ इस साम्राज्य का संदर्शन किया। इनमें अरब यात्रिक सुलैमान प्रमुख थे। इसने कहा है कि अमोघवर्ष 'विश्व के चार श्रेष्ठ राजाओं में से एक हैं।'

अमोघवर्ष शूर और शांतिप्रिय था। सब धर्मों को प्रोत्साहन दिया। इसके बाद इम्मडी कृष्ण मुम्मडी. इंद्र, मुम्मडी कृष्ण ने प्रशासन किया। कर्क द्वितीय के काल के दौरान प्रशासनिक कमजोरी के कारण जागीरदार कल्याण चालुक्य के तैलप द्वितीय के उदय का मार्ग प्रशस्त कर राष्ट्रकूटों का प्रशासन समाप्त किया।

राष्ट्रकूटों की देन :

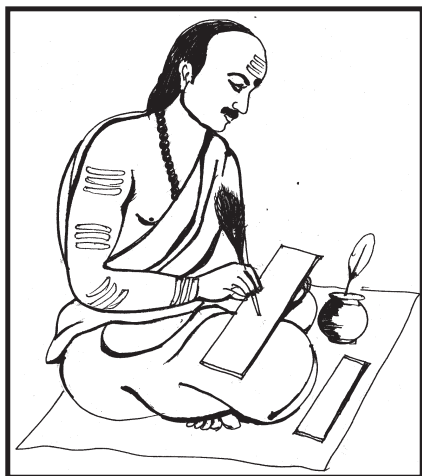
राष्ट्रकूट के राजत्व वंश परंपरा था। राजाओं की सहायता के लिए मंत्रिमंडल था। मंत्रिमंडल में विदेशी व्यवहार देखने महासंधि विग्रह नामक विदेश मंत्री था। प्रशासन की सुविधा के लिए साम्राज्य को राष्ट्र (मण्डल), विषय, नाडु, ग्राम आदि विभाजन किया था।

ग्राम के मुखिया को ग्रामपति अथवा प्रभुगावुंडा कहते थे। ग्राम सेना की मुखिया थे। ग्राम लेक्की इसके सहायक थे। ग्राम सभाएँ थी। प्रांत में नाडगावुंडा नामक अधिकारी था। विषय और राष्ट्र पर भी अधिकारी थे। विषय पति और राष्ट्रपति, जिलाया विषय तथा राष्ट्र के लिए अधिकारी थे।



राष्ट्रकूट साम्राज्य का मानचित्र

भूमिकर, सामग्री पर कर, घर, दुकान पर कर, नदी पार करने की वृत्ति पर लगान आदि राज्य का वित्तीय आधार था। विदेशी व्यापार से ज्यादा आमदनी थी।



नाडोज पंप

राष्ट्रकूटों के काल में कन्नड और संस्कृत दोनों को प्रोत्साहन मिला। संस्कृत में श्रेष्ठ ग्रंथों की रचना हुई। त्रिविक्रम ने 'नलचंपु' नामक संस्कृत साहित्य के प्रथम चंपूकृति रचना की। हलायुध ने 'कविरहस्य' लिखा। जिनसेन, गणितज्ञ महावीराचार्य, व्याकरण शास्त्रज्ञ शकटायन, गुणभद्र, वीरसेन, अमोघवर्ष के दरबार में थे। आदिकवि पंप ने 'आदि पुराण', 'विक्रमार्जुन विजय' को कन्नड में लिखा। कविचक्रवर्ति 'पोन्न' ने 'शांतिपुराण' लिखा। अमोघवर्ष के दरबारी कवि श्री विजय ने 'कविराज मार्ग' रचना की। यह कन्नड की श्रेष्ठकृति है। इनसे कन्नड साहित्य प्राचीनकाल से फूले - फले।

आदिकवि पंप के नाम में हंपि कन्नड विश्वविद्यालय, 'नाडोज' नामक पुरस्कार कर्नाटक के बड़े साधकों को देते आ रहे हैं।

राष्ट्रकूट काल के और श्रेष्ठ गद्य कृति शिवकोट्टाचार्य के वड्डाराधना है। यह जैन धार्मिक कथाओं का सारांश है। यहाँ कन्नड प्रदेश को विशेष प्राधान्यता मिला है। संदर्भ, रचना, पात्रसृष्टि, संवादों में सजीवता है। पंप पूर्व युग का श्रेष्ठ गद्य ग्रंथ है। संपूर्ण कन्नड साहित्य में चिरंतन कृति है।

अग्रहारों, मठों उस काल के प्रमुख शैक्षणिक केंद्र थे। पुराण आदि विषयों में शिक्षा दिया जाता था। संस्कृत, वेद, ज्योतिष्य, तर्कशास्त्र, पुराणों में शिक्षण देते थे। विजायपुरा जिले के 'इंडिफ तहसील' के सालोटगि प्रमुख विद्या केंद्रों में एक था।

राष्ट्रकूट राजा शिव और विष्णु के आराधक थे। जैनमत राजाश्रय पाया था। फिर भी सब मतों को प्रोत्साहन दिया था। कई शिव, विष्णु मंदिरों का निर्माण किया है।



कैलासनाथ मंदिर, एल्लोरा

राष्ट्रकूट के राजा कलापोषक थे। एल्लोरा और एलिफेंटा में निर्मित (उकेरे) मंदिर भारतीय कला को महान देन हैं। कृष्णा प्रथम द्वारा बनाया एल्लोर का कैलासनाथ मंदिर एकशिला की श्रेष्ठ रचना है। 100 फूट ऊँचा, 276 फूट लंबा, तथा 154 फूट चौड़ा है। महान चट्टान को काटकर बनाये है। यहाँ प्रसिद्ध दशावतार गुफालय है। मुंबई के पास एलिफेंटा की गुफाओं की शिल्पकला राष्ट्रकूट काल की शिल्पकला के मुकुट है। अर्धनारीश्वर, महेशमूर्ति (त्रिमुख) की मूर्तियाँ, खूब खुदवायीं। रायचुर जिला के शिरवाल में इनके मंदिर है। पट्टदकल्लु में सुंदर जिन मंदिर है।

कल्याण के चालुक्य (973 - 1189)

कल्याण चालुक्य के काल, भारत के इतिहास में गौरव पूर्ण स्थान पाया है। इन्होंने कला, शिक्षण, साहित्य को विशेष प्रोत्साहन दिया। कन्नड और संस्कृत भाषा पनपने को विशेष प्रोत्साहन देकर मौका प्रबंध किया है। प्रसिद्ध कन्नड के कवि जैसे दुर्गसिंह, रत्न, नागचंद्र आदि को आश्रय दिये है। इसी काल में वचन साहित्य प्रकाश में आये। कल्याण नामक नया नगर बनाकर, राजाधानी बनाने की कीर्ति सामेश्वर प्रथम को मिलता है।

राष्ट्रकूट का सामंत तैलप द्वितीय, राष्ट्रकूट के राजा ने कर्क द्वितीय को पराजित कर मान्यखेट को वशा में लेकर कल्याण चालुक्य के साम्राज्य स्थापना की। करीब 24 साल तक शासन किया। इस वंश के प्रमुख राजाओं में सोमेश्वर प्रथम प्रमुख है। कल्याण नामक नया नगर बनवाकर राजधानी बनायी। यही बीदर जिले का बसवकल्याण है। इसे अनेक युद्ध करने पड़े फिर भी साम्राज्य को आकार में सिकुडते से बचाया। चोल के राजाधिराज को कोण्पम् में हराया।

1076 में पहला सोमेश्वर का पुत्र 6 वी विक्रमादित्य इस वंश के श्रेष्ठ राजा है। वह (असाधारण) अप्रतिम वीर, उत्तम शासक थे। यह 1076 में चालुक्य विक्रम शक आरंभ हुआ। इसने होय्सल के विष्णुवर्धन के दंगे को दबाया। इनका श्रीलंका के राजा विजयबाहु के साथ संपर्क था।

इसके काल के विज्ञानेश्वर मिताक्षर के कर्ता ने कहा है कि पृथ्वी में कल्याण जैसा नगर पहले किसी ने नहीं देखा, न आगे देख सकेगा। विक्रमादित्य के जैसा राजा न किसी ने देखा है, न सुना है।

छठे विक्रमादित्य तथा तीसरे सोमेश्वर के बाद आये राजाओं के काल में, चौथा सोमेश्वर के काल में राज्य क्षीण होकर, कलचूरि के बिज्जल, कल्याण दूर तक आक्रमण करके स्वतंत्र शासन करने लगा। इसी काल में विख्यात हुए जगज्योति बसवेश्वर ने सामाजिक तथा धार्मिक क्रांति की। इस क्रांति के कारण बसव आदि शिवशरणों के मूल्यों को आम लोगों में पहुँचाया। ये वीरशैव पंथ के मूल्यों को जनसाधारण को पहुँचाने के काम में लगे रहे।

बसवेश्वर के बोधप्रद उपदेश, कटु व्याख्या (विडंबन), कडी चेतावनी नामक तीन प्रकार के उपदेश दिये। शिव में अनन्य भक्ति से शरण पाना ही मुक्ति का मार्ग है। इसके अलावा 'कर्तव्य ही कैलास' कहा है। 1162 में अनुभवमण्टप स्थापना की लोगों की बोलचाल की भाषा कन्नड में गद्य और वचनों की रचना से जनमानस पर प्रभाव डाला।



जगज्योति बसवेश्वर

सामाजिक-सांस्कृतिक समावेश में उनके अद्वितीय योगदान दी इसलिए कर्नाटक सरकार ने 13.02.2024 के दिन विश्वगुरु बसवण्णा के भावचित्र का अनावरण करके विश्वगुरु बसवण्णा को कर्नाटक का सांस्कृतिक नेता के रूप में घोषित किया है।

कल्याण चालुक्यों की देन :

कल्याण चालुक्य बादामी चालुक्य की तरह विशिष्ट देन दिया है। राजत्व वंश परंपरा था। राज्य को प्रांत्यों (मण्डल) और छोटे प्रांत्यों में (नाडुगलु) विभाग किया था। इसके अलावा कंपणों (होबली) ग्रामों के प्रशासन के सहायक थे।



सिक्के

‘भूमिकर’ राज्य की मूल आमदनी थी। आमदनी कई स्रोतों में सौदा (व्यापार) कर, वृत्ति कर आदि थे। भूमि कर की व्यवस्था के लिए ‘कडितवेगडि’ नामक अधिकारी को नियुक्त किया था। व्यापार में तथा व्यवहारों में विविध श्रेणी थी। चालुक्य के काल में साहित्य को प्रोत्साहन मिला। जैन विद्वान की मदद से कन्नड साहित्य की अभिवृद्धि हुई। रत्न के ‘गदायुद्ध’ (साहस भीम विजय), दुर्गसिंह के पंचतंत्र, बिल्हण के ‘विक्रमांक चरित’, नयसेन का ‘धर्माभूत’ तथा विज्ञानेश्वर के कानून ग्रंथ मिताक्षर मुख्य ग्रंथ हैं। तृतीय राजा सोमेश्वर तृतीय द्वारा लिखित ‘मानसोल्लास’ संस्कृत विश्वकोश कहलाता है। चालुक्य के काल की विशिष्ट देन वचन साहित्य है। बसवण्ण, अकमहादेवी अल्लमप्रभु, माचय्या आदि गण्य वचनकार थे।

गद्याण, पण, द्रम्म पोन, सुवर्ण नामक सिक्कों को मुद्रित करने के लिए लकुंडि तथा सूडि में टंकणशाला स्थापित की गई।



काशी विश्वेश्वर मंदिर, लकुंडी

साहित्यभिमानी चालुक्य कलाराधक थे। कला के क्षेत्र में उनकी देन बहुत है। लकुंडि के काशी विश्वेश्वर, इटगि के महादेव मंदिर, कुरुवत्ति के मल्लिकार्जुन मंदिर, गदग के त्रिकूटेश्वर आदि प्रसिद्ध मंदिर इनकी देन है। इस वंश के राजाओं द्वारा हजारों मंदिर बनवाए गए हैं। मंदिरों का निर्माण करते कन्नड देश को कला के शिबिर के रूप में परिवर्तन करना इनकी अमूल्य देन है।

इनके काल में संगीत, नृत्य की अभिवृद्धि हुई। इनकी सेवा के लिए वे कलाकारों को नियुक्त करते थे। महाराणी चंद्रलेखा अनेक संगीत विद्वानों को और नर्तकियों को आश्रय दिया जाता था। संगीत, नृत्य, कला, आभूषण (आभरण) आदि विषय 'मानसोल्लास' तथा दूसरा जगदेकमल्लन के संगीत चूडामणि ग्रंथ में व्यक्त हुआ है।

अभ्यास

I. खाली जगह भरिए :

1. राष्ट्रकूट वंश का स्थापक _____ था।
2. राष्ट्रकूटों की अवनति के कारण बने कल्याण चालुक्य के राजा _____ थे।
3. 'कवि रहस्य' कृती के कर्तृ _____ हैं।
4. पोन्न रचित प्रसिद्ध काव्य _____ था।
5. कल्याण चालुक्य का प्रसिद्ध राजा _____ था।
6. 'सामाजिक क्रांति के प्रवर्तक' _____ को कहते हैं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

7. राष्ट्रकूट प्रशासन की व्यवस्था कैसी थी ?
8. राष्ट्रकूट की शैक्षिक व्यवस्था के बारे में लिखिए।
9. एल्लोरा के कैलासनाथ मंदिर के बारे में लिखिए।
10. कल्याण चालुक्यों ने साहित्य को कैसे प्रोत्साहित किया ?

III. गतिविधियाँ

1. राष्ट्रकूट काल के मंदिरों पर भेंट करके उनका एक रीपोर्ट तैयार कीजिए।
2. कला तथा वास्तुशिल्प के लिए कल्याण चालुक्यों के योगदान की जानकारी संग्रह कीजिए।

IV. परियोजनाएँ :

1. छात्रों में चार समूह बनाकर एल्लोरा के कैलासनाथ मंदिर के बारे में चर्चा करके एक रिपोर्ट तैयार कीजिए ।
2. मान्यखेट के चित्रों का संग्रहण कीजिए।
3. बसवेश्वर की जीवनी के बारे में एक निबंध लिखिए।



@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय - 21

चोल और द्वारसमुद्र के होयसल



इस अध्याय के अध्ययन के बाद निम्नलिखित अंशों को समझेंगे :

- चोल साम्राज्य का विस्तरण, विविध क्षेत्रों को प्राप्त योगदानों को समझना ।
- होयसल साम्राज्य की स्थापना और धार्मिक, साहित्य तथा कला, वास्तुशिल्प क्षेत्रों को प्राप्त योगदानों को समझना ।

चोल (850 से 1279)

ये तमिलुनाडू के पल्लव के बाद दक्षिण में 9 वीं सदी से 13 वीं सदी तक तमिलुनाडू, आन्ध्र और कर्नाटक के अनेक प्रदेशों को कब्जे में लेकर, भारतीय संस्कृति को विदेशों में प्रसार करने का कारण बने। भव्य मंदिरों को निर्माण किया। 'बृहदीश्वर' देवालय इनकी देन है। ये तमिल साहित्य को प्रोत्साहन देकर प्रसिद्ध हुए ।



बृहदीश्वर देवालय

चोल पल्लवों के सामंत थे, तदुपरांत स्वतंत्र हुए। संगम साहित्य के अनुसार करिकाल चोल इस वंश का मूलपुरुष था। विजयालय चोल राज्य को पुनश्चेतन करके तंजावूर को राजधानी बनाया।

चोल के प्रमुख राजा प्रथम राजराजा प्रथम है। शूर, श्रेष्ठ योद्धा तथा समर्थ शासक था। चोल राज्य के शिल्पी बनकर उसकी नींव मजबूत कर अपने राज्य का विस्तार किया। चेरों, गंगों और पाण्ड्यों को हराया। नौका सेना से श्रीलंका को वश में ले लिया। मलेशिया, सिंगपुर में आज भी तमिलों का आधिक्य देखा जा सकता है। आप ध्यान दे सकते हैं कि गतिविधियों के राजनैतिक आर्थिक, सांस्कृतिक में प्रभावशाली थे। इसके द्वारा सागरोत्तर वाणिज्य व्यवहार प्रारंभ करके आज भी प्रगति पर हैं। तंजावूर का प्रसिद्ध बृहदीश्वर मंदिर इनके द्वारा निर्मित है। तीसरे राजेन्द्र के काल में चोल राज्य क्षीण हुआ और पाण्ड्य उन्नति करने लगे।

चोलों की देन :

चोलो ने उत्तम तथा समर्थ प्रशासन व्यवस्था को अपने राज्य में लागू किया था। राज्य मंडलम्, कोट्टुंगि, नाडू, कुरम अथवा ग्राम-समुदाय तथा तर-कुरं नाम से विभाजित थे। हर ग्राम में 'ऊर' नामक प्रजा की सभा थी।

चोलों के प्रशासन के प्रमुख लक्षण हैं - ग्राम स्वयमादिपत्य का विकास। ग्राम सभाएँ प्रथम सभा थी। तर-कुरम एक गाँव था। हर एक कुरम् को महासभा नामक ग्राम सभा थी। इसे पेरुगुरि यानी, उनके सदस्यों को 'पेरुमकल' कहा जाता था। सदस्यों को चुनाव के द्वारा चुनते थे। केवल संस्कृत विद्वान तथा अमीर लोग चुनाव के योग्य थे।

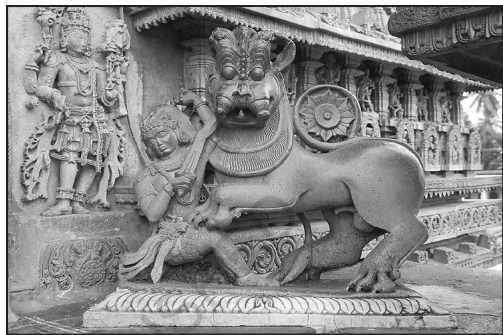
भू - आय के 1/6 भाग को कर के रूप में वसूल किया जाता था। सिंचाई की व्यवस्था बहुत अच्छी थी। तालाबों को बनाकर सिंचाई की व्यवस्था करके कृषि को महत्व दिया। बेंगलूर के पास बेल्लंदूर तालाब भी बनाये। गंगैकोंड चोलपुरम में एक विशाल सरोवर को बनवाये।

चोल शैवमत के थे। इन्होंने अनेक शिवालयों का निर्माण किया। तंजाऊर का बृहदीश्वर मंदिर 500 फुट लंबा 250 फुट चौड़ा, विशाल प्राकार में है। उसका शिखर गोपुर 200 फुट ऊँचा है। राजेन्द्र चोल द्वारा निर्मित चोलेश्वर (गंगैकोंड चोलपुर) चन्नपट्टण के पास अप्रमेय, बेंगलूर के पास बेगूर का चोलेश्वर, बिन्नमंगल का मुक्तेश्वर कर्नाटक में इनके मंदिर थे। ये मंदिर आर्थिक, सांस्कृतिक, केन्द्र के रूप में काम कर रहे थे। इस काल में शिव, गणपति, विष्णु, दुर्गा, कार्तिकेय की मूर्तियाँ प्रसिद्ध हुई।

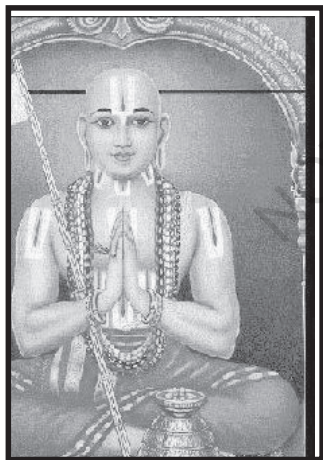
चोल शिक्षा को प्रोत्साहन देने के लिए कई अग्रहारों की स्थापना की। इनमें उत्तर मेंरुर का अग्रहार बहुत प्रसिद्ध है। मंदिर शिक्षा विद्या के केंद्र थे और धार्मिक कार्यों के केंद्र भी थे। यह तमिल साहित्य की सर्वांगीण प्रगति का काल है। कंबन दावारा रचित कंब रामायण, सेक्किलर के पेरिया पुराण, तिरुक्कादेव के जीवक चिंतामणि आदि प्रमुख हैं।

द्वारसमुद्र के होयसल (984 - 1346)

चालुक्यों की अवनति के बाद कर्नाटक में होयसल अपने राज्य की स्थापना की। चिक्कमगलूर जिले के मूडिगेरे तालुक सोसेऊर (आज के अंगंडी) नामक ग्राम के पास इस कुल का मूल पुरुष 'सल' जैन मुनि सुदत्त मुनि के आदेश से बाघ से भिड़ा और उसे मारकर 'होयसल' नाम से इस वंश का स्थापक बना। साहित्य, शिक्षण कला और वास्तुशिल्प, सींचाई आदि को इनकी विशिष्ट देन है।



होयसलों का प्रतीक



श्री रामानुजाचार्य

नृपकामा, एरेयंग, बल्लाल के बाद विष्णुवर्धन होयसल के प्रमुख राजा बने। ये इस कुल के श्रेष्ठ राजा थे। इन्होंने चोल से गंगवाडी को जीतकर 'तलकाडूगोंडा' नामक उपाधि पायी। इस विजय के स्मारण में तलकाडू में कीर्तिनारायाण मंदिर तथा बेलूर के चैन्नकेशव (विजय नारायण) मंदिर का निर्माण किया। राज्य का विस्तार करने के प्रयास में चालुक्य शासक छठवें विक्रमादित्य से हार गये।

रामानुजाचार्य अपना विशिष्टाद्वैत तत्व चोल राज्य में प्रचार कर नहीं पाये, तो बिट्टिदेव(विष्णुवर्धन) के आश्रय में रहकर इन्होंने सारे कर्नाटक में प्रचार किया। तीसरे बल्लाल के काल में यह राज्य नाश हुआ। इसी समय विजयनगर साम्राज्य अधिकार में आया।

होयसलों की देन:

होयसलों ने प्रांतीय शासन व्यवस्था जारी की। शासन युवराज, रानी और राजकुल की देख रेख में था। नाडू और विषय संबंधी शासन अधिकारियों के हाथ में था। गाँवों में गौडा, शानभोग, तलवार आदि सरकार के प्रतिनिधि थे।

होयसल खेतीबाड़ी को प्रोत्साहन देते थे। अतः शांतिसागर, बल्लालराय समुद्र, विष्णुसमुद्र आदि कई तालाबों का निर्माण करवाया। नगरों में शिल्पकार, वैणिक श्रेणियाँ थीं। भूमिकर राज्य की प्रमुख आय थी। समाज की विशिष्टता यह थी कि राजा के लिए “गरुड” नामक विशेष अंगरक्षक दल होते थे। वे राजा की मृत्यु पर स्वयं भी प्राण त्याग करते थे।

होयसल के काल में जैन, बौद्ध, शैव, वैष्णव, वीरशैव, श्री वैष्णव मत प्रचलित थे। घटिका स्थान, ब्रह्मपुरी, अग्रहार, मठ, मंदिर शिक्षा का केंद्र था। मेलुकोटे, सालगामें, अरसीकेरे आदि प्रमुख शिक्षा केंद्र थे यहाँ वेद, वेदशास्त्र, कन्नड, संस्कृत का अध्ययन होता था।

सर्व धर्म समन्वय की भावना को बेलूर देवालय में स्थित निम्नलिखित पद्य समझाता है।

ಯಂತ್ರೈವಾಸ್ಸುಮುಪಾಸತೆ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ
ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ
ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ
ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ ಶಿವಃ

यं शैवास्समुपासते शिव इति ब्रहमेति, वेदातिनो
बौद्धा, बुद्ध इति प्रमाणपट्टनः कर्तेति नैयायिकाः
अर्हश्चेति ह जैनशासनमतिः कमेरति मामांलकाः
सोचं को विदधातु वांछिफल श्री केशवेशस्सदा॥

शैवो से शिव के रूप में, वेदातियो से ब्रह्म क रूप में
बौद्धो से बुद्ध के रूप मे प्रमाण मे योग्य नैयायिको से कर्ता
जैन अरहा के रूप में, मीमांसक कर्म के रूप में करते हैं, जो उपासना करेगा उसे
श्री केशव आपके इच्छाओं का पूर्ति करें।

कन्नड साहित्य विपुल मात्रा में अभिवृद्धि हुई। रुद्रभट्ट ने 'जगन्नाथ विजय', कवि चक्रवर्ती जन्न ने 'यशोधर-चरित', हरिहर ने 'गिरिजा कल्याण' नामक चंपू काव्य, राघवांक ने 'हरिश्चंद्र काव्य' तथा केशिराज ने 'शब्दमणि दर्पण' की रचना की। संस्कृत में रामानुजाचार्य का श्रीभाष्य, पराशर भट्ट का श्री गुण रत्नकोश आदि ग्रंथों की रचना हुई।

होय्सलों की शिल्पकला जगत् प्रसिद्ध है। इन्होंने खाड़िया पत्थर की कोमल शिलाओं से कई मंदिरों की रचना की। खड़िया पत्थर की कोमल इनके मंदिर में नक्षत्राकार गर्भगृह, चबूतर, भित्ति अलंकरण, शिखर तथा स्तंभ इन पाँच लक्षणों को देखा जा सकता है।



चेन्नकेशव मंदिर, बेलूर

बेलूर का चेन्नकेशव मंदिर स्तंभों पर, सुंदर मदनिका की मूर्तियाँ उखेरित है। हलेबीडु के होय्सलेश्वर मंदिर को सेनानायक केतमल्ल ने बनवाया। सोम सेनानायक द्वारा बनवाया गया सोमनाथपुर का केशव मंदिर प्रसिद्ध है। इनके अलावा अरसीकेरे, गोविन्दनहल्ली दोड्डगडवल्ली, भद्रावती -आदि स्थलों में कई मंदिर और विहार भी हैं। ये सब बहुत सूक्ष्म उत्कीर्ण के लिए प्रसिद्ध है।

वास्तुशिल्प में अमिट छाप छोड़े हैं। इनके काल दासोजा चावण, जकण, डंकण आदि प्रसिद्ध शिल्पियों देखा जा सकता है।



शिलाबालिका

अभ्यास:

I. खाली जगह भरिए :

1. चोलों की राजधानी _____ थी ।
2. चोल काल में हर ग्राम के प्रजाप्रतिनिधि सभा को _____ कहा जाता था ।
3. अत्यंत प्रसिद्ध चोल विद्या केंद्र अथवा अग्रहार _____ था ।
4. बेंगलूर के पास बेगूर में चोल द्वारा निर्मित मंदिर _____ ।
5. होयसलों की अंगरक्षक सेना _____ कहलाती थी।
6. राघवांक द्वारा रचित काव्य _____ था ।

II. निम्न लिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए :

7. चोल साम्राज्य के शिल्पी कौन थे?
8. चोल के समय ग्राम स्वयं प्रशासन व्यवस्था कैसी थी?
9. होयसलों ने साहित्य को किस प्रकार प्रोत्साहन दिया ?

III. क्रियाकलाप :

1. होयसल काल के देवालयों के चित्र संग्रह करके उसका एक रीपोर्ट तैयार कीजिए ।
2. बेलूर शिलाबालिका के बारे में अपने अध्यापक से और अधिक जानकारी प्राप्त कीजिए ।

IV. परियोजना :

1. बेलूर, हलेबीडू जाकर वहाँ की विशेषताओं के बारे में एक निबंध लिखिए।
2. होयसल की शिल्पकला के बारे में विस्तार से पढ़िए ।



राजनीतिक शास्त्र

अध्याय 22

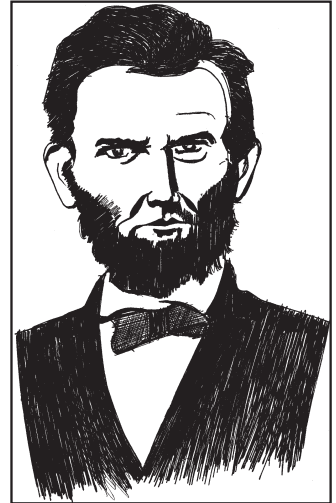
लोकतंत्र



आप इस अध्याय के अध्ययन से निम्नलिखित बिंदुओं को जानेंगे।

- लोकतंत्र का अर्थ जानना।
- लोकतंत्र के प्रकारों की पहचान करना, उनके बीच के अंतर जानना।
- लोकतंत्र के लक्षण, सफलता के कारक और लोकतंत्र के फायदे तथा कमियों की पहचान करेंगे।
- भारत में पारित सार्वभौमिक वयस्क मतदान प्रणाली और निर्वाचन व्यवस्था के बारे में जानना।
- लोकतंत्र में राजनीतिक दलों के कर्तव्य तथा जिम्मेदारी को समझना।
- लोकतंत्र में समूह माध्यमों की जिम्मेदारी का विश्लेषण करना।
- सूचना अधिकार अधिनियम 2005 के बारे में समझना।

लोकतंत्र प्राचीन भारत की सबसे पुरानी सरकारों में से एक हैं। प्राचीन भारत में इसके निशान देखने को मिलते हैं। इस बात के प्रमाण हैं कि वेद काल का सभा और समितियों की स्थापना और सरकार के आदर्श लोकतांत्रिक के लिए दुनिया के विभिन्न हिस्सों में कई क्रांतियाँ और विद्रोह हुए हैं। डेमोक्रेसी शब्द ग्रीक भाषा के शब्द 'डेमोक्रीशिया' (Demokratia) से आया है जिसका अर्थ है 'लोगों का प्रशासन'। लोकतांत्रिक व्यवस्था में चुनाव महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। चुनाव लोगों को अपनी सरकार बनाने के अवसर प्रदान करते हैं, और चुनाव इस सिद्धांत पर संचालित होते हैं कि एक नागरिक के लिए एक मत है। सरकार लोगों से बनी



अब्रहम लिंकन

है और लोग निर्णय लेने वाले प्रभु होते हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन के द्वारा परिभाषित। लोकतंत्र जनता से, जनता के लिए और जनता द्वारा निर्माण हुई सरकार मानी जाती है। लोकतंत्र में नागरिकों की संप्रभुता होती है।

लोकतंत्र की परिभाषाएँ :

1. **लॉर्ड ब्राईज** : राज्य का प्रशासनिक अधिकार कानून के किसी भी एक वर्ग का न होकर लोकतंत्र सरकार का एक रूप है, जो पूरे समुदाय के हाथों में रहता है न वर्गों के हाथ में। वही सरकार का लोकतंत्र है।
2. **हरमन फाइनर** : लोकतंत्र ने केवल एक दर्शन और सरकार का रूप बल्कि जीवन का एक विधान भी है।

लोकतंत्र के प्रकार :

प्रत्यक्ष लोकतंत्र, परोक्ष लोकतंत्र नामक दो प्रकार हैं।

1. **प्रत्यक्ष लोकतंत्र (Direct Democracy)** : इस प्रकार के प्रभुत्व में लोग अपने सरकार को निर्वाचन (चुनाव) के द्वारा चयन करते हैं। उनकी प्रगति के लिए सहायक बने ऐसे कानून और नियमों को बना लेते हैं। प्रत्यक्ष प्रजाप्रभुत्व जैसे सर्कार सामान्यतः आबादी और विस्तीर्ण में नियमित व्यती से युक्त देश में देख सकते हैं। इस प्रकार की व्यवस्था प्राचिन ग्रीक और वर्तमान स्विजरलैंड देशों में हैं। प्रत्यक्ष प्रजाप्रभुत्व प्रजा-अभिप्राय और नेतृत्व के आधार पर परिणामकारी होते हैं। भारत में इस प्रकार की सरकार की रचना उसकी भौगोलिक व्यक्ती और आवादी के आधार पर रूढ़िगत करना असंभव है।

2. **परोक्ष लोकतंत्र (Indirect Democracy)** : इस प्रकार की पद्धति अथवा लोकतंत्र भारत अमेरिका संयुक्त संस्थान जैसे राष्ट्रों के लिए सटीक है। परोक्ष लोकतंत्र की व्यवस्था में लोग अपने प्रतिनिधियों को आवर्तित निर्वाचन के द्वारा निर्वाचित करके शासन सभा में भेजते हैं। ऐसे निर्वाचित सदस्य शासनों को अथवा कानूनों की रचना करके प्रशासन चलाते हैं। इस दृष्टि से इस प्रजाप्रभुत्व को कालानुसार चलनेवाले निर्वाचनों में निर्वाचित जनप्रतिनिधियों के सरकार कह सकते हैं। इस प्रकार निर्वाचित प्रतिनिधि अपने राष्ट्रनायक का चयन करते हैं।

लोकतंत्र के लक्षण :

1. लोकतंत्र लोगों की अनुमति पर निर्भर होता है। यह जनता की सरकार है।
2. यह प्रतिनिधिक सरकार है। लोग अपने प्रतिनिधियों को निर्वाचित करते हैं। ये प्रतिनिधि प्रजोपयोगी कानून बनाते हैं।

3. यह सार्वत्रिक वसस्क चुनाव के तत्व पर आधारित है।
4. यहाँ निर्वाचन (चुनाव) निश्चित कालानुसार निस्पक्ष और मुक्त रूप में चलते हैं।
5. इसमें नागरिक किसी भेद-भाद के बिना स्वतंत्र एवं मुक्त रूप से अपने अधिकारों का उपयोग करते हैं। इसलिए प्रजाप्रभुत्व में व्यक्तिगत अभिवृद्धि को महत्व दिया जाता है।
6. लोकतंत्र सरकार का प्रजाहितेषी सरकार होता है।
7. सरकार लोगों की इच्छा को आपूर्ति न करने पर लोगों को शांती एवं संवैधानात्मक विधानों से सरकार को बदलने का अधिकार रहता है।
8. इस प्रकार के सरकार में लोगो कानून की दृष्टि में सब समान रहते हैं। इस प्रकार के कानून संविधानात्मक नियमों की परिमिति में होता है।
9. राजनीतिक पक्षों का अस्थित्व लोकतंत्र व्यवस्था प्रमुख लक्षण हैं लोकतंत्र अपने पक्ष रचना कर लेने का अवसर प्रदान करता है।
10. लोकतंत्र प्रत्येक व्यक्ति की मान मर्यादा की रक्षा करता है।
11. स्वातंत्र्य और समानता प्रजाप्रभुत्व के मुख्य तत्व है। जाती, धर्म, लिंग, स्तर के आधार पर भेदभाव नहीं कर सकते हैं।
12. लोकतंत्र में परमाधिकार लोगों के हाथों में होता है। सरकार लोगों से ही अधिकार पाता है। इसी उद्देश्य से भारत में चुनाव हर पाँच साल में एक बार चलते हैं।
13. लोकतंत्र कल्याण राज्य है। यहाँ लोगों की सर्वांगीण अभिवृद्धि की ओर विशेष ध्यान देता है।
14. लोकतंत्र व्यवस्था व्यक्ति पूजा के विरुद्ध है।

लोकतंत्र में यश प्राप्त करने के आवश्यक अंश

1. लोकतंत्र की रक्षा करने की मानोभावना लोगों में होना चाहिए।
2. लोग सदा सचेत रहना चाहिए।
3. लोकतंत्र की सफलता सहनशीलता पर निर्भर होता है। लोग लेने और देने के तत्वापालक होना चाहिए।

4. लोकतंत्र की सफलता नायक के दक्षता पर निर्भर होता है। जो नायक कहलाता है वह लोगों की समस्याओं को समझकर उनके सुधार का प्रयत्न करना चाहिए। नेताओं अथवा नायकों में सेवामनोभाव देशप्रेम और त्याग जैसे गुण होना चाहिए।
5. विपक्ष भी प्रशासन के कार्यशैली पर सदा सचेत रहकर (सर्वाधिकार) निरंशकुता को रोकना चाहिए।
6. साक्षर और ज्ञानी मतदाता लोकतंत्र की जीत का कारण बनता है।
7. लोकतंत्र की उन्नति लोगों पर निर्भर रहती है। लोग अनिवार्य रूप से मतदान करना चाहिए। भ्रष्ट तथा अनिष्ट मार्गों को अपनाना नहीं चाहिए। लोग ऐसे नायको का चयन करें जो उनकी समस्याओं का निवारण करता हो।
8. स्वतंत्र, निर्भय, निष्पक्षपात समूह माध्यम प्रभाप्रभुत्व की अभिवृद्धि में सहायक है।
9. उत्तम संगठित, परिणामकारी, उत्तरदायी स्थानीय संस्था लोकतंत्र की सफलता का कारण बनते हैं।

लोकतंत्र के गुणः

विश्व के अनेक राष्ट्र प्रजाप्रभुत्व रूपी सरकार उपयोगी है ऐसा मानते हुये स्वीकार किये हैं। लोकतंत्र के गुण निम्नलिखित हैं:-

1. लोकतंत्र प्रजा की अधिकार स्वतंत्रता न्यायांग के अंतर्गत रक्षा करता है।
2. लोकतंत्र समानता के तत्व पर आधारित है।
3. लोकतंत्र में लोग स्वतः भाग लेकर कानून रचना करने का अवसर प्राप्त करते हैं।
4. लोग अपने प्रतिनिधि का चयन तथा सरकार की रचना कर सकते हैं।
5. सार्वजनिक चर्चा एवं अभिप्राय के बाद ही लोकतंत्र में निश्चित फैसलों को सार्वजनिक राय चर्चा से निश्चय करते हैं।।
6. लोकतंत्र में विपक्षी दलों ने सत्तारूढ़ दल के दुरुपयोग तथा प्रशासन को रोकने के लिए चर्चा, संवाद, आलोचना जैसे माध्यम से विरोध करने का अवसर प्राप्त करते हैं।

7. व्यक्तित्व विकसन में मूलभूत अधिकार का अवसर प्रदान करता है।
8. शांति से चुनाव (निर्वाचन) के द्वारा सरकारों को बदला जा सकता है। इसलिए लोकतंत्र क्रांती को बढ़ावा नहीं देता।
9. राष्ट्रीयता, देशभक्ति, प्रजा गौरव आदि की अभिवृद्धि करके विविधता में एकता को बढ़ाता है।

लोकतंत्र के दोष : लोकतंत्र कई प्रकार के दोषों से युक्त हैं लोकतंत्र के दोष निम्नलिखित हैं :

1. उत्तम शैक्षणिक योग्यता, निर्वहण कुशलता, उत्तम नायकत्व के लक्षण, सामाजिक, आर्थिक, ज्ञान की कमी या न समझ स्वार्थ से भरे कुछ जन प्रतिनिधियों से लोकतंत्र दुर्बल होता है।
2. अधिकार प्राप्त करने राजनीतिक पक्षों के बीच स्पर्धा चलती है। ऐसा होने से पक्षपात और भ्रष्टाचार बढ़ जाता है।
3. राष्ट्र हित से बढ़कर पक्ष का हित ही मुख्य बन जाता है।
4. एक पक्ष से दूसरे पक्ष में पक्षांतर करने की प्रक्रिया से सरकार दुर्बल हो जाता है।
5. लोकतंत्र व्यवस्था में जातिबल, मतीय बल, पैसे के बाहुबल से निर्वाचन में प्रयुक्त होने से सरकार दुर्बल होता है।
6. लोकतंत्र में कानून की रचना के लिए लंबी अवधि की प्रक्रिया है।
7. निर्वाचन चलाने के लिए अधिक पैसे खर्च होते हैं और निर्वाचन प्रक्रिया लंबा समय लेती है।
8. बहुमत प्राप्त किये हुये प्रशासन पक्ष अपनी सर्वाधिकारी मनोभावना से विपक्ष तथा अल्पसंख्यात पक्षों के अभिप्रायों को महत्व नहीं देता हैं।
9. गरीब, अनपढ़ लोग अधिकार युक्त निर्वाचित सदस्यों से शोषित होने की संभावना होती है।
10. अपना पैसा एवं बाहुबल से समाजद्रोही संगठन सरकार पर अपना प्रभाव डालने की संभावना रहती है।

सार्वत्रिक वयस्क मतदान का अधिकार : भारत में निर्वाचन महत्वपूर्ण भूमि का निभाते हैं। भारत में प्रतिनिधि लोकतंत्र की व्यवस्था है। लोक निर्वाचनों में मतदान करने का अधिकार प्राप्त कर भारत में 18 वर्ष से अधिक कोई भी व्यक्ति बिना जाती वर्ण, वर्ग लिंग भेद, भाषा, धर्म बिना शैक्षिक योग्यता के द्वारा मत चला सकता है।

भारत में 1989 से पहले मतदान की कनिष्ठ आयु 21 वर्ष थी। परिष्करण अधिनियम के अनुसार 1989 के बाद 61 वाँ संविधान के अनुसार 1989 के बाद मत चलाने की कनिष्ठ आयु को 21 से वर्ष 18 वर्ष को कम कर दिया गया है।

उत्तम सरकार की रचना बुद्धिमान निर्वाचकों पर निर्भर है। इसलिए निर्वाचक मत चलाते वक्त जाती, वर्ण, पैसा-आदि शिफारिसों की जाल में न फँसकर। अपने नायक के चयन करते वक्त वह जागरूक रहना पड़ता है। मतदान करते वक्त निम्न लिखित बातों का ध्यान रखना पड़ता है। उत्तम गुणों और क्षमतवाले उम्मीदवार का चयन करना चाहिए।

1. उम्मीदवार में समाज सेवा करने की आशा एवं आकांक्षा होनी चाहिए।
2. लोगों के प्रति सहानुभूति रखनेवाला हो और वह ऐसा अभ्यार्थी हो कि लोगों के संपर्क में आसानी से मिल सके।
3. उम्मीदवार साक्षर होना चाहिए प्रामाणिक सेवा-भावना होना चाहिए।
4. उम्मीदवार (प्रत्याशी) भ्रष्टाचार से दूर रहे। निस्वार्थता और आदर्श गुणों को अपनाकर लोगों की सहायता करनेवाला हो।
5. न्यायालय के द्वारा अपराधी घोषित न हो और अपराधिक गतिविधियों में वह सहभागी न हो।
6. उम्मीदवार राष्ट्र द्रोह और समाजिक विद्रोह जैसी प्रक्रिया में भागीदार न हो।

निर्वाचन (चुनाव)

लोकतंत्र की व्यवस्था में निर्वाचन की भूमिका महत्वपूर्ण है। यह नियतकालीन रूप से चलाते हैं। भारत में सार्वत्रिक निर्वाचन हर पाँच साल में एक बार होता है। दूसरे देशों में इसकी कालावधि अलग होती है। हर 5 साल में निर्वाचन जो होते हैं उन्हें सार्वत्रिक

निर्वाचन कहते हैं। 5 साल की अवधि से पूर्व चलनेवाले चुनाव या निर्वाचनों को मध्यकालीन चुनाव कहा जाता है। भारत सरकार निर्वाचन आयोग (ECI-Election Commission of India) को स्थापित किया है। इसका प्रधान कार्यालय दिल्ली में है। इस आयोग में एक प्रधान चुनाव आयुक्त के साथ साथ, दो निर्वाचन आयुक्त, राष्ट्राध्यक्ष के द्वार नियुक्त होकर कार्य निर्वहण कर रहे हैं। निर्वाचन आयुक्तों की संख्या तय करने का अधिकार संसद को है। राज्यस्तर में राज निर्वाचन आयोग रहता है। ये पंचायत राज चनाव को चलाते हैं।

अभ्यास:

I. सार्थक शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. 'डेमाक्रेसी' नामक शब्द _____ और _____ पदों से आया है।
2. भारत में मतदान करने की कनिष्ठ आयु _____ वर्ष है।
3. हर पाँच वर्ष में एक बार निर्वाचन (चुनाव) चलता है तो ऐसे निर्वाचनों _____ कहते हैं।
4. पंचायत राज के निर्वाचन करानेवाली संस्था _____।

II. निम्नलिखित प्रश्नों का संक्षिप्त उत्तर दिजिए:

5. लोकतंत्र के क्या क्या लाभ हैं ?
6. प्रत्यक्ष लोकतंत्र, परोक्ष लोकतंत्र से भिन्न है। कैसे ?
7. सार्वत्रिक मतदान अधिकार (हक्) किसे कहते हैं ?
8. लोकतंत्र की सफलता के आवश्यक कारणों को लिखिए।
9. लोकतंत्र की व्यवस्था में समर्थ विपक्ष की अवश्यकता है क्यों?
10. लोकतंत्र के उत्तम गुण लिखिए।
11. लोकतंत्र में नियमितकालीन निर्वाचनों की आवश्यकता क्यों है?
12. लोकतंत्र की सफलता मतदाताओं पर निर्भर है चर्चा कीजिए?

III. गतिविधियाँ :

1. लोकतंत्र व्यवस्था सरकार का सर्वोत्तम स्वरूप है। इसके बारे में चर्चा कीजिए।
2. उत्तम या नायकत्व प्रजाप्रभुत्व की सफलता की देन है इसपर विचार गोष्ठी कीजिए?

IV. परियोजना :

1. अपने शिक्षकों के मार्गदर्शन में स्विट्जरलैंड में स्थित प्रत्यक्ष प्रजाप्रभुत्व के बारे में योजना तैयार कीजिए?
2. भ्रष्टाचार के खिलाफ लड़ाई में कर्नाटक लोकयुक्त संस्था की भूमिका पर एक प्रतिवेदन तैयार करें ।



@KTBS
NOT TO BE REPUBLISHED

अध्याय-23

स्थानीय स्वयं सरकार



इस अध्याय के अध्ययन के बाद इन निम्नलिखित अंशों की जानकारी प्राप्त करेंगे।

- स्थानीय स्वयं सरकार की रचना की पृष्ठभूमि को जानना ।
- स्थानीय स्वयं सरकार के उद्देश्य एवं कार्यों के बारे में अभ्यास करना।
- विविध स्थानीय संस्था की रचना प्रशासन, जिम्मेदारी (उत्तरदायित्व) और कर्तव्यों को समझना।

भारत में स्थानीय सरकार की परिकल्पना बहुत पुरानी है। इतिहास से यह जानकारी मिलती है कि अनेक राजा महाराजाओं ने स्थानीय स्वयं सरकारों की रचना करके उनकी अभिवृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। स्थानीय स्वयं सरकार समुदाय और सरकार के बीच संबंध स्थापित करने के साथ-साथ स्थानीय लोग अपनी समस्याओं को मुक्त रूप से व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। स्थानीय सरकार लोगों की जरूरतों को उनकी सहायता से हल करता है। स्थानीय सरकार के प्रशासन में लोगों के भाग लेने से प्रजाप्रभुत्व जैसी संस्थाएँ बुनियादी रूप से सुरक्षा प्रदान करती हैं। स्थानीय प्रशासन में जनता प्रशासन मंडली में प्रतिनिधियों का चयन करके अधिकार दिलाने का हक रखती हैं। इसी प्रकार स्वयं प्रशासन करनेवाले मंडलियाँ स्थानीय स्वयं सरकार के नाम से जानी जाती हैं। अधिकार विकेंद्रीकरण में इनकी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। भारत में 1919 में और 1935 में ब्रिटिश सरकार द्वारा जारी की गयी संहिता में इस प्रकार के स्थानीय सरकारों को ज्यादा महत्व मिल है। राष्ट्रपिता गाँधीजी की भारत में रामराज्य अथवा ग्राम स्वराज्य लाने की सपने को पूरा करने के लिए स्वतंत्रता के बाद भारत में अनेक समिति और आयोग बनाकर संहिताओं को जारी किया गया।

ग्राम पंचायतों को सगटित करने और उनको प्रभावपूर्वक प्रबंधन में उपयुक्त अधिकार देने के लिए संविधान ने राज्यों को स्पष्ट निर्देशन दिया है। संविधान के 73 वाँ तथा 74 वाँ परिष्करण 1993 में लागू हुए। यह पंचायत राज व्यवस्था के इतिहास में ही मील का पत्थर कहलाता है।।

कर्नाटक में स्वतंत्र पूर्व में ही अनेक स्थानीय स्वयं सरकार कार्य कर चुके थे। स्वतंत्रता के बाद स्थानीय स्वयं सरकारों की स्थापना और संवर्द्धन के लिए हमारा राज्य समितियों की रचना करके सलाहों का अनुसरण किया है। हमारी राज्य सरकार ने 1983 में कर्नाटक जिला परिषद, तालुक पंचायत समिति, मंडल पंचायत और न्याय पंचायत अधिनियम पेश करके 1985 से इस अधिनियम को लागू किया। यह अधिनियम जिला स्तर पर जिला परिषद, तालुक के स्तर पर तालुक पंचायत समिति और ग्राम स्तर पर मंडल पंचायतों का गठन प्रत्यक्ष चुनाव के माध्यम से करने के लिए सूचित किया गया। 1983 अधिनियम को मज़बूत करने के लिए 73वें संवैधानिक परिष्करण अधिनियम के तहत कर्नाटक में कर्नाटक पंचायत राज अधिनियम को 1993 में लागू किया। इस अधिनियम में ग्राम सभाओं के गठन का प्रावधान किया गया है। कर्नाटक पंचायत राज अधिनियम 1993 का उद्देश्य ग्राम विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए कई कारक जोड़े गए हैं। ग्राम पंचायत, तालुक पंचायत और जिला पंचायत, इन्हें पंचायत राज संस्थाओं के रूप जाना जाता है। संविधान के 73 वाँ परिष्करण अधिनियम ने पंचायत राज संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान करा है।

स्थानीय स्वयं सरकार के उद्देश्य :

- स्थानीय समस्याओं को हल करने में स्थानीय लोगों की सहायता लेना।
- आम जनता को प्रशासनीय ज्ञान प्रदान करना।
- अधिकार विकेंद्रीकरण करके प्रशासन को अधिक परिणामकारी बनाना।
- बुनियादी स्तर में नायकत्व के गुणों की अभिवृद्धि कराना या प्रशिक्षण देना।

स्थानीय स्वयं सरकार के कार्य : स्थानीय स्वयं सरकार जैसे जिला पंचायत, तालुक पंचायत और ग्रामपंचायत के कार्य अलग - अलग होते हैं उनके सामान्य और प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं।

- पंचायत की जायदाद की रक्षा करना।
- स्थानीय मंडलियों के वार्षिक आय-व्यय का बजट तैयार करना।
- स्वास्थ्य और परिवार कल्याण की योजना बनाना।
- मार्ग निर्माण, बिजली, गृह निर्माण और पीने के पानी की व्यवस्था आदि की अभिवृद्धि के लिए योजनानुसार कार्य करना।
- प्राथमिक, प्रौढ, वयस्क और अनौपचारिक शैक्षणिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहन देना।
- अपने प्रदेशों में स्वच्छता और नैर्मल्यीकरण की रक्षा करना।
- सब प्रकार के प्रदूषणों पर रोक लगाकर स्वस्थ सुविधाओं की इंतजाम करना।
- आवश्यक राशन वितरण के लिए सही व्यवस्था करना।

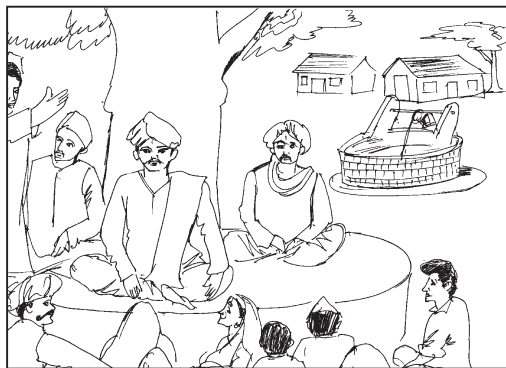
- जनन और मरणों के सही पंजीकरण की जानकारी प्राप्त करना।
- खेतीबाड़ी, पशुपालन, खादी और कर कुशल व्यवसायों को प्रोत्साहित करना।
- मिट्टी, पानी और जंगलों की रक्षा से संबंधित कार्यक्रम बताना।
- किसानों की सहायता करनेवाले खेतीबाड़ी विस्तार से संबंधित कार्य बनाना।
- अनुसूचित जाति अनुसूचित जन जाति (वर्ग), दुर्बल (कमज़ोर) वर्ग, महिला और बच्चों के लिए कल्याणकारी योजनाओं का पर्वतन करना।
- वाचनालय, सड़कों की बिजली और बाज़ारों से संबंधित सुविधाओं का आयोजन करना।
- शुल्क जुर्माना और करों का संग्रह करना।
- सरकार की कल्याण योजनाओं के उपयोग कर्ताओं को मुक्त रूप से चयन करना।

आमदनी का जरिया : स्थानीय स्वयं सरकार के द्वारा विविध योजनाओं की जारी के आर्थिक निधि और पूँजी की आवश्यकता रहती है। इन संस्थों के आमदनी के मूलाधार हैं -

- पानी, सेहत (स्वास्थ्य) शिक्षा, ग्रंथालय और वाचनालय के उपकरणों से प्राप्त कर (संग्रह की जानेवाली धनराशि)
- भवनों का कर, खाली जगहों का कर, व्यावहारिक संस्थाओं का कर, बाज़ार, मनोरंजनों का कर और विज्ञापनों से वसूल किये जाने वाले कर ।
- प्रवासी स्थानों से संग्रह किया जानेवाला कर।
- पंचायत जायदाद से प्राप्त धन सहाय और अनुदान की धनराशि आदि।
- राज्य सरकार द्वारा दी जाने वाली अनुदान धनराशि ।

स्थानीय स्वयं प्रशासन मंडलियों की संरचना: (Composition of Local Self Governing Bodies)

ग्राम सभा : ग्राम सभा स्थानीय सरकार का मूल सभा है, यह लोकतंत्र के अनुरूप रहता है। ग्राम पंचायत के सभी मतदाता इसके सदस्य होते हैं । काम में 18 वर्ष से ज्यादा उम्र के सभी पुरुष और महिलाएँ ग्राम सभा में भाग ले सकती हैं। ग्राम पंचायत के सदस्य भी इसमें भाग ले सकते हैं। ग्राम पंचायत का अध्यक्ष, ग्राम सभा के अध्यक्ष की अध्यक्षता में ग्राम सभा की रचना होती है। ग्राम सभा हर



ग्राम सभा

6 महीने में नियमित रूप से चलती है। सभा में गाँव के लोग अपने गाँव की समस्या और उनके हल के बारे में किये जानेवाले कार्यक्रमों की चर्चा करते हैं। ग्राम वासी सलाह दे सकते हैं। सरकार की विविध योजनाओं के लिए उपभोक्ताओं को पहचानने की जिम्मेदारी भी इसी सभा की होती है।

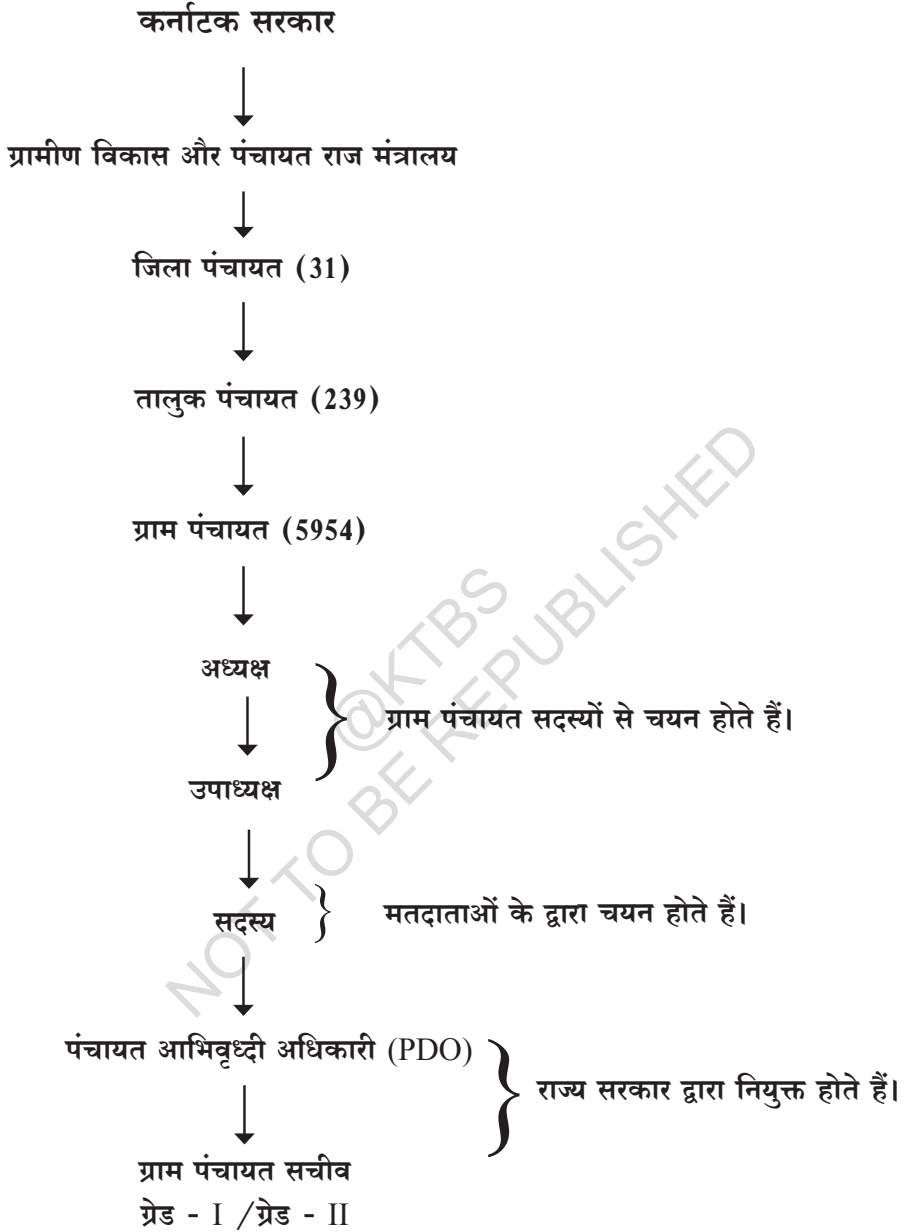
ग्राम पंचायत: पंचायत राज संस्थाओं की नींव के रूप में निचले स्तर पर काम करनेवाली संस्था ही ग्राम पंचायत है। इसकी रचना जनसंख्या के आधार पर होती है। कुल 5000 से 7000 तक की जनसंख्या का, एक गाँव अथवा दो तीन गाँवों को मिलाकर एक ग्राम पंचायत की रचना होती है। उत्तर कन्नड, दक्षिण कन्नड पहाड़ी प्रदेशों में सिर्फ 2000 जनसंख्या के गाँवों में भी ग्रामपंचायत की रचना कर सकते हैं। ऐसे अवसर उन्हें प्रदान किया गया है। ग्राम पंचायत के सदस्य, अपनी सीमा में आनेवाले प्रदेशों के वयस्क मतदाताओं से चुने जाते हैं। हर 400 मतदाताओं का एक प्रतिनिधि होता है। इन ग्राम पंचायतों में भी अनुसूचित जाति/वर्ग पिछड़ी वर्ग और महिलाओं के लिए आरक्षित स्थान होते हैं। ग्राम पंचायत की प्रशासन अवधि प्रथम बैठक से लेकर पूरे पाँच वर्ष तक की अवधि होती है।

कर्नाटक पंचायत अधिनियम 1993 में 2000 से लाए गए दूसरे परिष्करण के अनुसार प्रत्येक पंचायत के सदस्य अपने घर में शौचालय निर्माण करना अनिवार्य है। यदि ऐसा नहीं है तो निर्वाचित होने के बाद एक साल के भीतर उसे शौचालय का निर्माण करवाना पड़ता है।

ग्राम पंचायत की सभा निम्नतम हर दो महीने में एक बार होनी चाहिए। ऐसी सभाओं में 1/3 प्रतिशत सदस्य हाजिर होने पर ही निर्णयों को सम्मति मिलती है। ग्राम पंचायत के सभी सदस्य एकत्रित होकर अध्यक्ष और उपाध्यक्षों को 30 महीने की अवधि के लिए चयन करते हैं। वही अध्यक्ष ग्राम पंचायत की सभाओं के अध्यक्ष होता है। उनकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष सभा कलापों का निर्वहण करना पड़ता है। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष स्थानों के लिए आरक्षित नियम लागू होता है। ग्राम-पंचायत परिणामकारी प्रशासन के लिए स्थायी समितियों की रचना कर सकते हैं।

ग्राम पंचायत के कार्यपालन के लिए हर एक ग्राम पंचायत में पंचायत अभिवृद्धि अधिकारी तथा ग्राम पंचायत सचिव का चयन सरकार ने किया है। आजकल कर्नाटक लोक सेवा आयोग के द्वारा प्रत्येक पंचायत में पंचायत अभिवृद्धि अधिकारी (PDO-Panchayath Development Officer) और ग्राम पंचायत सचिव का चयन करके सरकार ने नियुक्ति की है।

कर्नाटक पंचायत राज का आरेख



जिला पंचायत, तालुक पंचायत और ग्राम पंचायतों की संख्या उपरोक्त आरेखा में कर्नाटक अर्थिक सर्वेक्षण 2023-24 के आकड़ों पर आधारित है।

तालुक पंचायत : पंचायत राज संस्थाओं का मध्य स्तर ही तालुक पंचायत है । 1993 के पंचायत राज अधिनियम तालुकों में तालुक पंचायतों की ये रचना का अवसर प्रदान किया है। तालुक पंचायत में निर्वाचित प्रतिनिधि होते हैं। ये लोग निर्वाचन द्वारा योग्य मतदाताओं से चुने जाते हैं। तालुक पंचायत में सदस्यों की संख्या वहाँ की जनसंख्या पर निर्भर होती है। हर 10000 मतदाताओं का एक सदस्य बनता है। सदस्य स्थानों के बँटवारे में अनुसूचित जाति, पिछड़े वर्ग और महिला आरक्षणों के नियमों का पालन करना पड़ता है। इसके साथ उस तालुक की व्याप्ति में आनेवाले 1/5 अध्यक्ष तालुक पंचायत के सदस्य के रूप में काम करने का अवसर भी पाते हैं। ऐसे सदस्यों को लाटरी द्वारा चयन किया जाता है। इनकी अधिकार अवधि 1 वर्ष होती है। इनका चयन पर्यानुक्रम (Rotation Basis) के अनुसार चलता है। तालुक पंचायत के सदस्यों की अवधि 5 वर्ष होती है। कुछ संदर्भों में इस्तीफा देने या सरकार द्वारा उन्हें पद से निष्कषित करने का अवसर भी प्रदान किया गया है। विधानसभा, विधान परिषद और लोकसभा के सदस्य अपने क्षेत्र की व्याप्ति में आनेवाले तालुक पंचायतों में भाग ले सकते हैं।

तालुक पंचायत की बैठक निम्नतम हर 2 महीने में एक बार होनी चाहिए। विशेष संदर्भों में आपतकालीन बैठक कर सकते हैं। तालुक पंचायत के अध्यक्ष इस प्रकार की सभा में (बैठक) अध्यक्ष स्थान ग्रहण करते हैं। उनकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष कार्य कर सकते हैं। तालुक पंचायत के अध्यक्ष और उपाध्यक्षों को तालुक पंचायत के सदस्य 20 महीने की अवधि के लिए चुनते हैं। परिणामकारी प्रशासन के लिए स्थायी समितियों की रचना कर सकते हैं। प्रशासन कार्य सुगम बनाने के लिए प्रत्येक तालुक पंचायत के लिए एक कार्यनिर्वाहक अधिकारी के रूप में सरकार चयन (नियुक्ति) करती है। तालुक पंचायत स्थानीय संस्था के कार्य के साथ कुछ कार्यों का निर्वहण करना पड़ता है। वे निम्न हैं -

- ग्राम पंचायत की वार्षिक योजनाओं और प्रस्तावनों का समेकन (Consolidate) करके जिला पंचायतों को भेजना ।
- राज्य सरकार और जिला पंचायत की सूचनानुसार सभी जनकल्याण योजनाओं को जारी करना (कार्यगत करना)।

जिला पंचायत: पंचायत राज संस्थाओं में जिला पंचायत उच्च स्तर पर आता है। जिला पंचायत के सदस्य प्रत्यक्ष जिला प्रशासन की देखभाल के लिए प्रत्येक जिले में जिला पंचायत की स्थापना की जाती है। इसके पहले इन्हें जिला मंडली या जिला समिति के नाम

से जाना जाता था। जिला पंचायत के सदस्य प्रत्यक्ष पद्धति द्वारा लोगों से निर्वाचित होते हैं। जनसंख्या के आधार पर सदस्यों की संख्या निर्भर रहती है। कुछ जिला पंचायतों में सदस्यों के में की संख्या में अंतर दिखायी देता है। दक्षिण कुनड जिला में 30000 जनसंख्या के लिए एक प्रतिनिधि रहता है। कोडगू (कूर्ग) में 18000 जनसंख्या पर एक प्रतिनिधि रहता है। और कुछ जिलों में 40000 जनसंख्या के लिए एक प्रतिनिधि निर्वाचित होता है। निर्वाचित जिला कुछ पंचायत के सदस्यों के साथ उस जिले सभी तालुक पंचायत के अध्यक्ष विधानसभा और विधान परिषद के शासक और उस जिले के लोकसभा सदस्य, जिला पंचायत की बैठक में भागलेने और मतदान करने का अधिकार पाते हैं। जिला पंचायत में नियमानुसार अनुसूचित जाति वर्ग, पिछड़े वर्ग और महिला आरक्षण लागू होता है। जिला पंचायत के सदस्यों की अधिकार अथवा प्रशासन अवधि 5 वर्ष होती।

जिला पंचायत में अध्यक्ष और उपाध्यक्ष की अधिकार अवधि 30 महिने होते हैं। निर्वाचित अध्यक्ष को जिला पंचायत अध्यक्ष कहा जाता है। जिला पंचायत दो महीनों में एक बार बैठक चलाता है। इसकी अध्यक्षता जिला पंचायत के अध्यक्ष संभालते हैं। उनकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष संभालते हैं। इन दोनों की अनुपस्थिति में कोई एक सदस्य संभालते हैं। प्राकृतिक विकोप होने पर अध्यक्ष एक लाख रुपये तक खर्च करने का अधिकार रखते हैं। सक्षम प्रशासन की दृष्टि से पाँच स्थाई समिति की रचना की गयी है। जिला अधिकारी के समकक्ष अधिकारी को जिला पंचायत के मुख्य कार्यनिर्वहण अधिकारी (CEO-Chief Executive Officer) की नियुक्ति राज्य सरकार करती है। जिला पंचायत की सभा चर्चा में ये भाग ले सकते हैं। मतदान का अधिकार इन्हें नहीं रहता। जिला पंचायत का कार्य निर्वहण अधिकारी भी इसका संचालन करते हैं।

जिला पंचायत याने जिला सरकार माना जाता है। पंचायत के अभिवृद्धि कार्य और लोकप्रिय कल्याण योजनाओं को जारी करने का अधिकार जिला पंचायत को है। जिला पंचायत द्वारा ही जनप्रिय कार्य अनुमोदित होते हैं

- सरकार की योजना और कार्यक्रमों के सफल अनुष्ठान के लिए जिला, तालुक और ग्राम पंचायतों के बीच में पारस्परिक विश्वास, सहकार मनोभावना का वातावरण निर्माण करना।
- योजना और अभिवृद्धि कार्यों की सफलता के लिए जिलाधीन सभी दफ्तरों (कार्यालयों) के साथ समन्वय स्थापित करना।

- जिला सहकारी संघ, सहकारी बैंक और कई सहकारी संस्थाओं की स्थापना करके, उनको प्रोत्साहित करना।
- राज्य सरकार के निर्देशानुसार कार्य निर्वहण करके कार्य रूप को लाना।

राज्य निर्वाचन आयोग : संविधान का 73वें परिष्करण द्वारा अनुच्छेद 243 k के अनुसार पंचायत राज संस्थाओं का चुनाव करने के लिए और 74 वें संवैधानिक परिष्करण के द्वारा संविधान में हुए 243ZA अनुच्छेद के अनुसार नगर स्थानीय संस्थाओं का निर्वाचन के लिए राज्य स्तर पर प्रत्येक राज्य निर्वाचन आयोग का गठन हुआ। स्थापित राज्य निर्वाचन आयोग राज्य के पंचायत राज संस्थाएं - ग्राम पंचायत, तालुक पंचायत, जिला पंचायत और नगर पालिका, नगर परिषद और महा नगर पालिकाओं का चुनाव चलाना राज्य निर्वाचन आयोग का कार्य होता है ।

नगर स्थानीय संस्था : राज्य में अनेक प्रकार के गाँव और शहर (नगर) होते हैं। नगर के लोग शिक्षा, स्वास्थ्य, संचार व्यवस्था, पीने का पानी, स्वच्छता, मनोरंजन आदि सुविधाओं को प्राप्त करते हैं। ऐसे नगरवासियों की समस्याओं की पूर्ति के लिए स्थानीय नगर संस्था अथवा नगर स्थानीय संस्था की रचना सरकार ने की है। 74वें संवैधानिक परिष्करण अधिनियम के द्वारा नगर के स्थानीय संस्थाओं को संवैधानिक दर्जा प्रदान किया है। कर्नाटक में नगर पंचायत, नगर पालिकाएं, नगर परिषद, महानगर पालिका जैसे प्रमुख स्थानीय संस्थाएं हैं ।

नगर स्थानीय संस्थाओं के तीन प्रकार हैं। वे हैं -

1. नगर निगम (महा नगर पालिका) -प्रमुख नगर
2. नगर पालिका / पुरसभा शहर, नगर
3. लष्कर (दंडु) वास प्रदेश (सुरक्षित सेनाधीन प्रदेश)

जनसंख्या, आमदनी, सामाजिक स्थितिगतियों के आधार पर किसी एक प्रदेश को राजनीति सरकार नगर या शहर के रूप में घोषण करती है। नगर स्थानीय संस्था के अनेक कार्य होते हैं। उनमें से मुख्य निम्नलिखित है -

- आय-व्यय की सूची तैयार करके उसका अनुमोदन लेना।
- नगर अथवा शहर का पूर्ण प्रशासन चलाना।

- उत्तम नागरिक योजना तैयार करके कार्यनिर्वहण करना।
- सड़कों का निर्माण संचार व्यवस्था पानी की व्यवस्था, शिक्षा, बिजली, बाजार, स्वास्थ्य आदि सुविधाएँ देना।
- शहरों में जलनिकास की व्यवस्था, स्वच्छता, कचरा आदि को निकालकर स्वच्छ नगर बनाना।
- भवन निर्माण की अनुमति देकर नगर सभा के जायदाद की रक्षा करना।
- जनन निधनों का पंजीकरण करना।
- खेल के मैदान, सिनेमाघर, उद्यानों का निर्माण करके निर्वहण करना।
- झुग्गी के लोगों को अनेक सुविधाएँ को देना और उनके जीवन स्तर को उत्तम बनाना।
- बालभवन (शिशुकल्याण केंद्र), बालपराधी गृह, भिक्षुकों की कालोनी, अनाथाश्रम आदि सहायता केंद्रों की स्थापना करके निर्वहण करना।
- तरेनताल, (Swimming pool) खेल के मैदान, संग्रहालय, वाहन स्थानक वाचनालय, सार्वजनिक ग्रंथालय, पशुवैद्यालय, सिनेमाघर, बाजार प्रांगण, शवागारों के लिए भवन निर्माण, आदि करके उनका निर्वहण करना।
- पानी के संचयन के लिए योजना तैयार कार्यरूप में लाना।
- सांस्कृतिक कार्यक्रमों को प्रोत्साहित करना।
- नगर के पिछड़े वर्ग के लोग दुर्बल वर्ग के लोगों की जीवन सुधार और प्रगति के लिए योजनाओं का आयोजन करना।
- नगर को स्वच्छ, सुंदर, हरा-भरा रखने के लिए अनेक कार्यक्रमों का निर्वहण करना।

आमदनी के मूलाधार : नगर प्रदेशों की अभिवृद्धि और प्रगति के लिए आमदनी की आवश्यकता होती है। नगर पालिका की आमदनी के मूलाधार हैं- भवनों का कर, खाली जगहों का कर, दुकान, संचारी दुकान (ठेल गाडियों) का कर, पानी का कर इनके साथ नगरपालिका के अधीन भवन वाणिज्य संकीर्ण से प्राप्त किराया, तथा विक्रय के उपकरण, मनोरंजन के कर, आदि राज्य सरकार द्वारा प्राप्त अनुदानों से नगर संस्था जनकल्याण कार्य करती हैं।

नगर स्थानीय संस्थाओं की संरचना

नगर पालिका: नगर प्रदेशों को जनसंख्या के आधार पर नगर शहर, बड़े नगर आदि रूपों में वर्गीकरण किया जाता है। 20 हजार से 50 हजार तक की जनसंख्या के प्रदेशों को शहर के नाम से और 50 हजार से 3 लाख जनसंख्या के प्रदेशों को नगर के नाम से वर्गीकृत किया गया है। शहरों में प्रशासन चलानेवाली संस्था को नगरपालिका और नगर के प्रशासन मंडली को नगर महा पालिका कहते हैं। नगरपालिका और नगर महा पालिका के सदस्य प्रत्यक्ष मतदान द्वारा निर्वाचित होते हैं। जिनको 'कौन्सिलर' (Councillor) कहते हैं। इन सदस्यों की संख्या वहाँ की जनसंख्या पर निर्भर होती है। नगरपालिका में साधारणतः 23 से 27 सदस्य होते हैं तो नगर महा पालिका में सदस्यों की संख्या 31 से 37 तक होती है। इसके साथ राज्य सरकार के द्वारा नगरपालिका और नगर महा पालिकाओं के लिए 5 (पाँच) नाम निर्देशित सदस्यों की नियुक्ति की जाती है। इन नाम निर्देशित सदस्यों को बैठक और चर्चा में भागलेने का अधिकार रहता है। लेकिन मतदान का अधिकार नहीं रहता। स्थानीय विधान सभा, विधान परिषद के शासक लोकसभा के सदस्य बैठकों में भाग लेने और मत चलाने का अधिकार रखते हैं। नगर स्थानीय संस्थाओं में भी नियमानुसार अनुसूचित जन, वर्ग, पिछड़े वर्ग, महिलाओं के आरक्षण का पालन होता है। स्थानीय संस्था के अध्यक्ष और उपाध्यक्ष ही वहाँ के मुखिया होते हैं। पूरे कार्य कलाप अध्यक्ष के नेतृत्व में होते हैं। उनकी अनुपस्थिति में उपाध्यक्ष की देखरेख में बैठक चलायी जाती है। नगर स्थानीय संस्थाओं की अधिकार अवधि 5 वर्ष की होती है। कुछ विशेष संदर्भों में अवधिको आगे बढ़ाने का अधिकार राज्य सरकार को रहता है। सशक्त प्रशासन के निर्वहण के लिए चार स्थायी समितियों की रचना की जाती है। राज्य सरकार के द्वारा नियुक्त मुख्य अधिकारी (चीफ आफिसर) अथवा मुख्य प्रशासनाधिकारी के रूप में सभी गतिविधियों का कार्य करता है।

नगर पालिका व्याप्ति के अंतर्गत आनेवाले लोकसभा, विधानसभा और राज्यसभा तथा विधान परिषद के सदस्य बैठकों में भाग लेने और अपना मत चलाने का अधिकार रखते हैं। इनकी अधिकार अवधि एक वर्ष रहती है।

नगर निगम (City Corporation) नगर महा पालिका :

1976 के कर्नाटक मुनिसिपल कापोरेशन एक्ट (स्थानीय नगर संस्था अधिनियम 1976) के अनुसार नगर निगमों की स्थापना की गयी है। दो लाख (200000) से अधिक जनसंख्या

और एक करोड़ से ज्यादा आमदनी के नगर प्रदेशों में नगर निगम की रचना की गयी है। नगर निगम के सदस्य चुनाव (निर्वाचन) के द्वारा निर्वाचित होकर सदस्य कार्पोरेटर बनते हैं। इन सदस्यों की संख्या जनसंख्या पर आधारित होती है। साधारणतः 30 से 100 तक इनकी संख्या होती है। नगर निगमों के सदस्यों की संख्या सरकार द्वारा तय की जाती है।

कर्नाटक में प्रस्तुत 10 महा नगर पालिकाएं और एक बृहत नगर निगम मिलाकर 11 महानगर पालिका है। बेंगलूरू महानगर पालिका (B.B.M.P.) कहते हैं। इस बृहत् महानगर पालिका में 225 वार्ड हैं ।

नगर छोटे छोटे निर्वाचन विभागों में वर्गीकृत होकर (मोहल्ला) इलाका अथवा वार्ड के नाम से जाने जाते हैं। प्रत्येक मोहल्ले से (वार्ड) एक निर्वाचित सदस्य होता है। ये सदस्य प्रत्यक्ष मतदान द्वारा निर्वाचित होते हैं। नगर निगमों में भी अनुसूचित जाति, वर्ग, पिछड़े वर्ग, महिला आरक्षण के नियम पालन होता है। निर्वाचित सदस्यों के साथ राज्य सरकार द्वारा नगर योजना, शिक्षा, स्वास्थ्य के प्रशासन में अनुभव प्राप्त 5 लोगों की सदस्यों के रूप में नियुक्ति की जाती है। सरकार के द्वारा नियुक्त सदस्यों को मतदान का अधिकार नहीं होता। लेकिन वे बैठकों में हाजिर रहकर कार्यकलापों में भाग ले सकते हैं। निगम की व्याप्ति में आनेवाले शासक, लोकसभा सदस्य को भाग लेने का और मत चलाने का अधिकार रहता है। निगमों की अधिकार अवधि पाँच वर्ष होती है। विशेष संदर्भों में राज्य सरकार द्वारा एक वर्ष की अवधि के लिए विस्तृत भी किया जा सकता है।

महापौर तथा उप-महापौर निगम के नायक कहलाते हैं। इनका चयन निगम के सदस्यों के द्वारा होता है। इनकी अधिकार अवधि एक वर्ष होती है। महापौर निगमों की सभाओं के अध्यक्षता ग्रहण कर बैठक के फैसले को कार्यगत करता है। निगम के कार्य निर्वहण का नियंत्रण भी महापौर करते हैं। परिणामकारी प्रशासन के लिए स्थायी समितियों की रचना की जाती है। महापौर (मेयर) को नगर का प्रथम नागरिक कहते हैं।

कर्नाटक नगर निगम अधिनियम 1976 को 2011 में परिष्करण किया गया है। यह अधिनियम बृहत बेंगलूरू महानगर पालिका को मिलाकर कर्नाटक में 11 महानगर पालिकाओं के लिए अन्वय होता है। इस अधिनियम से समुदाय को महानगर पालिका के क्रियाकलापों में भाग लेने का अवसर मिला है ।

महानगर निगम का कार्यनिर्वहण निगम के आयुक्त करते हैं। सामान्यतः भारतीय प्रशासन सेवाधिकारी (IAS-Indian Administrative Service) अधिकारी इस पद को ग्रहण करता है। इन्हें सरकार द्वारा नियुक्त किया जाता है। निगम के आयुक्त निगम के क्रियाकलापों में भाग लेकर निगम से संबंधित सूचना (Information) देता है। आयुक्त महा पौर के साथ सहकारिता से निगम के निर्णयों को पारित करने में मदद करता है।

अभ्यास

I. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए।

1. वर्तमान कर्नाटक पंचायत-राज अधिनियम को _____ वर्ष में लागू किया गया।
2. ग्राम के सभी मतदाता भाग लेने वाले ग्राम मंडली को _____ कहते हैं।
3. तालुक पंचायतों के लिए ग्राम पंचायत के अध्यक्ष का चयन करते समय _____ कार्रवाई का पालन किया जाता है।
4. एक जिला पंचायत के प्रथागत कार्य की देखरेख के लिए अधिकारी _____ होते हैं।
5. बृहत बैंगलूर सहित कर्नाटक में कुल नगर निगमों की संख्या _____ हैं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के संक्षेप में उत्तर लिखिए।

6. स्थानीय स्वयं सरकारों के उद्देश्य कौन-कौन से हैं?
7. आप जिस क्षेत्र में रहते हैं वह ग्रामीण या नगर प्रदेश के अंतर्गत आता है क्या?
8. ग्राम पंचायत की संरचना के बारे में लिखिए।
9. स्थानीय स्वयं सरकार के राजस्व (आमदनी) के स्रोत कौन-कौन से हैं?
10. स्थानीय संस्थाओं में स्थाई समिती रचना की आवश्यकता के बारे में लिखिए।
11. स्थानीय संस्थाओं में जिन को आरक्षण सुविधा दी गयी है उन सदस्यों की एक तालिका बनाइए।
12. एक नगर और शहर के रूप में वर्गीकृत की जाने वाली जनसंख्या कितनी होनी चाहिए?

13. कर्नाटक में पंचायत-राज के तीन चरण कौन से हैं?

III. गतिविधियाँ :

1. अपने क्षेत्र की समस्याओं को दूर करने के लिए अपने स्थानीय संगठन के अध्यक्ष को आमंत्रित करें और उनके उपचार के लिए की गई योजनाओं पर (उनके साथ) चर्चा कीजिए।
2. यदि आप अपने स्थानीय संगठन के सदस्य हैं, तो आप उन समस्याओं को हल करने के लिए क्या-क्या कदम उठाते हैं।
3. किसी एक ग्राम पंचायत के ग्राम सभा में भाग लेकर उसका एक रीपोर्ट तैयार कीजिए।

IV. परियोजनाएँ:

1. प्राचीन भारत में काम करने वाली स्थानीय संस्थाओं का अध्ययन करके जानकारी इकट्ठा कीजिए।
2. आप जिस क्षेत्र में रहते हैं उसका सर्वेक्षण कीजिए और सरकार की सुविधाओं की एक सूची बनाइए। ये सुविधाएँ वहाँ के लोगों के लिए कैसे फायदेमंद हैं? रिपोर्ट तैयार कीजिए।
3. किसी स्थानीय संगठन के पांच या छः सदस्यों से संपर्क कीजिए और प्रतिनिधित्व वाले क्षेत्रों के विकास के लिए उठाए गए कदमों की जानकारी एकत्रित कर रिपोर्ट तैयार कीजिए।



समाजशास्त्र
अध्याय - 24
दैनिक जीवन में समाजशास्त्र



इस अध्याय के अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित बिंदुओं को जानेंगे।

- दैनिक जीवन के सामाजिक सहचर्य के बारे में जानना।
- सामाजिक जीवन में व्यक्ति की भूमिका, चेतना को समझना।
- सामाजिक व्यावहार में आंगिक संवहन का महत्व को जानना।

दैनिक जीवन

जब महिलाओं की बात आती है तो कुछ लोग बार-बार यह दावा करते हैं कि महिलाएँ बहुत समझदार नहीं होती हैं। इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि पुरुषों की तुलना में महिलाओं की उपेक्षा की जाती है। और उनको शक्तिहीन समझा गया है। लेकिन यह महिलाओं के बारे में केवल एक सामान्यीकृत पूर्वधारणा है। वैज्ञानिक तथ्य नहीं है। ज्ञान प्राप्ति की दृष्टि से देखा जाए तो स्त्री पुरुष में कोई अंतर नहीं है।

उपर्युक्त उदाहरण का अर्थ है कि सामान्य ज्ञान में हमारे दैनिक जीवन में सहायक होने के बाद भी कुछ महत्वपूर्ण सवालों के जवाब देने में विफल रहा है। ऐसे मामलों में समाजशास्त्र हमारी मदद करता है। महिलाओं के बारे में अध्ययन कर के वैज्ञानिक रूप से यह साबित कर सकते हैं कि महिलाएँ भी पुरुषों की तरह ही शक्तिशाली हैं। उपरोक्त से स्पष्ट है कि समाजशास्त्र हमें समाज और हमारे दैनिक जीवन का उचित ज्ञान देता है। या बिना किसी पूर्वाग्रह के किसी भी मुद्दे का अध्ययन करने में मदद करता है।

व्यक्ति, अंगिका भाषा और संवाद

हम जब अपने दैनिक जीवन में कई लोगों के साथ मेल मिलाप करते हैं इस सामाजिक मेल मिलाप को सामाजिक संपर्क कहा जाता है। सामाजिक मेल मिलाप का मतलब है दो से ज्यादा व्यक्ति मिलकर अपने दैनिक जीवन में भाषा, संकेतों द्वारा एक दूसरे के साथ संपर्क करके एक दूसरे के व्यवहारों और सोच को प्रभावित करते हैं।

बिना संवहन के हमारा दैनिक जीवन आगे नहीं बढ़ सकता। हम जो भाषा बोलते हैं वह उस क्षेत्र पर निर्भर करता जिसमें हम रहते हैं। हम उसी के अनुसार अपनी भाषा अपनाते हैं। इसके बिना हमारा जीवन कठिन होगा कभी-कभी हम अपनी मांगों को पूरा करने के लिए विभिन्न प्रकार के माध्यमों का उपयोग करते हैं। भाषा नहीं आती है, तो आप बातचीत नहीं कर सकते ऐसे में हम अपनी भावनाओं को शारीरिक भाषा या मुख भावों के जरिए व्यक्त करते हैं।

व्यक्ति - भूमिका

जब आप अस्पताल गए थे तो आपने डॉक्टरों और नर्सों को देखा होगा। एक बार जब डॉक्टर रोगी का जाँच करके उसकी आवश्यकता के आधार पर आवश्यक दवा और उपचार लिखते हैं। उनके निर्देश के अनुसार नर्स दवा देने वाले मरीज की देखभाल करेगी। इसी तरह शिक्षक जैसे ही कक्षा में आते हैं, आप से प्रश्न पूछते हैं, यह जाँचने की कोशिश करते हैं कि आप ने उन्हें पढ़ा है या नहीं इसी तरह जिन विषयों को आप ठीक से समझ नहीं पाए, उन विषयों का उत्तर अध्यापक द्वारा सुन, सीख, कर सकते हैं। लेकिन आप अस्पताल जाकर और डॉक्टर से स्कूल के पाठ के बारे में सवाल नहीं पूछते।

शिक्षक द्वारा बीमारी के लिए निर्धारित दवा की अपेक्षा नहीं करते हैं। हम ऐसा क्यों करते हैं। हम डॉक्टर से स्वास्थ्य की जाँच, शिक्षकों द्वारा पाठ बोधन, नर्स से खिदमतगारी की उम्मीद करते हैं। यहाँ कोई गड़बड़ी नहीं करते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को उसके द्वारा निर्भाई गई भूमिका को व्यक्ति - भूमिका कह सकते हैं। हम परिवार में भी कई भूमिकाएँ निभाते हैं जैसे भाई-भाई माता-पिता, दादा-दादी। मनुष्य अपनी उम्र और जिंदगी में ऐसी कई भूमिका निभाता है।

अभ्यास

I. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए

1. हम अपनी भावनाओं को _____ के माध्यम से व्यक्त करते हैं।
2. समाजशास्त्र विषय का अध्ययन करने में _____ मदद करता है।
3. हम सामाजिक के मेल मिलाप को _____ कहते हैं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए

4. समाजशास्त्र हमें दैनिक जिंदगी में समाज को समझ में कैसे मदद करता है?
5. भाषा के महत्व का एक उदाहरण लिखिए
6. व्यक्ति-भूमिका क्या है।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार से पाँच वाक्यों में लिखिए।

7. भाषा और समाज के बीच संबंधों का वर्णन कीजिए
8. व्यक्ति-भूमिका को उदाहरण सहित समझाइए।

IV. गतिविधि

1. एक भाई और बहन के रूप में आपने अब तक जो भूमिका निभाई है उस पर एक निबंध लिखिए।



©KTBS
NOT TO BE REPRODUCED

अध्याय - 25

समाज के प्रकार



इस अध्याय के अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित अंशों को जानेंगे:

- समाज के विभिन्न प्रकारों को जानना।
- विभिन्न सामाजिक प्रकारों की विशेषताओं को जानना।

हम हर जगह एक ही तरह का समाज नहीं देखते हैं। लेकिन जीवन, संस्कृति, रीति-रिवाज, व्यवसाय आदि एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र में भिन्न हो सकते हैं। हम आज भी देख सकते हैं कि पशु पालन समुदाय के लोग जीवन निर्वाह के लिए शिकार और कंद मूलों का संग्रह करते हैं। ऐसी ही देहाती इलाकों में जाने पर सैकड़ों भेड़, बैल और अन्य पालतू जानवरों के साथ ही साथ दूर-दराज के खेतों को देखा जा सकता है। कहीं-कहीं घरों का समूह विरल घर हैं, हल ढोने वाला किसान है, कुएँ से पानी ढोती महिलाएं देखने को मिलते हैं।

इसी तरह बेंगलूरु, हुब्ल्ली, मुंबई, दिल्ली जैसे शहरों में हमें सड़कों पर वाहनों की भीड़, लोगों की भीड़भाड़, विस्तारित रिहायशी और झुग्गी-झोपड़ियाँ दिखाई देती हैं। हर जगह हम विविध प्रकार के वेशभूषा वाले लोग, धुँआ उगलती कारखानों, ऊँची इमारतों, विश्वविद्यालयों, बड़े अस्पतालों को देख सकते हैं।

अर्थात् समाज हर जगह एक जैसा नहीं है। यह अलग-अलग दिखता है। इसलिए हम समाज को विभिन्न तरीकों से वर्गीकृत करते हैं, जैसे :-

1. शिकार तथा भोजन संग्रहण समाज
2. पशुपालन समाज
3. कृषि समाज
4. औद्योगिक समाज

1. शिकार तथा भोजन संग्रहण समाज

यह मानव समाज का सबसे पुराना और सरल समाज है। यह समाज बहुत छोटा है, जिसमें कुछ ही लोग शामिल हैं और इसकी जीवनशैली खानाबदोशी है। ये पत्थर की कुल्हाड़ी, भाला, चाकू आदि हथियारों का उपयोग करते हैं। ये लोग अपने अस्तित्व के

लिए जंगली जानवरों का शिकार करते हैं और प्राकृतिक रूप से उपजे हुए फल, बीज, कंद-मूल, सब्जियाँ इकट्ठा करते हैं। ये संपत्ति अर्जन करने की इच्छा नहीं रखते हैं। मिल बाँट कर जीना इनकी रीति है।

इस समाज की विशेषताएँ :

1. इस समाज में बहुत छोटे और बिखरे हुए मानव समूह हैं। सदस्यों की कुल संख्या 40-50 से अधिक नहीं होती।
2. यह समाज खानाबदोश होने के कारण एक क्षेत्र में भोजन खाली होने पर उसे खोजते हुए दूसरे क्षेत्र में जाना इनके लिए अनिवार्य हो जाता है।
3. यहाँ संपत्ति के अर्जन करने की प्रबल इच्छा या संपत्ति की कल्पना दिखाई नहीं देती। इस समाज में उपलब्ध भोजन को दूसरों के साथ बाँट लेते हैं।
4. सारा समाज ही यहाँ बंधुत्व के आधार पर बना हुआ है। व्यक्तिगत जीवन का कोई अस्तित्व नहीं होता। इस समाज में परिवार तथा बंधुत्व ही परस्पर संबंधित संस्थाएँ हैं।
5. यहाँ राजनीतिक संस्थाएँ ना होने के कारण शासक तथा शासित वर्ग ही नहीं है।

2. पशुपालन समाज

अपनी आजीविका के लिए अधिक संख्या में पशुओं का पालन करने वाला समाज ही पशुपालन समाज है। यहाँ के लोग पशुपालन, शिकार और भोजन एकत्र करने के साथ आजीविका के साधन एकत्र करते हैं। अफ्रीका और मध्य एशिया के कुछ हिस्सों में, पशुपालन समाज अभी भी मौजूद हैं।

इस समाज की विशेषताएँ :

1. यह समाज आकार में बड़ा है, जिसमें कभी-कभी हजारों लोग होते हैं। उदाहरण: बख्तियरी समुदाय में आज भी 5000 से 1,50,000 लोग शामिल हैं।
2. यह समाज आमतौर पर घास के मैदानों, पहाड़ियों, रेगिस्तानों तथा कृषि के लिए और असुविधाजनक क्षेत्रों में पाया जाता है। ऐसे क्षेत्र पशुपालन के लिए भी सहायक होते हैं। इनका प्रमुख उद्योग पशुपालन होता है।
3. इस समाज में जिसके पास अधिक पशु होते हैं वह बाकियों से ज्यादा प्रभावशाली होता है। वह अमीर कहलाता है और दूसरों का नेता बन जाता है।

3. कृषि समाज

कृषि पर निर्भरन होकर जीवन यापन करने वाले समाज को कृषि समाज कहते हैं। कृषि के लिए पशु तथा हल का उपयोग करते हैं।

इस समाज की विशेषताएँ :

1. लगभग ईसा. पू. 3000 के आसपास हल के अनुसंधान के साथ 'कृषि क्रांति' शुरू हुई। साथ ही जब पशु शक्ति का उपयोग हल खींचने के लिए किया जाने लगा तो खाद्यान्न उत्पादन में भी वृद्धि हुई।
2. कृषि प्रधान समाज में खेती एक महत्वपूर्ण व्यवसाय होने के कारण लोग एक जगह बस गए। इससे गाँवों का उदय हुआ।
3. जहाँ अधिकांश खाद्य उत्पादन संभव होने के कारण, सभी को घंटों तक काम करने की कोई जरूरत नहीं थी, तो खुद बड़ी संख्या में लोग दूसरे कामों में लगा लिया और विभिन्न कौशलों का गठन किया गया।

4. औद्योगिक समाज

जो विज्ञान और प्रौद्योगिकी का उपयोग करके सामग्री का उत्पादन करते हैं और उन उद्योगों पर निर्भर करता है ऐसे समाज को औद्योगिक समाज कहा जाता है।

इस समाज की विशेषताएँ:

1. अभिनव नवाचारों ने सामाजिक परिवर्तन किया है: भापयंत्र, आंतरिक दहन यंत्र, बिजली, परमाणु ऊर्जा आदि व्यापक स्वरूप का सामाजिक और आर्थिक परिवर्तनों की एक विस्तृत श्रृंखला लेकर आए हैं और ला रहे हैं।
2. रोजगार खोजने के लिए लोग उन शहरों की ओर पलायन करते हैं जहाँ उद्योग स्थापित किए गए हैं। इसलिए, जनसंख्या दर बढ़ जाती है।
3. उद्योग चलाने के लिए आवश्यक है श्रम विभाजन अर्थात् कौशल के आधार पर कार्य को वितरण। औद्योगिक समाज के सभी भागों में श्रम विभाजन दिखाई देता है।
4. एक दृष्टिकोण से मानव समाज के विकास के चरणों का वर्गीकरण देना भी संभव है।

अभ्यास

I. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :

1. शिकारी समाज के सदस्य, शिकार करने के लिए _____ हथियारों का उपयोग करते थे।
2. कृषि प्रधान समाज में जुताई के लिए _____ का उपयोग करते हैं।
3. कौशल कार्य बँटन करने को _____ कहते हैं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

4. पशुपालन समाज किसे कहते हैं?
5. कृषि समाज क्या है?
6. औद्योगिक समाज क्या है?
7. समाज कितने प्रकार के होते हैं?

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर चार - पाँच वाक्यों में लिखिए :

8. शिकार और भोजन एकत्र करने वाले समाज की जीवन शैली का वर्णन कीजिए।
9. पशुपालन समाज की विशेषताओं को लिखिए।
10. कृषि पालन समाज की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।
11. औद्योगिक समाज की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

IV. गतिविधियाँ :

1. शहरी जीवन और ग्रामीण जीवन पर शिक्षकों के साथ चर्चा कर, तुलना कीजिए और उनके अंतर की सूची बनाइए।
2. समूह में आदर्श समाज की अवधारणाओं पर चर्चा कीजिए।



भूगोल-शास्त्र

अध्याय - 26

जलमंडल



इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित अंशों को जानते हैं :

- विभिन्न प्रकार के जल राशियों से परिचित होना।
- समुद्रतल के भू-स्वरूपों को समझना।
- महासागरीय जलधारा उनके प्रकार और सागरों का संरक्षण के बारे में जानना।
- भारत के मानचित्र में सागर, समुद्र, उपसागर, खाड़ी, जलडमरू, मध्य की पहचान करना।

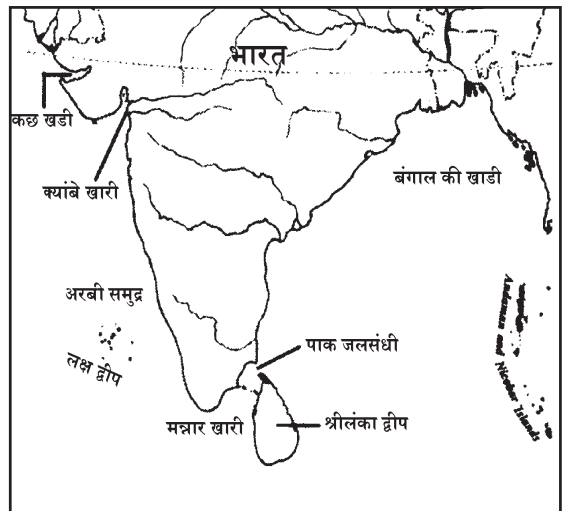
जल : जलचर और समुद्रीय (तटवर्ती) जलवायु का मूल स्रोत

जल राशियों का वितरण

पृथ्वी को सामान्य रूप से 'नील ग्रह' अथवा 'जलवृत् ग्रह' कहा जाता है, क्योंकि पृथ्वी के पूरे क्षेत्रफल का 70.78% अथवा 361 दसलाख कि. मी का प्रदेश पानी से आवृत है। विश्व के प्रमुख जल राशि पेसिफिक (प्रशांत) महासागर, अटलांटिक महासागर, हिंद महासागर और आर्कटिक महासागर है।

महासागर (ocean): महाद्वीपों के बीच पाए जाने वाले विशाल और गहरी जलराशि को महासागर कहते हैं।
उदाहरण: भारत के दक्षिण में स्थित हिन्दू महासागर।

समुद्र (sea) : समुद्र महासागरों का एक भाग होता है, जो भूखण्ड के साथ फैला होता है। समुद्र महासागर से विस्तार में छोटा होता है। उदाहरण: अरब सागर, कैस्पियन सागर, लाल सागर।



उपसागर (Gulf): यह सागर अथवा समुद्र का छोटा सा भाग है जो भूभाग के में काफी दूर तक घुसा हुआ होता है। यह समुद्र से छोटा होता है और विस्तार, आकार और गहराई में एक-दूसरे से काफी अलग होते हैं। उदाहरण : मन्नार की खाड़ी, फारस की खाड़ी, मैक्सिकन खाड़ी।

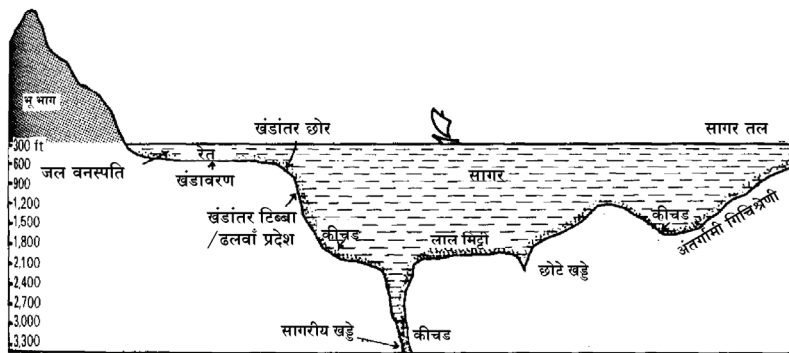
खाड़ी (Bay): भूभाग से अंशतः घिरा हुआ अर्धवृत्ताकार समुद्र का एक भाग खाड़ी कहलाता है। ये आकार, विस्तार और गहराई में एक दूसरे से अलग होते हैं। उदाहरण : बंगाल की खाड़ी, बिस्के की खाड़ी, फंडी की खाड़ी, हडसन खाड़ी।

जलडमरूमध्य (strait): दो विशाल जलराशियों को जोड़ने वाले संकरे जल भाग को जलडमरूमध्य कहते हैं। उदाहरण : पाक जलडमरूमध्य, जिब्राल्टर जलडमरूमध्य, बेरिंग जलडमरूमध्य।

भूसंधि (Isthmus) स्थल डमरूमध्य : इसे 'भूकंठ' भी कहते हैं। यह जलडमरूमध्य के विवरण विरुद्ध है। दो विशाल भूभागों वाली संकीर्ण भूभाग को भूसंधि कहते हैं। भूसंधि सागरों के बीच नहर बनाने के लिए बहुत प्रमुख स्थान है। उदाहरण : एशिया और अफ्रीका भूभागों के बीच स्थित सुयेज़ (स्वेज) नहर, और दक्षिण अमेरिका के बीच स्थित पनामा नहर।

सागरतल का भू स्वरूप (Relief of the ocean floor) :

जिस तरह भूभाग पर विभिन्न प्रकार के भू-स्वरूप पाए जाते हैं, उसी तरह समुद्र / सागर तल में भी विभिन्न प्रकार के भूभाग पाए जाते हैं। सागरों का महत्व जानने के लिए सागर तल के भू-स्वरूप का जानना अत्यावश्यक है। भू-स्वरूप के गुणों विशेषताओं के आधार पर सागर तल को मुख्य से चार भागों में विभाजित किया गया है। वे हैं - 1) भू-खंडीय विस्तार, 2) भू-खण्डीय ढलवाँ क्षेत्र, 3) सागरीय मैदान, 4) सागरीय खाइयाँ



सागरतल की सतही विशेषताएँ / लक्षण

1) **भू-खंडीय विस्तार (Continental shelf) :** समुद्रतट से पास के कम गहरे पानी भाग को भूखण्डीय विस्तार कहते हैं। इसके एक तरफ समुद्रतट और दूसरी तरफ/भूखंडीय ढलवां भाग होता है। भूखंडीय विस्तार की गहराई सामान्य रूप से 100 फैथम (1 फैथम = 6 फीट=1.8 मीटर) है। इस भाग में समुद्रतट से समुद्र भूखंडीय क्षेत्री की गहराई बढ़ती ही जाती है। भूखंडीय विस्तार मछली पकड़ने, जलीय कृषि, नौकायान संचालन, कच्चा तेल के निस्सारण के लिए बहुत प्रमुख है।

2) **भू-खंडीय ढलवां प्रदेश (Continental slope) :** यह समुद्र तल का दूसरा भाग है और काफी ढलान युक्त है। यह भूखंडीय विस्तार और गहरे सागरीय मैदान के बीच का संपर्क है। इस भाग में समुद्री घाटियाँ पाई जाती हैं।

3) **गहरी सागरीय मैदान (Deep sea plain) :** सागर तल में पाए जाने वाले विशाल मैदान को गहरी सागरीय मैदान कहते इसे 'एबीसल मैदान' भी कहते हैं। यह सागर तल के सभी भू-स्वरूपों में सबसे बड़ा है और सबसे ज्यादा फैला हुआ है। इस भाग में समुद्रीय पर्वत (Sea mounts) और चपटे टीले 'गुयोट्स' (guyots) पाए जाते हैं।

4) **सागरीय खाइयाँ (Ocean deeps and trenches) :** सागरीय खाइयों को संकीर्ण सागरीय खड्डा भी कहते हैं। ये सागर तल के सबसे गहरे भाग हैं। फिलीपिन्स द्वीपों के पास स्थित तथा मारियाना ट्रेंच का भाग 'चेलेंजर खाई' फेसिफिक सागर में 10,929 मी. गहरी है और यह समुद्र तल का सबसे गहरा स्थान है। प्रशांत महासागर के टुंगा प्रपात और कोराइल काम्चाटक प्रपात आदि इसके उदाहरण हैं।

सागरीय जल की उष्णता और खारापन (Temperature and salinity of ocean water)

तापमान : समुद्र या सागर के पानी का तापमान विभिन्न अक्षांश-रेखाओं और विभिन्न सागर तल की गहराई के अनुसार बदलता रहता है। भूमध्य रेखा के पास स्थित समुद्र के पानी का तापमान आर्कटिक और अंटार्कटिक वृत्तों के पास स्थित समुद्र के पानी से ज्यादा होता है। बढ़ती गहराई के साथ समुद्र के पानी का तापमान घटता जाता है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि सूरज की किरणें पानी के अंदर केवल 200 मी तक ही जा पाती हैं। इस गहराई में (200 मी.) विभिन्न जलीय जीव -जन्तु अधिक संख्या में पाए जाते हैं।

लवणता : सागर अथवा समुद्र के पानी में घुले हुए लवणांश (नमक) की मात्रा को लवणता कहते हैं। सामान्य रूप से सागर के पानी की लवणता 35/°⁰⁰⁰ होती है (1000

भागों में 35 भाग)। सागर का पानी भाप बन जाने पर पानी में स्थित लवणांश वहीं रह जाता है, जिससे सागर के पानी की लवणता कर्करेखा और मकररेखा में ज्यादा होती है और ध्रुवों और भू-मध्य रेखीय क्षेत्र के पास कम होती है। भूमध्य रेखीय भाग में अधिक वाष्पीकरण और अधिक वर्षा के कारण लवणता साधारण कम होती हैं।

सागर का पानी खारा (नमकीन) क्यों होता है ?

भूभाग से समुद्र की तरफ बहने वाला पानी (नदी) अपने साथ कई प्रकार के लवणांश ले जाता है और उसे समुद्र या सागर में जमा कर देता है। समुद्र-सागर का पानी अधिक तापमान की वजह से निरंतर वाष्पित होता रहता है और लवणांश समुद्र या सागर में ही रह जाते हैं। लम्बे समय से चल रही इस निरंतर प्रक्रिया की वजह से सागर में लवणांश का संग्रहण हो गया है, इसलिए समुद्र का पानी खारा हो गया है।

विश्व में सबसे अधिक लवणता वाली जल राशियाँ

1. टर्की में स्थित वैन सरोवर- $330/^{000}\text{ppt}$
2. मृत समुद्र (जोर्डान और इसरेल के बीच)- $300/^{000}\text{ppt}$
3. सांभर सरोवर (भारत)- $265/^{000}\text{ppt}$
4. लाल समुद्र (एशिया और अफ्रीका)- $240/^{000}\text{ppt}$

(उदाहरण : $330/^{000}\text{ppt}$ - ppt - Parts Per Thousand)

सागरीय जलधारा (ocean currents) :

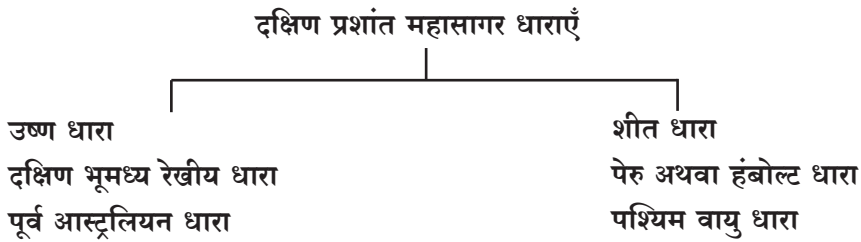
सागर के पानी की धारा तीन प्रकार की होती है। वे हैं : लहरें, धारा और ज्वार-भाटा। सागर का पानी निश्चित दिशा में निरंतर बहने को सागरीय धारा कहते हैं। सागर धारा के दो भेद हैं।

उष्ण धारा : इन धाराओं का उगम भूमध्य सागरीय प्रदेशों से होता है और ये उपध्रुवीय प्रदेशों की तरफ बहती हैं।

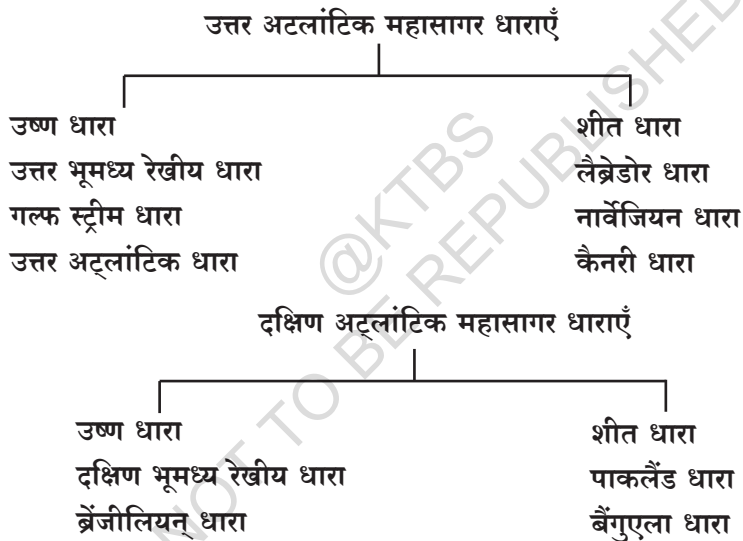
शीत धारा : इन धाराओं का प्रारंभ ध्रुवीय प्रदेशों से होता है और ये भू-मध्य सागरीय प्रदेशों की तरफ बहती हैं।

सागरीय धाराओं पर प्रभाव डालने वाले अंश हैं - पृथ्वी का भ्रमण, तापमान, वायु, लवणता, भूभागों के आकार, इत्यादि ।

प्रशांत महासागर की धाराएँ

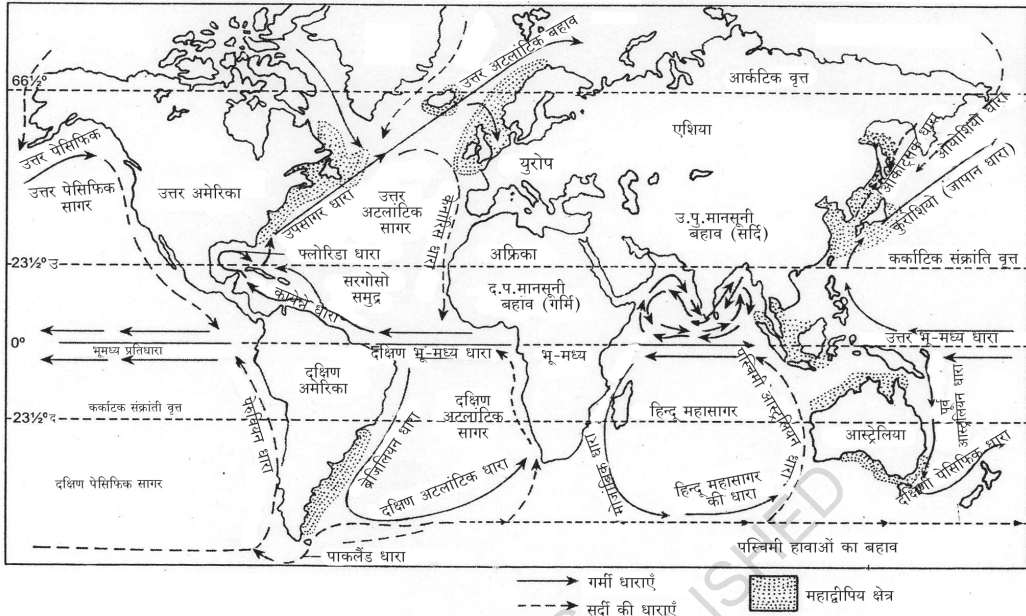


अटलांटिक महासागर की धाराएँ



हिंद महासागर की धाराएँ : उत्तरी हिंद महासागरीय धारा मौसमी रूप से दिशा बदलती है। यह परिवर्तन मानसूनी हवाओं की दिशा के अनुरूप है। गर्मियों में, वे दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर तथा शरद ऋतु में, उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर बहती हैं।

दक्षिण हिंद महासागर की मुख्य धाराएँ हैं : मोज़ाम्बिक, मेडागास्कर और अगुल्हास और पश्चिम आस्ट्रेलिया की धारा शीत धारा है।



विश्व की प्रमुख सागर धाराएँ

आपको ज्ञात रहे:

विश्व के प्रमुख मत्स्य उद्योग केन्द्र :

1. होन्शु, होकैडो मत्स्य उद्योग केन्द्र - क्यूरोशिवो उष्ण धारा और ओयोशिवो शीत धारा का संधिस्थल (जापान)
2. ग्रैन्ड बैंक - गल्फ स्ट्रीम उष्ण धारा और लैब्रडार शीत धारा का संधिस्थल (न्यू फाँडलैंड)
3. डॉंगर बैंक - उत्तर समुद्रीय भाग (यूरोप)

ज्वार भाटा : सागर या समुद्र के पानी के स्तर के नियमित रूप से चढ़ने और उतरने को ज्वार-भाटा कहते हैं। ज्वार-भाटा के मुख्य कारण हैं, चंद्रमा का गुरुत्वाकर्षण बल, सूर्य का गुरुत्वाकर्षण बल, पृथ्वी का भ्रमण और पृथ्वी की केन्द्रापसारी शक्ति ।

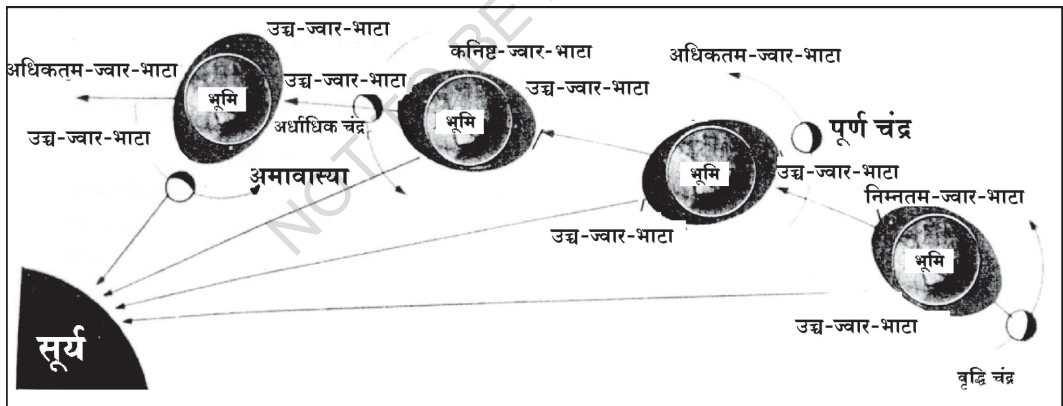
ज्वार-भाटा के प्रकार : ज्वार भाटा दो प्रकार के होते हैं - a) अधिकतम ज्वार-भाटा (High tide): समुद्र अथवा सागर के पानी के स्तर के चढ़ने को अधिकतम (उच्च) ज्वार-भाटा कहते हैं। b) निम्न ज्वार-भाटा (Low tide) : समुद्र अथवा सागर के पानी

के स्तर के उतरने को निम्न ज्वार-भाटा कहते हैं। सागर या समुद्रों में एक उच्च और निम्न ज्वार-भाटा के बीच 6 घंटे 13 मिनट का समय होता है। दो उच्च ज्वार-भाटा के बीच 12 घंटे और 26 मिनट होते हैं। 24 घंटों और 52 मिनट में दो उच्च और दो निम्न ज्वार-भाटा होते हैं।

सूर्य और चंद्रमा के स्थान के आधार पर ज्वार-भाटा को दो प्रकारों में बांटा गया है। वे -

अधिकतम ज्वार भाटा (Spring Tide) : जब पृथ्वी, चंद्रमा और सूर्य तीनों एक सरल रेखा में होते हैं, जैसे कि अमावस्य और पूर्णिमा के दिन तब उच्चतम ज्वार भाटा होता है। सूर्य और चंद्र दोनों की गुरुत्वाकर्षण शक्ति से जैसे उच्चतम ज्वार-भाटा उच्च होता है वैसे ही निम्न ज्वार भाटा भी उच्च होता है।

न्यूनतम ज्वार-भाटा (Neap Tide) : न्यूनतम ज्वार-भाटा अमावस्या और पूर्णिमा के बीच के दिनों में होते हैं। न्यूनतम ज्वार-भाटा के समय सूर्य और पृथ्वी एक रेखा में होते हैं और चंद्रमा पृथ्वी से समकोणीय (90) दिशा में होता है। ऐसे ज्वार-भाटा में, उच्च-ज्वार-भाटा अधिक ऊँचे नहीं होते और निम्न ज्वार-भाटा अधिक नीचे नहीं होते।



अधिकतम और न्यूनतम ज्वार भाटा

ज्वार भाटा के उपयोग : ज्वार-भाटा मनुष्य के लिए प्रत्यक्ष और परोक्ष दोनों रूप से उपयोगी हैं। जैसे :

1. समुद्रों में जहाजों को चलाने में सहायता करते हैं।
2. बंदरगाहों के निर्माण में सहकारी होते हैं।

3. ज्वार-भाटा, नियमित रूप से बंदरगाहों की सफाई करता है।
4. नमक के उत्पादन में सहायक है।
5. मत्स्यपालन में सहायक होता है।
6. ज्वार-भाटा से बिजली उत्पादन भी कर सकते हैं।

सागरों का संरक्षण

आजकल सागरों का संरक्षण करना बहुत आवश्यक है। सागर विभिन्न प्रकार से मनुष्य को सहायता करता है और ये असंख्य जलीय जीवों को आश्रय भी प्रदान करते हैं। जिस तरह सागरों को प्रदूषित किया जा रहा है। भविष्य में उनका स्वच्छ रह पाना असंभव है। इसलिए सागरों का संरक्षण करना बहुत आवश्यक है। सागरों के संरक्षण करने के कुछ प्रमुख निम्नलिखित तरीके हैं।

1. सागर में जहाजों के द्वारा कच्चे तेल का निर्वासन के बदले में, पाइप लाइनों के द्वारा करना चाहिए।
2. अणु शक्ति केन्द्रों से निकलने वाले त्याज्य पदार्थों सागर या समुद्र में नहीं डालना चाहिए।
3. समुद्र तटीय भागों में स्थित कच्चे तेल रासायनिक कारखानों के अवशेष में समुद्र /सागर में ना डालने की सूचना देनी चाहिए ।
4. बंदरगाहों के पास किसी भी प्रकार कड़े-कचरे को डालने पर रोक लगाना चाहिए।
5. समुद्र तट के पास अयस्क के संग्रहण और खनन पर नियंत्रण लगाना चाहिए।
6. समुद्र तटों को दुरुपयोग और विनाशकारी कार्यों से संरक्षित करना चाहिए।

अभ्यास

I. सही शब्दों से खाली स्थान भरिए :

1. भूखंडीय विस्तार की गहराई सामान्य रूप से _____ होती है।
2. एक फैंथम _____ फीट के बराबर है।
3. प्रपंच का सबसे गहरा स्थान _____ है।
4. सागर के पानी की लवणता सामान्यतया _____ होती है।
5. अमावास्या या पूर्णिमा के दिन _____ ज्वार-भाटा होते हैं।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए :

6. जलमंडल क्या है ?
7. सागर के तल के भू-स्वरूप के चार प्रमुख भागों के नाम लिखिए ।
8. सागरीय धाराएँ और ज्वारभाटों के बीच के अंतर लिखिए ।
9. उच्चतम ज्वारभाटा और न्यूनतम ज्वारभाटा में अंतर लिखिए ।
10. समुद्रों का संरक्षण हम कैसे कर सकते हैं ?

III. जोड़कर लिखिए :

- | | |
|-------------------|---------------------------------------|
| i. फैंथम | अ) गहरे समुद्र का मैदान |
| ii. ओयाशियो | आ) अमेरिका का पूर्वी तट |
| iii. गल्फ स्ट्रीम | इ) शीत धारा |
| iv. सागरीय पर्वत | ई) हिंद महासागर धारा |
| v. अगुल्हास धारा | उ) समुद्र की गहराई मापने का एक पैमाना |

IV. निम्नलिखित शब्दों की परिभाषा लिखिए :

11. भूखंडीय विस्तार
12. लवणता
13. उष्ण और शीत धारा
14. उच्च और निम्न ज्वार - भाटा
15. बैंगुला धारा
16. ज्वार - भाटा

V. कुछ प्रमुख शब्द ध्यान रखने की योग्य बातें:

1. खाड़ी
2. लवणता
3. उष्ण धारा
4. क्यूरोशियो धारा
5. उच्चतम और नून्यतम ज्वारभाटा
6. ज्वारभाटा

VI. क्रियाकलाप :

1. अटलांटिक महासागर की उष्ण धाराओं और शीत धाराओं की सूची बनाइए।



अध्याय - 27

जीव मंडल



इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप निम्नलिखित अंशों को जानते हैं:

- जीवमंडल का अर्थ और महत्व जानना।
- पर्यावरण, इसका अर्थ, विभिन्न प्रकार के प्रदूषण उनके परिणाम और उनसे बचने के उपायों के बारे में समझना।

क्या आप जानते हैं कि हमारी पृथ्वी ने हमें क्या-क्या दिये हैं? पर हमने बदले में पृथ्वी को क्या दिया है?

अर्थ: हमारी पृथ्वी एकमात्र ऐसा ग्रह है जहाँ विभिन्न प्रकार के जीव पाए जाते हैं। जीवमंडल पृथ्वी का वह भाग है जहाँ जीवन का अस्तित्व है। यह पृथ्वी का चौथा मंडल (भाग) है जिसमें पृथ्वी पर रहने वाले सारे जीवित प्राणी आते हैं।

जैविक पारिस्थितिकी विज्ञान (Ecology) : विभिन्न प्रकार के जीवों का उनके भौतिक रासायनिक और जैविक पर्यावरण के साथ परस्पर संबंध के अध्ययन को पारिस्थितिकी विज्ञान कहते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण में जैवमंडल में रहने वाले विभिन्न प्रकार के जीवों के बीच एक अच्छा संतुलन होता है। इसे जैविक पारिस्थितिकी संतुलन कहते हैं।

प्राणी वर्ग और वनस्पति वर्ग तथा उनके आस-पास के सजीव और निर्जीव पर्यावरण के बीच परस्पर सम्बन्ध को जीव 'पारिस्थितिकी' व्यवस्था कहते हैं। यह सभी प्रकार के जीवियों के अपने आस-पास के सजीव और निर्जीव घटकों के साथ एकीकरण का विवरण देता है।

जैवमंडल में पारितंत्र अथवा पारिस्थितिकी संतुलन के बिना पौधों, प्राणियों और सभी प्रकार के सूक्ष्म जीवियों का अकेले या समूह में अस्तित्व की कल्पना करना असंभव है। प्रत्येक प्राणी अपने भौतिक पर्यावरण के साथ मिलजुल कर रहते हैं।

परिसर (Environment) : सभी प्रकार के जीवियों, जैविक वस्तुओं और उनके आस-पास के वातावरण को परिसर कहते हैं। यह सभी प्रकार के जीवों के अस्तित्व और अभिवृद्धि के लिए अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण करता है। परिसर दो प्रकार का होता है।

- 1) प्राकृतिक अथवा भौगोलिक परिसर
- 2) सांस्कृतिक अथवा मानव निर्मित परिसर

पर्यावरण प्रदूषण: हमारे आस पास के वातावरण को मानव क्रियाओं द्वारा प्रतिकूल रूप से बदलना पर्यावरण प्रदूषण कहलाता है। मनुष्य और प्राणियाँ सभी पर इसका हानिकारक प्रभाव पड़ता है। साथ ही पारस्थितिकी व्यवस्था के घटकों को परोक्ष रूप से बदल देता है।

पर्यावरण प्रदूषण आज जैवमंडल के सामने स्थित कई गंभीर समस्याओं में से एक है और इसका कारण है-अधिक जनसंख्या (विस्फोट) अधिक कारखानों का स्थापित करना, नगरीकरण, प्राकृतिक संसाधनों का दुरुपयोग, वाहनों का उपयोग आवश्यकता से अधिक करना, इत्यादि। इसका प्रभाव सभी प्राणियों, पौधों और मानव जीवन पर पड़ता है।

प्रदूषण फैलाने वाली सभी वस्तुओं को प्रदूषक कहते हैं। प्रदूषक दो तरह के होते हैं- प्राकृतिक और मानव निर्मित। मानव निर्मित प्रदूषक प्राकृतिक प्रदूषकों से कहीं ज्यादा हानिकारक होता है। धुआँ, विषैली वायु, धूल, कचरा, गंदी नालियाँ इत्यादि गोचर (दृश्य) प्रदूषक हैं। खाद्य पदार्थों, पानी और मिट्टी में मिले हुए रासायनिक पदार्थ और हानिकारक बैक्टीरियाँ अगोचर (अदृश्य) प्रदूषक हैं।

प्रदूषण के प्रकार :

पर्यावरण प्रदूषण विभिन्न प्रकार का होता है। प्रदूषकों और प्रदूषण के माध्यम के आधार पर प्रदूषण को विभिन्न प्रकारों में विभाजित किया गया है, वे हैं-

1. **वायु प्रदूषण :** वायु प्रदूषण को विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) इस तरह पारिभाषित किया है। वायु प्रदूषण मान स्वास्थ्य वनस्पति और संपत्ति को करनेवाली विभिन्न मानवीय गतिविधियों द्वारा हवा में केंद्रित पदार्थों को संचय है। वायु प्रदूषकों के प्रमुख स्रोत हैं।

- a) **प्राकृतिक स्रोत:** ज्वालामुखी, जंगलों में लगने वाली आग, बाह्याकाश की धूल - इत्यादि।
- b) **मानव निर्मित स्रोत :** कारखानों, घरों, वाहनों, खनन, अणु शक्ति केंद्रों, अणु विस्फोट - इत्यादि से निकलने वाला धुआँ।

उनमें मुख्य प्रदूषक हैं - कार्बन डाई ऑक्साइड, कार्बन मोनो ऑक्साइड, सल्फर डाई ऑक्साई, नाइट्रोजन आक्साइड क्लोरो-फ्लोरो कार्बनस् (CFC), हाइड्रोकार्बनस् इत्यादि। इसके मुख्य परिणाम हैं मौसम में बदलाव, ओज़ोन परत का क्षीण होना, ग्रीन हाउस प्रभाव भूमंडल के तापमान में वृद्धि, मनुष्य के स्वास्थ्य पर बुरा परिणाम, साँस लेने में तकलीफ, पौधों और प्राणियों के जीवन पर पड़नेवाला बुरा परिणाम-आदि हैं।

वायु प्रदूषण से बचने के उपाय - प्रदूषक गैसों पर नियंत्रण करना, वाहनों से निकलने वाले धुएँ पर नियंत्रण करना, ज्यादा पेड़-पौधे उगाना (लगाना), असंप्रदायिक शक्ति संसाधनों का उपयोग करना, लोगों को शिक्षित और साक्षर बनाना।

2. **जल प्रदूषण:** जल प्रदूषण का मतलब है पानी के भौतिक, रासायनिक और जैविक लक्षणों में ऐसे बदलाव आना जिसका मानवीय और जलीय जीवन पर दुष्परिणाम हो।

जल प्रदूषण के प्रमुख मूल :

प्राकृतिक कारण: भू - क्षरण, भू - स्खलन, ज्वालामुखी विस्फोट, पौधों और प्राणियों के मृत देहों का अपघटन (सड़ना)। **मानवनिर्मित कारण :** कारखानों से नदियों में छोड़े जाने वाले हानिकारक अवशेष, नगरों से, घरों से, कृषि-कार्यों से निकलने वाला कूड़ा-कचरा, शक्ति केंद्रों से निकलने वाले अवशेष, तेल रिसाव, अणु शक्ति केंद्रों से निकलने वाले त्याज्य पदार्थ तेल कुँओं को सागर क्षेत्रों में खोदना उष्ण - ऊर्जा केंद्रों का त्याज्य पदार्थ इत्यादि। जल प्रदूषण विभिन्न प्रकार का होता है। समुद्र और महासागरों का प्रदूषण, अंतर्जल प्रदूषण, नदियों के पानी का प्रदूषण, झील अथवा सरोवर के पानी का प्रदूषण को इस तरह पहचान सकते हैं।

जल प्रदूषण के मुख्य परिणाम है : दूषित जल से हैजा (cholera) टाईफाइड, तपेदिक, पिलिया (jaundice), पेचिस, दस्त जैसी संक्रमक बीमारियाँ फैलती हैं। प्रदूषित जल जलीय जीवन की मृत्यु का कारण बनता है। यदि सिंचाई के लिए प्रदूषित पानी का उपयोग किया जाए तो कृषि फसलों को नुकसान पहुँचा सकता है।

जल प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपाय : कारखानों से निकलने वाले विषैले अवशेषों को पानी में छोड़ने से पहले संसाधित करना, पीने के पानी के स्रोत को स्वच्छ रखना, गंदी नालियों के पानी को संसाधित करना, नदी-नालों में कूड़ा-कचरा डालने पर रोक लगाना।

3. **मिट्टी का प्रदूषण (भू-प्रदूषण):** प्राकृतिक अथवा मानव - निर्मित अथवा दोनों कारणों से मिट्टी के गुण-लक्षणों और ऊर्वरकता के कम हो जाने को मिट्टी का प्रदूषण कहते हैं। मिट्टी के अपरदन की तीव्रता से वनस्पति पोषक आहार की कमी, भू-क्षरण को बढ़ जाना, भूमि की ऊर्वरता कम हो जाना भूमि में उपस्थित सूक्ष्म जीव और पोषक तत्वों का कम हो जाना इत्यादि परिणाम होते हैं। इसके कारण कारखानों से, खनन से, घरों से, नगरों से, कृषि-कार्यों से, अणु शक्ति केंद्रों, इत्यादि से निकलने वाला कूड़ा-कचरा।

इसके परिणाम हैं : भूमि का उपजाऊपन कम हो जाता है, भूमि का वह भाग बंजर हो जाता है। मिट्टी में पाए जाने वाले सूक्ष्म जीव कम हो जाते हैं।

भू-प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपाय : रासायनिक खादों और कीटनाशकों का विवेकपूर्ण और कम उपयोग, कारखानों और नगरों से निकलने वाले त्याज्य पदार्थों को संसाधित करके निष्कासित करना। फसलों को सही तरीके से उगाना और भूमि का सही उपयोग करना, मिट्टी के सही उपयोग और संरक्षण के बारे में लोगों को जागृत करने के लिए कार्य क्रमों का आयोजन करना। भू-क्षरण पर नियंत्रण करने के लिए अधिक से अधिक पेड़ों को लगाना।

4. **ध्वनि प्रदूषण:** स्वास्थ्य पर दुष्परिणाम डालने वाले अनावश्यक ध्वनि का वायुमंडल में मिल जाना ध्वनि प्रदूषण है।

ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख कारण हैं :

प्राकृतिक कारण: बादलों का गरजना, बिजली का कड़कना, तूफान (चक्रवात), ज़ोर की बारिश, झरनों का शब्द, समुद्र की लहरें, ओला-वृष्टि, इत्यादि। **मानव निर्मित कारण** हैं - उद्योगों की ध्वनि, वाहनों की ध्वनि, विमानों की ध्वनि, खानों की सुहाई, नगर प्रदेशों की ध्वनि - आदि।

ध्वनि प्रदूषण के प्रमुख परिणाम हैं : तात्कालिक अथवा शाश्वत श्रवण समस्या, सिर दर्द, हृदय-सम्बन्धी रोग, मानसिक समस्या, थकान, अधीरता, व्यावहारिक बदलाव, नींद से संबंधित समस्याएँ, एकाग्रता की कमी - इत्यादि।

ध्वनि प्रदूषण पर नियंत्रण करने के उपाय : कारखानों को आवास स्थानों से दूर स्थापित करना। कारखानों में शब्द नीरोधक दीवारों का निर्माण करना सैरन, गाड़ियों के हार्न और लौऊड-स्पीकरों के अनावश्यक उपयोग पर रोक लगाना, नागरों (आवास स्थानों) से दूर हवाई-अड्डों का निर्माण करना, कारखानों में काम करने वाले व्यक्तियों को शब्द नियंत्रक उपकरण उपलब्ध करना, अधिक ध्वनि निकालने वाले वाहनों की जाँच करना।

भूमंडलीय तापमान में वृद्धि (विश्वव्यापी तापमान वृद्धि) (Global Warming): पृथ्वी का तापमान पिछले कई वर्षों से धीरे-धीरे बढ़ता जा रहा है। पिछले कुछ सालों में से वायुमंडल का तापमान भी बढ़ रहा है। इसे भूमंडलीय तापमान वृद्धि कहते हैं। वायुमंडल का ताप ग्रीनहाउस प्रभाव के कारण बढ़ता है। इससे विश्व का तापमान बढ़ता जा रहा है, जलवायु के मंडल बदल रहे हैं। हिम नदियाँ पिघल रही हैं, समुद्र में पानी का स्तर बढ़ता जा रहा है, उदा : हिमालय पर्वतों, और अंटार्कटिक प्रदेशों की बर्फ भी पिघल रही है।

ग्रीन हाउस प्रभाव (Green House Effect): भूमि सूर्य से विकिरण के रूप में ऊर्जा प्राप्त करती है। इसी प्रक्रिया से भूमि पर सूर्य से प्राप्त होने वाली ऊर्जा और बाहर छोड़ी जाने वाली ऊर्जा के बीच 6 संतुलन बना रहता है। जैविक इंधनों के अधिक उपयोग से वातावरण में ग्रीनहाउस गैसों निरंतर बढ़ती जा रही हैं। कार्बन डाईऑक्साईड और बाकी ग्रीन हाउस गैसों भूमि से निकलने वाली विकिरणों (ऊर्जा)

को सोख लेती हैं। इसलिए वातावरण में ग्रीन हाउस गैसों के बढ़ने की वजह से तापमान भी बढ़ रहा है। इसे ग्रीन हाउस प्रभाव कहते हैं।

ओज़ोन परत का रिक्तीकरण (क्षीण होना) : (Ozone Depletion) वायुमंडल के समशीतोष्ण ओज़ोन की एक परत होती है जो सूर्य से आने वाली हानिकारक अल्ट्रा-वाइलेट विकिरणों (UV) को सोख लेती है, और भूमि पर रहने वाले सभी प्रकार के जीवों की रक्षा करती है। पिछले कुछ वर्षों में मानव द्वारा - वातानुकूलन यंत्र, रेफ्रिजरेटर, (AC) सुगंधित द्रव्य, इत्यादि के उपयोग से निकलने वाले कृत्रिम रसायन विशेषकर क्लोरो-फ्लोरो कार्बन (CFC) वायुमंडल में फैलकर ओज़ोन परत को नष्ट कर रहे हैं। विश्व में सबसे अधिक ओज़ोन रिक्तीकरण अंटार्कटिक प्रदेश में पाया गया है। ओज़ोन रिक्तीकरण की वजह से ओज़ोन परत में छेद हो गया है। आज की और भविष्य की पीढ़ी के सुरक्षित जीवन के लिए ओज़ोन रिक्तीकरण को रोकना बहुत जरूरी है।

अम्ल वर्षा : (Acid Rain) बारिश के पानी में जब सल्फ्यूरिक अम्ल और कार्बन मोनॉक्साइड जैसे अम्ल बढ़ जाते हैं, उसे 'अम्ल वर्षा' कहते हैं। ऐसा तब होता है जब बारिश की बूंदें प्रदूषित वातावरण से गुजरती हैं। विषैली अम्लों वाली यह वर्षा जलीय जीवों को मार देती है। अम्ल वृष्टि जंगलों, फसलों, ऐतिहासिक इमारतों, स्मारकों, इत्यादि को हानि पहुँचाती है।

अम्ल वर्षा का 'सरोवर नाशक' (लेक किल्लर) भी कहते हैं। पोलैंड, चेक गणराज्य और दक्षिण-पूर्वी जर्मनी विश्व में सबसे अधिक अम्ल-वर्षा के परिणामों से प्रभावित प्रदेश हैं, इसलिए इन्हें 'काल त्रिभुज' कहते हैं।

जैव-विविधता : एक भू-भाग में पाए जाने वाले विविध प्रकार के वनस्पतियों और जीव-जन्तुओं को वहाँ की 'जैव-विविधता' कहते हैं। किसी प्रदेश में पाए जाने वाले विभिन्न प्रकार की वनस्पति और जीव-जन्तु, वहाँ की जैव-विविधता की सम्पन्नता को दर्शाते हैं। जैव-विविधता को बनाए रखना बहुत आवश्यक है ना केवल पर्यावरण की गुणवत्ता को बचाने के लिए बल्कि मनुष्य के अस्तित्व के लिए भी।

दुर्लभ पौधों और प्राणियों को बचाने के लिए जैव-विविधता का संरक्षण बहुत आवश्यक है। इन जीवियों के जीवन के लिए आवश्यक अच्छे पर्यावरण को उपलब्ध कराना ही उनकी सुरक्षा का सबसे अच्छा तरीका है।

पृथ्वी सौरमंडल का एकमात्र जीव युक्त ग्रह है, जिस तरह पृथ्वी पर बदलाव, अशांति और खतरा पैदा हो रहे हैं। ये भविष्य में पृथ्वी पर जीवन के स्वरूप को नष्ट कर सकते हैं।



‘पृथ्वी की रक्षा करो’ ‘मातृ ग्रह को बचाओ’

अपने ‘मातृ ग्रह’ - पृथ्वी की रक्षा करने के लिए हमें लोगों को शिक्षित करना चाहिए, उनमें जागरूकता लाने के लिए कार्यक्रमों की रचना करनी चाहिए, संसाधनों का विवेकपूर्ण उपयोग करना चाहिए। लोगों में पर्यावरण प्रदूषण के नियंत्रण के प्रति जागरूकता लाने के लिए उचित शिक्षा, निबंध संग्रह, विचार गोष्ठी, संवाद, व्यंग्य रचना, चलचित्र, सम्मेलन - इत्यादि का आयोजन करना हमारी ‘मातृभूमि-पृथ्वी’ के संरक्षण के लिए अत्यंत आवश्यक है।

अभ्यास:

I. नीचे दिए-गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए:

1. जीवमंडल क्या है?
2. पारिस्थितिकी विज्ञान की परिभाषा लिखिए।
3. विभिन्न प्रकार के पर्यावरण प्रदूषण के नाम लिखिए।
4. जल प्रदूषण को नियंत्रित करने के उपाय लिखिए।
5. जैव-विविधता क्या है ?

II. इनकी परभाषा लिखिए :

6. जीवमंडल
7. पारिस्थितिकी असंतुलन
8. विश्वव्यापी (भूमंडलीय) तापमान वृद्धि
9. ग्रीन हाउस प्रभाव
10. ओज़ोन रिक्तीकरण
11. अम्ल वर्षा

III. याद रखें-

1. प्रदूषण
2. पर्यावरण दिवस
3. क्लोरो-फ्लोरो कार्बन (CFC)
4. पृथ्वी की रक्षा करो

IV. क्रियाकलाप :

1. विश्वव्यापी तापमान वृद्धि के परिणामों के बारे में जानकारी हासिल कीजिए और उसके नियंत्रण के लिए उपाय सुझाइए।



अर्थशास्त्र की मूल संकल्पनाएँ



इस अध्याय का अध्ययन करने के बाद आप निम्नलिखित बिंदुओं को जानते हैं:

- बुनियादी आर्थिक अवधारणाओं को समझेंगे।
- माँग, आपूर्ति, वितरण, उत्पादन के आंतरिक सह संबंधों के बारे में जानेंगे।
- राष्ट्र का आर्थिक विकास।
- श्रम का महत्व।

अर्थशास्त्र को आसानी से समझने के लिए इसमें प्रयुक्त पारिभाषिक शब्दावली से अवगत होना आवश्यक है। ये हमारे दैनिक उपयोग हैं। फिर भी अर्थशास्त्र में उनका एक विशिष्ट अर्थ और कार्य क्षेत्र है। इसलिए कुछ चुनी हुई अवधारणाओं का संक्षिप्त परिचय आवश्यक है।

माँग :

माँग, इच्छा के साथ-साथ खरीदने का मनोभाव और खर्च करने की शक्ति ही माँग होती है। माँग निश्चित मूल्य पर निर्धारित अवधि में खरीदी गई आर्थिक वस्तुओं का परिमाण है। आमतौर पर बढ़ती कीमतों से माँग घटती है। घटती कीमतों से माँग बढ़ती जाती है।

उत्पादन क्षेत्र पर माँग का असर अधिक है। जब माँग में वृद्धि होती है, तब उत्पादन, रोज़गार, आय और आपूर्ति में आमतौर पर वृद्धि होती है। लोगों का जीवन स्तर बेहतर रहता है। राष्ट्र, प्रगति के पथ पर अग्रसर रहेगा। आमतौर पर, जब माँग घटती है, उत्पादन, आय और आपूर्ति भी घटती है। बेरोज़गारी बढ़ती है। लोगों का जीवन स्तर घटता जाता है। देश की तरक्की भी घटती जाती है। इस कारण से माँग को राष्ट्र की प्रगति का प्रतीक माना जाता है।

आपूर्ति

जो बाजार में निश्चित मूल्य पर बिक्री के लिए तैयार हैं, उन वस्तु या सेवाओं की परिमाण ही आपूर्ति है। सामान्यतया दाम बढ़ने से बिक्री के लिए आई हुई वस्तु तथा

सेवाओं के परिमाण भी बढ़ता है। उत्पादन, रोजगार, आय - आदि में वृद्धि होती है। लोगों के जीवन स्तर सुधरता है। राष्ट्र, प्रगति की ओर अग्रसर होता है। यदि कीमतें गिरती हैं तो बिक्री की वस्तु और सेवाओं घटकर जिससे उत्पादन और आय की मात्रा गिर जाएगी। बेरोज़गारी बढ़ती है और जीवन का स्तर भी घटता है। राष्ट्र की प्रगति में बाधा होती है।

लेकिन कुछ मामलों में इस नियमों के उल्लंघन के कीमत की परवाह किये बिना आपूर्ति समान स्तर पर रहता है। अतिक्रमण हो, पर दाम का उतार-चढ़ाव हो, आपूर्ति समान रहती है। माँग और आपूर्ति, एक दूसरे के लिए पूरक हैं। जब एक में परिवर्तन होता है तब तुरंत दूसरे में प्रतिक्रिया के रूप में दामों द्वारा अभिव्यक्त किया जाता है। उदाहरण के लिए, यदि माँग घटती है, तो आपूर्ति भी घटेगी और दाम भी घटेगी। माँग बढ़ती है तो आपूर्ति बढ़ती है। वास्तव में माँग और आपूर्ति, बाज़ार में गतिविधि के दो आधार स्तंभ हैं।

उत्पादन :

अर्थशास्त्र में उत्पादन शब्द का व्यापक अर्थ है। इसमें वस्तुओं के उत्पादन के साथ-साथ सेवाओं का उत्पादन भी शामिल हैं। बाह्यस्वरूप से उत्पादन, संपत्ति की सृष्टि होने जैसा लगता है, वास्तव में मनुष्य कुछ भी नयी सृष्टि नहीं कर सकता। वह केवल वही काम कर सकता है। प्राकृतिक रूप से उपलब्ध संपदा में उपयुक्तता जोड़ने का काम मात्र उससे संभव है। इसलिए उत्पादन का मतलब है, विशेष उपयुक्तता की सृष्टि मात्र समझना है। इस प्रकार उत्पादित वस्तुओं का मूल्य होना चाहिए।

उत्पादन कार्य, विनियोग, परिवाहन, व्यापार-आदि जैसी गतिविधियाँ शामिल हैं। उत्पादन कार्य तब पूरा होता है जब उत्पादित वस्तु और सेवाएँ उपभोक्ता को पहुँचें। इस कार्य को शुरू करने और समाप्त करने के लिए कुछ उपकरण-संपत्ति की सहायता आवश्यक है। अर्थशास्त्रविद् के अनुसार उत्पादनांग- प्रकृति, भूमि, धन, श्रम, पूँजी और बिना उद्यम साहस के उत्पादन कार्य असंभव है। जब ये चारों अंग निश्चित परिमाण में मिलकर सहयोग देने के मात्रा से यह कार्य संभव है। यह उपभोक्ताओं के कल्याण के लिए है कि करोड़ों लोग अलग-अलग परिणाम और तरीकों से उत्पादक कार्यों में लगे हुए हैं।

वितरण :

वितरण एक महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि है, उत्पादन कार्य परिणामस्वरूप राष्ट्रीय आय को उत्पादनांगों के बीच वितरण इसका महत्वपूर्ण कार्य है। उत्पादनांग के प्रकृति

(भूमि), धन, श्रम, पूँजी और उद्यम साहसियों के बीच बँट जानेवाले राष्ट्रीय आय को अनुक्रम से किराया, मज़दूरी, ब्याज और लाभ कहा जाता है। उन उत्पादनांगों के पात्र और परिमाणानुसार वितरण होना चाहिए। माँग और आपूर्ति के बीच संतुलन होना चाहिए। उत्पादन कार्य में कोई व्यवधान नहीं होना चाहिए। किसी भी उत्पादन अंग को महत्व नहीं दी जानी चाहिए। कोई लापरवाही नहीं होनी चाहिए। यह आर्थिक प्रणाली के संतुलित विकास के लिए आवश्यक है। उत्पादन, माँग, आपूर्ति, उपभोग, मूल्यों का निर्धारण-आदि बाँटने से प्रभावित होते हैं।

उपभोग

इच्छा की संतुष्टि के लिए वस्तु और सेवाओं का उपयोग करना ही उपभोग है। इस तरह उपभोगित वस्तुएँ अच्छी भी हो सकती हैं या बुरी। जब तक मानव की इच्छाएँ पूरी की जा सकती हैं, तब तक वे अनुभव के लिए उपयोगी हैं। आधुनिक अर्थशास्त्र में उपभोग के लिए महत्वपूर्ण स्थान है।

उपभोग के दो प्रकार :

1. उत्पादन के लिए वस्तु और सेवाओं का उपयोग करना।
2. इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए तैयारी की गयी वस्तु और सेवाओं का उपयोग करना।

अर्थात् अनुभोग का अर्थ इच्छा की संतुष्टि है।

किसी राष्ट्र की श्रेष्ठता, जीवन का स्तर और रोजगार परिणाम, अपने-अपने देश उपभोग परिणाम पर निर्भर करती है। क्योंकि अर्थव्यवस्था लोगों की इच्छा को पूरा करने के लिए है, इच्छा का अंत उपभोग में होता है। अनुभव करने के लिए उत्पादन और आदान-प्रदान किया जाना चाहिए। उत्पादन इच्छा की संतुष्टि के लिए ही है। जब उपभोग अधिक होता है तो, उत्पादन और आय में वृद्धि होकर अच्छी कीमतें तथा पूर्ण रोजगार संभव है। जब उपभोग कम हो जाता है, तब उत्पादन, आय और कीमतें गिरकर बेरोज़गारी बढ़ जाती है। उपभोग तथा उत्पादन में निकट नाता है। दोनों मिलकर राष्ट्रीय आय पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालते हैं।

उपयुक्तता :

अर्थशास्त्र में प्रयुक्त शब्दों में से उपयुक्तता भी एक है। मानव की इच्छा को संतुष्ट करने की शक्ति ही उपयुक्तता है। प्रत्यक्ष और परोक्ष रूप से मानव की इच्छा को संतुष्ट करने वाले सभी वस्तु और सेवाओं में उपयुक्तता युक्त हैं, लेकिन इसका मापना असंभव है। यह हर व्यक्ति में भिन्न होता रहता है। एक व्यक्ति के लिए यह हर एक समय में अलग-अलग तरह से बदल सकता है, अभिरुचि और उपयुक्तता अंतर ला सकता है।

उपयुक्तता संतुष्टि नहीं है, संतुष्टि देनेवाली शक्ति है। संतुष्टि उपयुक्तता से प्राप्त परिणाम है। उपयुक्तता युक्त वस्तु हमें संतुष्ट देती है। उपयुक्तता और प्रयोजन में कोई संबंध नहीं है। आमतौर पर दो शब्दों का प्रयोग एक ही अर्थ में होता है, लेकिन यह सही नहीं है। उदाहरण के लिए नशीली पदार्थों के सेवन से भले ही कोई लाभ न हो, फिर भी उपयुक्तता से युक्त है।

अर्थशास्त्र विदों ने उपयुक्तता को चार भागों में विभाजित किया है।

1. मूल उपयुक्तता ।
2. आकार उपयुक्तता ।
3. समय उपयुक्तता ।
4. स्थान उपयुक्तता ।

1. **मूल उपयुक्तता** : मूल रूप में उपयुक्त होनेवाली वस्तु और सेवाएँ मूल उपयुक्तता से युक्त होते हैं। जैसे पानी, फल, अंडे-आदि।
2. **आकार उपयुक्तता** : प्रकृति हमें जो सामाग्री देती है उन्हें एक रूप देकर उपयोग के लिए योग्य बनाना ही आकार उपयुक्तता है। उदाहरण के लिए, एक मूर्तिकार, जो पत्थर को विग्रह का आकार देता है। ऐसे ही बढ़ई, लकड़ी की कुर्सी या डेस्क का रूप देता है।
3. **समय उपयुक्तता** : किसी एक वस्तु को अत्यधिक उपलब्ध के अवसर पर संग्रह करके, जब उसे अनुपलब्ध अवसर पर आपूर्ति की जाती है तो उसका मूल्य अधिक समय उपयुक्तता को सूचित करता है। उदाहरण के लिए आमों का संग्रह करके, उनको अलग-अलग समय पर अचार के रूप में आपूर्ति की जाती है।

4. स्थान उपयुक्तता : एक ही स्थान में प्रचुर मात्रा में उपलब्ध होनेवाली वस्तुओं को दूर-दूर के स्थानों तक पहुँचाकर और उपभोक्ताओं को उपलब्ध होने की तरह निर्माण करने से स्थल उपयुक्तता का निर्माण कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, शिमला के सेब और कोडगू के नारंगी फलों को बेंगलूरु में उपलब्ध होने की तरह करना।

मूल्य : पैसे के रूप में व्यक्त होनेवाला दाम ही मूल्य है, किसी एक वस्तु या सेवा के बजाय देनेवाला पैसा ही मूल्य है। मूल्यों के अध्ययन के लिए अर्थशास्त्र में एक महत्वपूर्ण स्थान है। भारी माँग के अवसर पर बड़े संख्यावाले उपभोक्ताओं को वस्तु या सेवाओं को वितरण एक समस्या है। यह काम मूल्य करता है। माँग और आपूर्ति संतुलन मूल्य माध्यम का मुख्य कार्य है। ऐसे संतुलन के मूल्य समानांतर में होते हैं। तब माँग-आपूर्ति के बराबर होती है। वस्तु और सेवाओं की कमी या वृद्धि नहीं होगी। यदि माँग और आपूर्ति के बीच अंतर हो तो वस्तु और सेवाओं का दाम में अंतर होता है। लेकिन कुछ समय के बाद संतुलित दाम निर्धारित होता है। तब माँग और आपूर्ति और मूल्य एक समीकरण जाते हैं। इस प्रकार मूल्य के निर्धारण में माँग और आपूर्ति की भूमिका महत्वपूर्ण है।

लाभ : सामान्य भाषा में उत्पादन के लिए लगनेवाले खर्च के बाद जो बचता है वही लाभ है। लेकिन अर्थशास्त्र के विदों के अनुसार लाभ उत्पादन कार्य की सेवा के बदले उत्पादक को प्राप्त प्रतिफल ही लाभ है। यह उत्पादन के लिए उपयुक्त किराया, मज़दूरी और ब्याज का भुगतान के बाद बचनेवाला पैसा ही धन है। ऐसे बचा हुआ धन अधिक या कम भी हो सकता है। कभी-कभी कुछ भी नहीं उत्पादक ही लाभ और नष्ट के लिए जिम्मेदार है।

आर्थिक क्षेत्र में लाभ का अत्यधिक महत्व है, सभी आर्थिक गतिविधियों का मूल उद्देश्य लाभ कमाना होता है। लाभ बढ़ने से आर्थिक गतिविधियाँ बढ़ती हैं। राष्ट्र की प्रगति तेज़ होती है। लाभ कम होने पर आर्थिक गतिविधियाँ कम हो जाती है। देश की प्रगति में बाधा होती है। आर्थिक क्षेत्र ठहराव से बाधित होता है।

सहयोग : अर्थशास्त्र में सहयोग का विशेष स्थान है। एक प्रकार की उद्यम प्रणाली, इसे जीवन की विधि मानी जाती है। उपेक्षित, अप्रभावित, साधन युक्त सामान्य जनता को सहयोग पथप्रदर्शक है। सहयोग पद्धति ने यह साबित कर दिया है कि अमीर और प्रभावशालियों को मात्र सीमित सुविधाओं को आम लोग भी प्राप्त कर सकते हैं। यह पद्धति किसी का शोषण नहीं करता है।

सहयोग पद्धति आम लोग इच्छा से मिलकर समानता के आधार पर अपने आर्थिक हितों के लिए परिश्रम करने के लिए रहनेवाला एक विशिष्ट व्यवस्था है। इसका मुख्य लक्ष्य है कि स्व-सहायता साधना करना है। समस्त व्यवहारों को सदस्य ही देखने के अलावा लाभों को बाँट लेना है। शेयरों को उपयुक्त लाभ देकर सदस्य लेनेवाली वस्तु के मूल्य के आधार पर छुटकारा दिया जा सकता है। यहाँ दलालों की प्रवेश नहीं है। शोषण का अवसर नहीं है। निर्वाचित निदेशक संस्था के व्यवहार को देख लेते हैं। यहाँ के सदस्य मालिक भी हैं, और कार्यकर्ता भी हैं।

‘सब के लिए सब, सबके लिए सब’ यह सहकार मंत्र है। हर शेयरधारक का एक ही वोट है, चाहे कितने भी शेयर हो। साथ ही, एक व्यक्ति को प्राप्त होने वाले शेयरों की संख्या की भी एक सीमा होती है। सदस्य बनने की आवश्यकता और न होने पर छोड़ने की स्वतंत्रता भी है।

राष्ट्रीय आय : एक राष्ट्र द्वारा एक वर्ष के दौरान उत्पादित कुल वस्तुओं तथा सेवाओं को राष्ट्रीय आय कहते हैं। राष्ट्र भी एक व्यक्ति की तरह आय प्राप्त करता है, इसे राष्ट्रीय आय कहा जाता है। यह उस राष्ट्र के सभी उत्पादन क्षेत्रों से आनेवाला राष्ट्रीय आय की कुल राशी है। राष्ट्रीय आय घटना कष्ट है। उसमें भी प्रगतिशील देशों में यह एक बड़ी समस्या है।

राष्ट्रीय आय का आकार उत्पादन पर निर्भर है। यदि उत्पादन में वृद्धि होती है तो राष्ट्रीय आय (जनसंख्या के आधार पर) में भी वृद्धि होती है, बढ़ती हुई राष्ट्रीय आय में वृद्धि राष्ट्र के विकास और लोगों के जीवन स्तर को दर्शाती है। राष्ट्रीय आय में वृद्धि होना देश की आर्थिक प्रगति का प्रतीक है। घटती राष्ट्रीय आय राष्ट्र की आर्थिक दुर्दशा और लोगों के निम्न जीवन स्तर को दर्शाती है। इसलिए कि सभी राष्ट्र अपनी राष्ट्रीय आय को बढ़ाने के लिए निरंतर प्रयास कर रहे हैं।

प्रति व्यक्ति आय : किसी देश की आय को उस देश की कुल जनसंख्या से भाग विभाजन करने से जो आय प्राप्त होती है, उसे प्रति व्यक्ति आय कहते हैं। । राष्ट्रीय आय अधिक होने पर प्रति व्यक्ति की आय भी अधिक होती है। लोगों का जीवन स्तर बेहतर होता है। परिणामस्वरूप लोग शांति से जिंदगी बीतते हैं।

जब राष्ट्रीय आय घटती है तब प्रति व्यक्ति आय भी घटती है। लोगों का जीवन स्तर निम्नतर होता है। लोगों में गरीबी और बीमारी फैलकर मुश्किल से जीवन बिताते हैं। विभिन्न देशों के लोगों की प्रति व्यक्ति आय की तुलना करने से संबंधित देशों की आर्थिक स्थिति और जीवन स्तर की जानकारी मिलती है। इससे हमारी स्थितियों की स्पष्ट तस्वीर चित्रण सामने आता है।

श्रम का महत्व

श्रम करना, कमाना, अपने जीवन-स्तर सुधारना मनुष्य का स्वाभाविक गुण है। यह प्रयास शारीरिक या मानसिक हो सकता है। शारीरिक श्रम के उदाहरणों में खुदाई, खेती करना, भार ढोना और मशीनरी चलाना शामिल हैं। शिक्षक, वैज्ञानिक, वकील, करकून-आदि का कार्य मानसिक श्रम का एक उदाहरण है। शारीरिक श्रम के लिए शारीरिक शक्ति की आवश्यकता होती है। मानसिक श्रम के लिए बुद्धि आवश्यक है। प्रगतिशील देशों में शिक्षितों की संख्या अधिक है और वे कड़ी मेहनत कर रहे हैं।

ऊँच-नीचा की भावना नहीं होनी चाहिए और समाज के साथ भेदभाव नहीं होना चाहिए। दोनों वर्ग के श्रमिकों को समान गौरव देना चाहिए। शारीरिक श्रम नीच और मानसिक श्रम उच्च जैसी बुरी भावना नहीं होनी चाहिए।

महात्मा गांधी को कड़ी मेहनत के महत्व में बहुत विश्वास था। इसे उन्होंने करके दिखाया। उन्हें राष्ट्रपति से बात करना जितना महत्वपूर्ण था उतना ही झाड़ूपोचा करनेवाले के साथ बात करना महत्वपूर्ण था।

शिक्षित, कई मानसिक श्रम के काम की तलाश में हैं। हर किसी को नौकरी नहीं मिल सकती। शारीरिक श्रम के अवसरों में वृद्धि है मगर ऊँच-नीच के भेदभाव को छोड़कर जब किसी को जो काम मिलता है, उसे करने के लिए तैयार रहना होगा। तब उसे मेहनत के महत्व का एहसास होगा। समानता की भावना पैदा होती है और राष्ट्र निर्माण का कार्य संभव है।

अभ्यास

I. उचित शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए:

1. माँग बढ़ने पर उत्पादन _____ ।
2. इच्छा को संतुष्ट करने के लिए वस्तु और सेवाओं का उपयोग करना _____ ।
3. यदि किसी देश की आय को देश की कुल जनसंख्या से भाग करने से _____ प्राप्त होता है।

4. लॉरियों से वस्तुओं को उतारने के काम में आने वाला श्रम विभाजन _____ विध का श्रम है ।
5. स्कूलों में बच्चों को शिक्षित करने वाले शिक्षक पढ़ानेवाले श्रम का एक उदाहरण हैं _____ ।

II. इन प्रश्नों के लिए उत्तर दीजिए:

6. अर्थशास्त्र में माँग का क्या अर्थ है?
7. उत्पादन क्षेत्र पर माँग का क्या प्रभाव पड़ता है?
8. वितरण क्या है?
9. वितरण को कुशल कैसे बनाया जाए?
10. राष्ट्रीय आय और प्रति व्यक्ति आय में अन्तर बताइए।
11. श्रम का क्या महत्व है?

III. गतिविधियाँ :

1. अपने स्कूल के निकटतम बाज़ार जाएँ और देखें कि दाम अधिक-कम होने पर इच्छाएँ कैसे अधिक-कम होती हैं, इसे जानिए।
2. स्कूल के पुस्तकालय में आने वाले समाचार पत्रों को पढ़ें और प्रतिदिन आर्थिक क्षेत्र में होनेवाले उतार-चढ़ाव पर ध्यान दें।



व्यावहारिक अध्ययन

अध्याय-29

विविध व्यावहारिक संगठनों का उदय



इस अध्याय के अध्ययन के बाद निम्नांकित अंशों को जानेंगे हैं:

- व्यवहार संगठनों के प्रकारों का परिचय प्राप्त करना।
- हिस्सेदारी (भागीदारी) व्यवहार संस्थाओं का स्वरूप प्रकार अनुकूल तथा अनानुकूल के बारे में जानना।
- भागीदारी संस्थाओं का पंजीकरण के क्रमों को समझना।
- भारत के हिंदू अविभक्त व्यावहारिक परिवारों के बारे में परिचय पाना।

प्रस्तुत समाज में अनेक प्रकार के व्यवहार संगठनों को हम देख सकते हैं उन्हें चार भागों में विभाजित किया जाता है जो निम्नलिखित हैं:

1. निजी क्षेत्र की व्यावहारिक संस्थाएँ (Private sector Business organisations)
2. सार्वजनिक क्षेत्र की व्यावहारिक संस्थाएँ (संगठन) (Public sector Business organisations)
3. भागीदारी व्यावहारिक उद्यम (Joint Sector Business organisations)
4. सरकारी स्वामित्व के व्यावहारिक उद्यम (Public Utilities)

इस अध्याय और आगे के अध्याय में निजी संगठनों के प्रमुख प्रकार जैसे छोटे मात्रा के संगठनों और बड़ी मात्रा के संगठनों के बारे में संक्षिप्त परिचय प्राप्त करेंगे।

छोटी मात्रा के संगठन में प्रमुख हैं:

- एक व्यक्ति मालिकत्व संस्था (Sole Trading Concerns)
- भागीदारी संस्थाएँ (Partnership Firms)
- हिंदू अविभक्त पारिवारिक संस्थाएँ (Hindu undivided Family Firms)

1. एक व्यक्ति मालिकत्व संस्था :

ऐसी संस्था एक व्यक्ति द्वारा चलायी जाती है। वही संचालक, नियंत्रक, लाभ-नुकसान का अकेला ही जिम्मेदार और पूँजी निवेशक होता है।

विशेषताएँ : ये प्राचीन व्यावहारिक संगठन है। इनको आसानी से स्थापित किया जाता है। अकेला व्यक्ति इसका मालिक होता है। मालिक के लाभानुसार इनका निर्वहण होता है। इसके मालिक खुद पूँजी निवेश करके स्वकुशलता से व्यवहार करते हैं। इनके प्रारंभ करने या बंद करने पर कोई कानून की पाबंदी नहीं होती। हर प्रकार के लाभ-नुकसान उस एक व्यक्ति पर निर्भर रहता है। अपने परिवार के सदस्यों की सहायता लेता है। कई संदर्भों में नौकरों को भी नियुक्त कर लेते हैं। ये संस्थाएँ सामान्यतः छोटी होती हैं। आजकल बड़ी मात्रा में भी ऐसी संस्थाओं का संगठन हो रहा है।

एक व्यक्ति मालिकत्व संस्था की सुविधाएँ :

1. इनकी स्थापना में कानून की आवश्यकता नहीं होती।
2. खुद अपने पैसों से इनको प्रारंभ कर सकते हैं।
3. दैनिक व्यवहार भी आसान होता है।
4. लाभ और नुकसान एक व्यक्ति पर निर्भर होता है। व्यापार की निगरानी खुद करते हैं।
5. ग्राहकों के साथ मालिकों का सीधा संबंध होता है।
6. अनेक सामाजिक सेवा भी प्राप्त होती हैं।
7. लोगों को काम दिलाते हैं।
8. संपत्ति और आर्थिक अधिकार शक्तियों के बँटवारे में मदद मिलती है।
9. ग्राहकों की प्रतिदिन की जरूरतों को पूरा करते हैं।
10. समयानुसार सरकार को कर देते हैं।

एक मालिकत्व संस्था के दोष : ये संस्थाएँ अपनी कुछ पूँजी निवेश संबंधी सीमा से बाहर नहीं आ सकती हैं। इनमें प्रमुख हैं,

1. सीमित पूँजी होने के कारण इन्हें विस्तृत रूप में विकसित करने में कठिनाई होती है।
2. प्रशासनिक कुशलता भी सीमित होती है।
3. सदैव एक व्यक्ति की तुलना में दो या उससे अधिक व्यक्तियों का निर्णय लेना उचित होता है।
4. सभी प्रकार की नुकसान अथवा जिम्मेदारी को एक ही व्यक्ति को उठाना पड़ता है।
5. मालिक के निधन या दिवालिया हो जाने पर संस्था को बंद करने की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।

2. भागीदारी व्यावहारिक संस्था (Partner ship Firms) :

एक व्यक्ति मालिकत्व की सीमा से बाहर आकर अनेक प्रकार की व्यवहार संस्थाएँ अस्तित्व में आयीं। उनमें से भागीदारी संस्थाएँ भी है। ऐसे संगठनों में एक से अधिक व्यक्ति मिलकर व्यवहार करते हैं। ऐसी संस्थाओं की स्थापना करने के लिए और चलाने संबंधित 1932 में भागीदारी संस्था के कानून अस्तित्व में आया। इस कानून (संहिता) के परिच्छेद 4 के अनुसार सब लोगों अथवा उनकी ओर से एक व्यक्ति व्यवहार के लाभांश को बाँट लेने के लिए सम्मती रहें, व्यक्तियों के बीच का संबंध भागीदारी होती है। आर्थिक व्यवहार में निम्नतम दस लोगों की भागीदारी और सामान्य भागीदारी या हिस्सेदारी से संबंधित व्यवहार करना हो तो अधिकतम बीस लोगों की हिस्सेदारी होती है। इन्हें हिस्सेदारी या भागीदारी संस्था और भागीदारियों को भागीदार कहते हैं।

भागीदारों के प्रकार : भागीदार अनेक प्रकार के होते हैं, उनमें मुख्य है :

1) **सक्रिय भागीदार :** ऐसे भागीदार निश्चित पूँजी जमा करते हैं। लाभ नुकसान को अनुपात के अनुसार बाँट लेते हैं। संस्था के दैनिक कारोबार को सक्रियता से चलाते हैं।

2) **तटस्थ भागीदार :** ऐसे भागीदार पूँजी जमा करते हैं। लेकिन दैनिक कारोबार में सक्रिय रूप में भाग नहीं लेते। पूँजी के अनुपात के अनुसार लाभांश लेते हैं। उसी प्रकार नुकसानों की जिम्मेदारी भी लेते हैं।

3) **नाममात्र अथवा सांकेतिक साझेदार :** ऐसे लोग पूँजी के भागीदार नहीं होते। सक्रिय रूप से दैनिक कारोबार में भाग नहीं लेते। किसी भी प्रकार के लाभ के हकदार भी नहीं होते। कर्ज के अनुपात के अनुसार उत्तरदायी अनुसार होते हैं ।

4) **अवयस्क साझेदार :** 18 वर्ष से कम आयु व्यक्ति साझेदार नहीं बन सकता। लेकिन सभी साझेदारों की सम्मति से पारस्परिक समझौते के अनुसार अवयस्कों को भी साझेदार बना सकते हैं। ऐसे लोग लाभांश मात्र लेते हैं। नुकसान के उत्तरदायी नहीं होते। नयी साझेदारी संस्थाएँ अवयस्कों को शामिल करने में अवसर नहीं होता ।

इन प्रकारों के अलावा रहस्य साझेदार, सीमित साझेदार, आंशिक साझेदार, लाभांश के साझेदार - आदि भी होते हैं।

साझेदारी भागिता पत्र (विलेख) (Partnership Deed) :

सामान्यतया : इस प्रकार के पत्र लिखित रूप में होते हैं। कई बार ये मौखिक भी होते हैं। ऐसे भागिता पत्र दस्तावेजी कागजों में लिखे जाते हैं। एक संस्था से दूसरे संस्थाओं के भागिता पत्रों में अंतर रहता है। ऐसे पत्रों में सामान्यतया संस्था का नाम, साझेदारों के नाम तथा पता, व्यवहार का स्थान, स्वरूप, यदि उपशाखाएँ हों, तो उनका पता, स्थापित

दिनांक, साझेदारों की पूँजियों का विवरण, लाभ-नुकसानों का अनुपात, हर साझेदार का कर्तव्य, कार्यों का वर्गीकरण, नये साझेदारों की नियुक्ति में अपनानेवाले नियम, साझेदार की मृत्यु अथवा निवृत्ति के बाद पुनर मूल्य (Good Will) निर्णय के विधान, साझेदारों को भिन्न अभिप्रायों के समाधान के क्रम आदि।

साझेदारी संस्थाओं की सुविधाएँ -

1. **आसानी से स्थापित कर सकते हैं :** इन संस्थाओं का पंजीकरण साझेदारों के ऐच्छिक निर्णय पर अवलंबित होने के कारण ज्यादा कानूनी पाबंदियाँ नहीं होती । इसलिए इस तरह की संस्थाओं को आसानी से स्थापित किया जा सकता है ।
2. **अधिक पूँजी :** संस्था में अधिक व्यक्ति होने के कारण पूँजी भी अधिक लगायी जाती है।
3. **अधिक निपुणता :** इस संस्था में दो से अधिक मालिक होने के कारण श्रम का बँटवारा होता है। इससे अधिक निपुणता आती है।
4. **विश्वसनीयता :** साझेदारों की अपरिमित जिम्मेदारी के कारण संस्था की विश्वसनीयता बढ़ाती है।
5. **नुकसानों का बँटवारा :** ऐसी संस्थाओं में अनुपातानुसार लाभ-नुकसानों का बँटवारा होने के कारण एक ही साझेदार पर नुकसान का बोझ नहीं पड़ता।
6. **व्यावहारिक रहस्य :** इन संस्थाओं के लेखा-जोखाओं को सार्वजनिकों के सामने प्रकट करने की पाबंदी न होने के कारण व्यावहारिक रहस्य पालन संभव है।
7. **सरल समाप्ति / अलग होना :** इस संस्था का विसर्जन भी आसानी से होता है। कोई भी साझेदार अन्य साझेदारों को 14 दिन के पहले सूचना दे सकता है। तथा सहभागीदार की सम्मति से विसर्जन कर सकता है।

साझेदारी व्यावहारिक संस्था के दोष :

1. साझेदारों के बीच पारस्परिकता न होने के कारण झगड़े हो सकते हैं। विवाद हो सकते हैं।
2. साझेदारों की संख्या अधिक होने के कारण पूँजी भी सीमित होती है।
3. नुकसान की जिम्मेदारी अपरिमित होने के कारण अधिक लोग साझेदारी से या भागीदारी से पीछे हटते हैं।

4. कुछ साझेदारों की अजागरूकता, अविवेकपूर्ण निर्णय संस्था के गतिरोध के कारण बनते हैं।
5. साझेदारी संस्था में स्थिरता का अभाव होता है। किसी एक साझेदार के निधन होने से अथवा दिवालिय से संस्था को विसर्जन करना पड़ना है।
6. साझेदार अपने हिस्से को दूसरे साझेदार को हस्तांतरित नहीं कर सकता।
7. सरकारी नियंत्रण न होने के कारण लेखा-जोखाओं को प्रकटित करने की पाबंदी न होने के कारण लोगों का सहारा नहीं मिल पाता।
8. दो या अधिक साझेदारों के कारण व्यवहार का रहस्य निर्वहण आसान नहीं होता।

साझेदारी संस्थाओं का पंजीकरण (Registration of Partnership Firms)

एक व्यक्ति मालिकत्व के संस्थाओं की स्थापना में पंजीकरण की आवश्यकता नहीं होती। 1932 की साझेदारी संस्था के कानून के अनुसार साझेदारी संस्थाओं की स्थापना के लिए पंजीकरण की आवश्यकता होती है। लेकिन कोई पाबंदी नहीं है। पंजीकरण करना या न करना साझेदारों के निर्णय पर अवलंबित होता है। किसी भी संदर्भ में पंजीकरण किया जा सकता है। निश्चित आवेदन पत्र द्वारा सटीक विवरण भरकर निश्चित शुल्क भरकर सरकार द्वारा नियुक्त पंजीकरण अधिकारी को देना पड़ता है। पंजीकरण अधिकारी विवरणों को जाँचकर संस्था के नाम पंजीकरण प्रमाणपत्र देते हैं।

संस्थाओं के पंजीकरण के उपयोग :

- पंजीकृत संस्था 100 रु से अधिक कर्ज वसूली के संबंध में तीसरे व्यक्ति के खिलाफ कोर्ट में दावा कर सकता है।
- पंजीकृत संस्था कर्ज वसूली में अन्य साझेदार के विरुद्ध भी मुकदमा कर सकती है।
- अपंजीकृत संस्थाओं पर उनके साझेदारों के विरुद्ध कोई तीसरा व्यक्ति मुकदमा कर सकता है।
- अपंजीकृत संस्था अथवा उसके साझेदारों के विरुद्ध कोई भी साझेदारी संस्था के भंग के लिए अथवा लेखा निर्णय के लिए न्यायालय में मुकदमा लड़ सकता है।

3. हिंदू अविभक्त पारिवारिक व्यवहारिक संस्थाएँ :

इस प्रकार की संस्था केवल भारत मात्र में अस्तित्व में है। यह हिंदू कानून के अनुसार जारी किये जाते हैं। यह हिंदू परिवार में पुरुषों द्वारा स्थापित संस्थाएँ हैं। लगातार तीन पीढ़ी से चले आये पुरुष ही इस संस्था के सदस्य बनते हैं। अविभक्त परिवार का अत्यंत बुजुर्ग सदस्य इस संस्था के व्यवहार की जिम्मेदारी लेता है। उसे 'कर्ता' कहते हैं। सभी सदस्यों का मालिकत्व होने पर भी प्रशासन 'कर्ता' ही चलाता है। 'कर्ता' की जिम्मेदारी अपरिमित होती है। अन्य सदस्यों की जिम्मेदारी उनकी पूँजी तक ही सीमित रहती है।

अभ्यास

I. निम्नलिखित खाली जगह को उचित शब्दों से भरिए :

1. एक ही व्यक्ति द्वारा चलायी जानेवाली अथवा संचालित व्यापारी संस्था _____ कहलाती है।
2. साझेदारी संस्था के संचालन से संबंधित कानून को _____ में जारी किया गया।
3. आर्थिक व्यवहार करनेवाली साझेदारी संस्था अधिकतम _____ साझेदारों तक सीमित है।
4. हिंदू अविभक्त पारिवारिक संस्थाओं के देख - रेख करनेवाले को _____ कहते हैं।
5. भारत मात्र में स्थित छोटी व्यवहार संस्था _____ है।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए :

6. छोटी व्यवहार संस्थाओं में मुख्य संस्थाएँ कौन-कौन सी हैं?
7. छोटी व्यवहार संस्था ग्राहकों की मदद कैसे करती है।
8. साझेदारी संस्था किसे कहते हैं?
9. निष्क्रिय साझेदार किसे कहते हैं? बताइए।
10. साझेदारी संस्था को विसर्जन करना आसान है। कैसे ? समझाइए ।

III. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर उचित रूप में लिखिए :

11. 'एक व्यक्ति मालिकत्व' संस्था की कोई चार सुविधाएँ लिखिए।
12. एक व्यक्ति मालिकत्व संस्था के किन्हीं चार दोषों को लिखिए।
13. साझेदारी संस्थाओं की स्थापना कैसे होती है?
14. साझेदारी संस्था के विविध प्रकार के साझेदारों के बारे में लिखिए।
15. साझेदारी अथवा भागीदारी संस्था के चार सुविधाएँ लिखिए।
16. भागीदारी अथवा साझेदारी संस्था के चार दोषों के बारे में लिखिए ।
17. साझेदारी संस्था के पंजीकरण के उपयोग क्या है?
18. हिंदू अविभक्त पारिवारिक पद्धति व्यवहार संस्था के बारे में लिखिए।

IV. गतिविधि

1. अत्युत्तम प्रचारित किन्हीं दो विज्ञापनों का संग्रह कीजिए।



अध्याय - 30

बड़े व्यापार संगठन



इस अध्याय के अध्ययन के बाद नीचे दिए गए अंशों को जानेंगे।

- बड़े आकार की व्यवहारिक संस्थाओं को पहचानना।
- सहकारी संघों के लक्षण, विधाएँ, उपयोग तथा दोषों के बारे में समझना।
- संयुक्त पूँजी संस्थाओं का अस्तित्व, विधाएँ रचना गुण एवं दोषों के बारे में समझना।
- बहुराष्ट्रीय निगमों का अर्थ, विशेषताएँ उपयोग एवं दोषों को समझना।

एक व्यक्ति स्वायत्त संस्थाएँ, भागीदारी संस्थाएँ, हिंदू अविभक्त परिवार, व्यवहार संस्थाएँ पर्याप्त पूँजी की कमी, प्रशासन कौशल का अभाव, निरंतरता की कमी, ज्यादा ज़िम्मेदारी अथवा ज़िम्मेदारी आदि समस्याएँ हैं। इन समस्याओं से मुक्त होने के लिए बड़े प्रमाण की व्यवहारिक संस्थाएँ रूढ़ी में आए।

बड़े आकार की बड़ी व्यावहारिक संस्थाओं में से प्रमुख हैं-

1. सहकारी संघ (Co-operative Societies)
2. संयुक्त पूँजी संस्थाएँ (Joint Stock Companies)
3. बहुराष्ट्रीय निगम (Multi National Corporations)

1. सहकारी संघ (Co-operative Societies) : ये सारे विश्व में दिखाई देते हैं। व्यक्तियों की स्वयं प्रेरित संस्था होकर आर्थिक रूप से पिछड़े हुए लोग अपने सदस्यों की सुविधा के लिए स्थापना की गयी संस्थाएँ हैं। विश्व में पहला सहकारी संघ की स्थापना 1844 में रॉबर्ट ओवन से इंग्लैंड में हुई। यह उपभोक्ता सहकारी संघ था। आमतौर पर सहकारी

संघ आर्थिक प्रगति करने और आर्थिक शोषण से मुक्त होने के लिए आर्थिक समानता वाले व्यक्ति ऐसे संघ की स्थापना करते हैं। उदाहरण- 1. किसान खेती के लिए उधार सहकारी संघों की स्थापना करके, इनसे कम ब्याज के हिसाब से उधार लेकर ब्योहार करनेवालों से मुक्त होते हैं। 2. सहकारी बाज़ार संघ की स्थापना करके उगे हुए फसलों को दलालों से मुक्त होकर अच्छे दाम पाते हैं।

सहकारी संघों का गठन : भारत में सहकारी समितियों को सहकारी समिति अधिनियम, 1912 द्वारा नियंत्रित किया जाता है। विभिन्न राज्यों में निहित कानूनों के अनुसार सहकारी समितियों का गठन किया जाता है।

सहकारी समितियों की सामान्य विशेषताएँ :

- ये व्यक्तियों के स्व-प्रेरित संगठन हैं।
- यहाँ का सदस्यत्व जाति, पंथ, वर्ग और लिंग की परवाह किए बिना सभी युवाओं के लिए खुला रहता है।
- यहाँ सदस्यों की संख्या में कोई अधिकतम सीमा नहीं होती।
- यहाँ लोकतांत्रिक नमूने का प्रशासन है, जिसका अर्थ है कि संघ के सभी सदस्य आम सभा में हाज़िर हो सकते हैं और प्रत्येक सदस्य को एक ही मतदान करने का अधिकार है, चाहे कितना भी पूँजी निवेश किया हो।
- संस्था (संघ) के लाभ को पूँजी निवेश की परिमाण के अनुसार बाँटा जाता है। (6.25% से कम नहीं)
- मुनाफे का एक हिस्सा संघ (एसोसिएशन) के सामान्य कोष में स्थानांतरित कर दिया जाता है।
- इनके स्थिति और नियंत्रण सरकारी निरीक्षण के अधीन होते हैं।

सहकारी संघों के प्रकार

1. उधार सहकारी संघ (Credit Co-operative societies)
2. बाज़ार सहकारी संघ (Co-operative Marketing societies)
3. उत्पादक सहकारी संघ (Producers Co-operative societies)
4. उपभोक्ता सहकारी संघ (Consumers Co-operative societies)
5. किसान सहकारी संघ (Farmers Co-operative societies)
6. गृह निर्माण सहकारी संघ (House building Co-operative societies)
7. विभिन्न तरह की सेवाओं की सहकारी संघ (Co-operative societies for different services) - जैसे शिक्षा संघों की स्थापना, निर्वाह, पानी की आपूर्ति आदि ।

सहकारी समितियों के लाभ :

1. इनका गठन आसान है,
2. अधिक पूँजी की आवश्यकता नहीं होती है ।
3. सभी सदस्यों के समान अधिकार होते हैं।
4. सदस्यों के बीच कोई भेदभाव नहीं होता।
5. लोकतंत्र के रास्ते में चलता है।
6. प्रत्येक सदस्य को एक ही मतदान करने का अधिकार प्राप्त है।
7. सदस्य दायित्व सीमित है। सदस्य बचत करने का अभ्यास करते हैं।
8. पूँजीवादी और समाजवादी प्रथाओं के बीच एक अच्छी व्यवस्था है।
9. सहकारी समितियों का मुख्य उद्देश्य “सभी के लिए एक और एक के लिए सब हैं”।

सहकारी समितियों के दोष :

1. पूँजी की सीमा होने के कारण बड़ा कारोबार नहीं कर सकते।
2. सही कर्मचारी मिलना मुश्किल हो सकता है।
3. प्रशासन के दुरुपयोग की संभावना है।
4. धन का दुरुपयोग की संभावना है।
5. पक्षपात और रिश्तखोरी के हैं।

भारत में सहकारी पद्धति का आंदोलन : भारत में सहकारी संघ के कानून लागू करने द्वारा 1904 में सहकारी संघ शुरू हुए। 1912 में एक अध्यादेश (कानून) लाया गया और पूँजीकरण अनिवार्य कर दिया गया। आज़ादी के बाद से पंचवर्षीय योजनाओं के तहत सहकारी समितियों का विकास हुआ है। हमारे देश में अब लगभग आठ लाख सहकारी संघ हैं। कर्नाटक में पहली सहकारी संघ वर्तमान गदग जिले के गदग तालुक के 'कनगिनहाल' में शुरू की गई थी। बेंगलूर अर्बन सेंटर-को-ऑपरेटिव सोसाइटी बेंगलूरु नगर केंद्रीय सहकार संघ) की शुरुआत 1905 में हुई थी। सहकारी संघ की स्थापना पर जोर देने के कारण धारवाड़ जिले को 'सहकारी संघ की पालने' के रूप में जाना जाता है।

2. संयुक्त स्टॉक निगम (Joint Stock Corporations) :

इन कंपनि की स्थापना, संचालन, विस्तार, मान्यता और विसर्जन भारत के कंपनी अधिनियम, 1956 द्वारा नियंत्रित होते हैं। इसके अनुसार "एक कंपनी का मतलब है कि कानून से सृष्टि होनेवाला एक कृत्रिम व्यक्ति जिसे कानून द्वारा बनाया गया है, जिसकी एक अलग कानूनी इकाई है जिसमें एक निरंतर उत्तराधिकारी और सामान्य मुहर के साथ प्रत्येक कानून अवध अस्तित्व पाता है"।

हेन्री के अनुसार "पूँजीगत संस्था एक स्व-चालित संस्था है, जिसकी पूँजी हस्तांतरणीय शेयरों के रूप में होती है। मालिकत्व सदस्यत्व के शर्तों के अनुसार होते हैं"।

संयुक्त उद्यम का व्यवहार (व्यवसाय) उसके शेयरधारों के द्वारा चलाया जाता है। शेयरधारक अपनी शेयर पूंजी के अनुसार शेयरों की बिक्री और खरीदने में भाग लेते हैं। उन्हें लाभ का प्रतिशत पूंजी के अनुसार मिलता है।

3. बहुराष्ट्रीय निगम (Multi National Corporations)

इस प्रकार के व्यवसायिक संस्थाओं का जन्म 1860 के दशक के पूर्व ही हुए थे। यानी द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वे महत्वपूर्ण हो गये। प्रारंभ में संयुक्त राज्य अमेरिका उनका मायका था। बाद में यूरोप के कुछ देश और जापान में प्रारंभ हो गये। अब विकासशील देशों में भी विकसित हो गया है। उदा : दक्षिण कोरिया, (भारतीय कंपनियाँ जैसे टाटा-बिड़ला, इंफोसिस, विप्रो-आदि भारतीय बहुराष्ट्रीय निगम हैं)

बहुराष्ट्रीय कंपनियों का अर्थ और विवरण : इनका स्वामित्व और संचालन दो या दो से अधिक देशों में कार्यरत है। अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन (ILO) के अनुसार, इनका प्रबंधन केंद्र एक देश में स्थित होकर वे कई अन्य देशों में व्यवहार करते हैं। उदाहरण: सोनी (जापान), कोका कोला (USA), सैमसंग (कोरिया), हिंदुस्तान लीवर (UK), फिलिप्स (हॉलैंड), ग्लासगो (UK) आदि। जिस देश में केंद्र स्थान होता है उस देश को मायका (गृह) देश कहते हैं। इसके दायरे में आने वाले देशों को आश्रयदाता देश कहते हैं।

विशेषताएँ :

1. ये बहुत बड़ी निगम हैं। संपत्ति और लेन-देन काफ़ी हद तक रहता है।
2. ये कम से कम छः देशों में काम करते हैं।
3. यह उन देशों में भी माल का उत्पादन करता है, जो उनके व्यापारिक सीमा के भीतर हैं।
4. केंद्रीय कार्यालय का केंद्रीकृत नियंत्रण होता है।
5. उनके पास कई देशों में निर्माण, बिक्री और अन्य सुविधाएँ हैं।

6. ये विश्व बाजार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।
7. अपने अधिकार क्षेत्र के देशों में भी प्रौद्योगिकी सुविधाएँ प्रदान करते हैं।

लाभ:

गृह (मायके) देश को :

1. आश्रयदाता देशों से कम कीमतों पर कच्चा माल प्राप्त किया जा सकता है।
2. आश्रयदाता देशों से प्रौद्योगिकी और प्रशासन कौशल प्राप्त किया जा सकता है।
3. आश्रयदाता देशों को कच्चे माल और तैयार उत्पादों का निर्यात अधिक लाभदायक है।
4. रॉयल्टी और प्रशासनिक समझौते, आश्रयदाता देशों को मुनाफ़े के साथ, भारी आमदनी प्राप्त कराते हैं।
5. मायके देश में अधिक रोज़गार के अवसर प्रदान करता है।

आश्रयदाता देशों के लाभ:

1. आश्रयदाता देशों में निवेश के स्तर में वृद्धि।
2. यदि आश्रयदाता देश विकासशील देश हैं, तो उन्हें प्रौद्योगिकी सुविधाओं के द्वारा सुगम बनाया जाएगा और प्रशासनिक रणनीतियों द्वारा क्रांति ला दी जाएगी।
3. आश्रयदाता देशों का निर्यात बढ़ाने से आयात कम करने में मदद मिलेगी।
4. अच्छी गुणवत्ता वाली सामग्री बनाने में सक्षम।
5. आश्रयदाता देशों में रोज़गार के अवसर बढ़ाना। अनुसंधान और विकास प्रणाली को बढ़ाने में मदद करता है।
6. आंतरिक संसाधन अधिक उपयोग करने में मदद करते हैं।

बहुराष्ट्रीय निगमों की त्रुटियाँ :

अधिकतम लाभ स्वदेश को जाता है। इन्हीं के प्रभुत्व से आश्रयदाता देशों को अहित होता है। आश्रित देशों में प्रतिस्पर्धा नष्ट होकर एकाधिकार उत्पन्न होता है। इन पर मानवाधिकारों के उल्लंघन का आरोप है। आश्रय वाले देशों में प्राकृतिक संसाधनों में कमी आने की संभावना है। ये निगम अक्सर करों का भुगतान करने से बचने के तरीके अपनाती हैं। ये आश्रित देश में श्रमिकों का शोषण करते हैं। शरणार्थी देश अधिक निवेश करते हैं। अक्सर प्रौद्योगिकी का योगदान उचित नहीं होता है। ये अक्सर आश्रित देशों के राजनीतिक मामलों में हस्तक्षेप करते हैं।

भारत में औद्योगिक नीति के कारण विदेशी निवेश पर कई प्रतिबंध थे। 1991 में आर्थिक नीति के उदारीकरण के बाद से, कई बहुराष्ट्रीय निगम ने अपने व्यवसाय का विस्तार किया है, और कई भारतीय संस्थाएँ विदेशों में अपने व्यवसायों के माध्यम से बहुराष्ट्रीय निगम बन गई हैं। उदाहरण: विप्रो, इंफोसिस, अब भारत में लगभग 40 बहुराष्ट्रीय कंपनियाँ हैं।

हमने विभिन्न प्रकार के व्यावसायिक संगठनों, निजी तौर पर आयोजित, एकाधिकार, भागीदारी, हिंदू अविभक्त परिवार के व्यवहारिक संस्थाएँ, सहकारी संघ, सहकारी संघ संयुक्त पूँजी और बहुराष्ट्रीय निगम के बारे में संक्षेप में सीखा है। इसके अलावा, सरकारी उद्यम, संयुक्त उद्यम और लोकोपयोगी सेवा संस्थाएँ रूढ़िगत हैं।

● **सरकारी उद्यम :** सरकारी उद्यम सार्वजनिक उद्यम हैं। जनता के लाभ के लिए सरकार के स्वामित्व में हैं। इन संस्थानों को संबंधित मंत्रालयों द्वारा एक सरकारी विभाग के रूप में चलाया जाता है। इन्हें केंद्र सरकार, राज्य सरकार या नगरपालिकों द्वारा शुरू किया जाता है और उनके नियंत्रण में रखा जाता है। जैसे: खनन, लोहार का काम, जहाज निर्माण, हवाई जहाज के यंत्रों आदि।

● **संयुक्त उद्यम :** सार्वजनिक क्षेत्र के संगठन, सरकार और जनता के संयुक्त स्वामित्व में रहते हैं। जैसे भारत में गुजरात स्टेट फर्टिलाइजर कंपनी, कोचीन रिफाइनरियाँ-आदि।

● **लोकोपयोगी सेवा संस्थाएँ :** ये भी सरकारी उद्यम हैं लेकिन इनकी स्थापना उन वस्तुओं और सेवाओं के कुशल प्रावधान के लिए की जाती है, जिनकी जनता को सबसे अधिक आवश्यकता होती है न कि लाभ के लिए। जैसे-रसोई गैस, पानी, बिजली की आपूर्ति, रेलवे, डाक, टेलीफोन आदि।

शेयर बाजार : संयुक्त पूँजी संस्थाओं की पूँजी को छोटे-छोटे खंडों में विभाजित किया जाता है। इस पूँजी के हर एक अंश को शेयर कहते हैं। इन शेयर तथा उधार पत्रों (**Debentures**) को खरीदने और बेचने की सुविधा होती है। संयुक्त पूँजी संस्था के कानून के अनुसार शेयरदार अपने अधीन में रहे शेयरों को कभी भी बेच सकते हैं तथा कोई भी खरीदकर शेयरदार बन सकता है।

भारत में पहला शेयर बाज़ार 1875 में मुंबई में स्थापित किया गया था और अभी भी दुनिया के सबसे प्रतिष्ठित शेयर बाजारों में से एक है। शेयर बाजार द्वितीयक शेयर बाजार हैं जो केवल पंजीकृत कंपनियों के शेयरों के क्रय-विक्रय की अनुमति देते हैं। कोलकाता शेयर बाजार, बेंगलूरु शेयर बाज़ार आदि ने इंटरनेट पर सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से शेयरों के क्रय-विक्रयों की सुविधा प्रदान की है। ये सभी शेयर बाजार (**SEBI - SECURITIES EXCHANGE BOARD OF INDIA**) नामक भारतीय प्रतिभूति विनियम बोर्ड के नियंत्रण के अधीन हैं।

अभ्यास :

I. नीचे दिए गए रिक्त स्थानों को उपयुक्त शब्दों से पूर्ति कीजिए :

1. भारत में सहकारी समितियों का गठन भारत के सहकारी संघ अधिनियम _____ के द्वारा विनियमित किया जाता है।
2. विश्व का पहला सहकारी संघ _____ देश में _____ के द्वारा स्थापित हुआ।

3. कर्नाटक में पहली सहकारी संघ _____ में शुरू हुई।
4. बहुराष्ट्रीय निगम पहले _____ देश में शुरू हुई ।
5. भारत में मायके प्राप्त बहुराष्ट्रीय निगम के लिए _____ और _____ उदहारण हैं ।
6. भारत में पहला शेयर बाजार _____ में प्रारंभ हुआ।

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उचित उत्तर लिखिए :

7. सहकारी संघ की विशेषताओं को लिखिए ।
8. सहकारी संघ के कौन-कौन से प्रकार हैं?
9. सहकारी संघों के मुख्य लाभ और हानियों की सूची बनाइए।
10. बहुराष्ट्रीय निगमों से मायके देश को क्या-क्या लाभ होते हैं?
11. शेयर बाजार के सबसे महत्वपूर्ण कार्य क्या हैं?

III. गतिविधि

1. आपके शिक्षक की सहायता से आपके विद्यालय में एक छात्र सहकारी संघ की स्थापना कीजिए।

